इब्रानियों

इब्रानियों का पत्र

लेखकः

अज्ञात।

कुछ विद्वानों का मानना है कि इसका लेखक पौलुस ही था। कुछ का कहना है कि अपुल्लोस, सीलास या बरनबास में से कोई हो सकता है। इस पत्र में लेखक अपनी पहचान के बारे में कुछ नहीं बताता है। बाईबल में किसी और स्थान पर भी उसके बारे में नहीं लिखा है। इसलिए हम इस नतीजे पर पहुँचते हैं, कि इस पत्र के लेखक के बारे में सही जानकारी नहीं है। हमें यह जानने की ज़रूरत भी नहीं है, कि इसका लेखक है कौन। यह जानना काफ़ी है कि पवित्र आत्मा की प्रेरणा से यह बाईबल का एक हिस्सा बना।

समयः

70 ए.डी. के कुछ पहले ही। यह वह समय था, जब कि रोमी फ़ौज ने आकर शहर और मन्दिर दोनों ही को नाश कर दिया और यहूदी तित्तर-बित्तर हो गए।

विषयः

नया प्रबन्ध (वाचा) और यीशु की महानता। हर तरह से लेखक ने यह बताने की कोशिश की है कि मूसा के माध्यम से इस्त्राएलियों से वाचा बाँधी गई। कुछ यहूदी जिन्होंने यीशु को अपनाया था, सताए जा रहे थे। ताकि वे यीशु को त्याग कर वापस चले जाएँ। इसलिए लेखक नयी वाचा की महानता को दिखाता है। वह उन लोगों को पाँच चेतावनियाँ भी देता है, जो यीशु को छोड़ना माँग रहे थे, एक और विषय इस पुस्तक में है-जो आरम्भ के दो पदों और 12:25 में है। परमेश्वर ने मात्र अपने नबियों द्वारा संदेश नहीं पहुँचाया, लेकिन अपने बेटे द्वारा भी। सब को बेटे की सुननी चाहिए। इस पत्र में दो मुख्य शब्द हैं 'बेहतर' और 'विश्वास' (1:4; 7:18-22; 8:6; 9:23; 10:38; 11:16,35,40; 12:24)। इस में 'विश्वास' विषय पर एक खास अध्याय है।

1 प्राचीन काल में परमेश्वर ने पूर्वजों से
अलग-अलग समयों में और अलग-
अलग तरीकों से भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा
बातें कीं। 2उन्हों ने इन दिनों के आखिर में
हम से बेटे के द्वारा बातें की, जिन्हें उन्हों
ने सारी वस्तुओं का वारिस ठहराया और
जिनके द्वारा परमेश्वर ने सारी सृष्टि रची है।
3वह परमेश्वर की महिमा का तेज, और
उनके व्यक्तित्व का स्पष्ट रूप (प्रतिमा)
हैं। वही सब वस्तुओं को अपने सामर्थ के
शब्द से संभालते हैं। वह पापों, भूल-चूक,
अपराधों को धोकर आदर और अधिकार

1:1 "पूर्वजों"- इब्री लोगों के पूर्वज।

"अलग-अलग समयों में और अलग-अलग तरीकों से"- देखें, उत्पत्ति 15:1,12; 18:1,10; 28:12-15; निर्ग. 3:1-4; 19:20; 25:22; 33:11; 34:5-7; यहोशू 5:13-15; 2 शमू. 23:1-3; 1 राजा 19:11-13; यशा. 6:1-8; यिर्म. 1:4,9,10; यहेज. 2:1-2; दानि. 8:15-18; 9:20-22.

"भविष्यद्वक्ता"- पुराने नियम (वाचा) के वे लोग जिन्हें परमेश्वर ने प्रेरित किया और अपना संदेश देने के लिये भेजा था। उत्पत्ति 20:6 आदि से सम्बन्धित टिप्पणी को देखें। क्योंकि भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा बोलने वाला सच्चे परमेश्वर ये, इसलिए स्पष्ट है कि उनके मार्गों और उनकी इच्छा को समझने के लिये पुराने नियम का अध्ययन आवश्यक है।

1:2 इब्रानियों में तमाम तुलनात्मक बातों के विवरण की शुरूआत पद 1 और 2 में है।

"बेटे"- यूहन्ना 7:16-17; 8:28; 12:49-50; 17:8. व्यव. 18:18-19 में वर्णित अन्तिम महान भविष्यद्वक्ता यीशु थे। 2-4 पद में इस पत्री का लेखक परमेश्वर के बेटे (यीशु) के विषय में नौ महत्वपूर्ण बातें कहता है।

"परमेश्वर... बातें की"- इस चिट्ठी का यह एक बड़ा विषय है। पुराने नियम में हम उन सभी बातों को पाते हैं, जिन्हें परमेश्वर ने कहा था। तुलना करें मत्ती 4:4; 2 पतर. 1:21; 2 तीमु. 3:16. देखें 1:6-7,8,10; 2:11-13; 3:7; 4:3; 5:5-6; 6:13-14; 7:21; 8:8; 10:5,15,17; 12:25-26; 13:5.

"वारिस"- लेखक यह लिखना आरम्भ करता है कि परमेश्वर का पुत्र कौन है और भविष्यद्वक्ताओं से कितना महान है। वारिस का अर्थ है उसको हासिल करना जिसकी प्रतिज्ञा की गयी है।

"सारी सृष्टि रची है"- पद 10; उत्पत्ति 1:1; यूहन्ना 1:1-3; 1 कुरि. 8:6; कुल. 1:6. सारी सृष्टि के बनाए जाने से पहले पुत्र था - पृथ्वी पर उत्पन्न होने के फलस्वरूप वह परमेश्वर के बेटे नहीं बने (यूहन्ना 17:5; कुल. 1:17)। पुत्र पर अधिक जानकारी के लिये मत्ती 3:16-17; 11:27; यूहन्ना 3:16; 5:18-23 की टिप्पणी देखें।

1:3 "परमेश्वर महिमा की रोशनी"- का अर्थ है अलौकिक स्वभाव। परमेश्वर को रोशनी (1 यूहन्ना 1:5) कहा जा सकता है। यीशु, इस रोशनी का चमकना है। तुलना करें लूका 1:78-79; 2:29-32; यूहन्ना 1:4-5,9; 8:12; 2 कुरि. 4:6. सूर्य का तेज सूर्य को और उसके तत्व को प्रगट करता है। इसी प्रकार मसीह परमेश्वर को प्रगट करते हैं और उनके पास परमेश्वर का स्वभाव है - यूहन्ना 1:14,18; 10:30; 14:9; दूसरे पद फ़िलि. 2:6; लूका 2:11 उनका स्वभाव पिता के समान था, वही परमेश्वर की महिमा हो सकते थे। वह "रोशनी की रोशनी" - थे।

"उनके व्यक्तित्व का स्पष्ट रूप"- 2 कुरि. 4:4; कुल. 1:15 की तुलना करें। जिस यूनानी शब्द का अनुवाद स्वभाव है उसका अर्थ है 'तत्व', 'सार', 'वास्तविक स्वभाव'। परमेश्वर अपनी अनन्त आत्मिक स्थिति में पहुँच न होने वाले, अदृश्य प्रकाश में रहते हैं और दिखते नहीं हैं (1 तीमु. 6:16; यूहन्ना 1:18)। वह परमेश्वर के स्वभाव और गुणों सहित पूरी तरह से मसीह में प्रगट हुए (कुल. 2:9)। जो कुछ परमेश्वर हैं, वह मसीह स्वयं में प्रगट करते हैं, जिनका स्वभाव परमेश्वर का सा था, केवल उन्हीं के विषय में यह कहा जा सकता है। फ़िलि. 2:6 में दिये गये पदों को देखें।

"अपने...शब्द से"- कुल. 1:17 से तुलना करें। उनका वचन उनकी इच्छा को बताता है - वह जो कुछ कहते हैं उसे किया जाता है। इस सृष्टि में आकाश-गंगा, तारामंडल, सूर्य, और दूसरे अन्य ग्रह यीशु की शक्ति से इस प्रकार सम्हाले जाते हैं कि वे टकरा न जाएँ। जिस उद्देश्य से सब कुछ बनाया गया है, वह सब यीशु के द्वारा ही पूरा होता है। इस में भी हम यह देखते हैं कि जो परमेश्वर का स्वभाव है वही यीशु का भी है। केवल परमेश्वर ही हैं जिनके शब्द इतने

की जगह पर महामहिम के दाहिने जा बैठे।
4वह स्वर्गदूतों से उतने ही बेहतर ठहरे,
जितना उन्हों ने उन से बड़े पद का वारिस
होकर बेहतर नाम पाया।

5क्योंकि स्वर्गदूतों में से परमेश्वर ने
कब किसी से कहा, कि "तुम मेरे बेटे हो,
आज तुम मुझ से उत्पन्न हुए?" और फिर
यह, "कि मैं उसका पिता होऊँगा, और
वह मेरा बेटा होगा?" 6और जब सर्वश्रेष्ठ
(पहिलौठे) को जगत में फिर लाते हैं, तो
कहते हैं कि परमेश्वर के सब स्वर्गदूत
उन्हें दण्डवत करें। 7और स्वर्गदूतों के

शक्तिशाली हो सकते थे, जो कि सारी सृष्टि को संभाल सके?

"पापों को धोकर"- इसका अर्थ यह है कि यीशु ने क्रूस पर अपने बलिदान के द्वारा, मनुष्यों के पापों से शुद्धता पाने के लिये एक रास्ता बना दिया (7:27; 9:26; मत्ती 26:18; 10:10; 1 यूहन्ना 1:7; यूहन्ना 1:29; प्रका. 1:5)।

"जा बैठे"- पद 13; 2:9; 10:12; भजन 110:1; मरकुस 16:19; प्रे.काम 2:33; प्रका. 3:21. क्रूस पर अपने बलिदान के द्वारा पापों से शुद्धता के कार्य को पूरा कर के वह सृष्टि के अधिकार और महिमा के सर्वोच्च स्थान पर बैठ गये।

1:4 यीशु को भविष्यद्वक्ताओं से उत्तम दिखाकर (पद 1,2) लेखक ने उन्हें स्वर्गदूतों से भी बढ़कर दिखाया है। उत्पत्ति 16:7 में 'स्वर्गदूतों' पर टिप्पणी देखें।

"ठहरे"- यूनानी में "बनकर" भी है। पृथ्वी पर आने से पहले वह स्वर्गदूतों से बढ़कर थे। किंतु पृथ्वी पर एक मनुष्य के रूप में वह "स्वर्गदूतों से थोड़े कम थे" - 2:9. अपने जी उठने के बाद के बाद उन्होनें स्वर्गदूतों से ऊँचा स्थान हासिल किया। यूहन्ना 7:16-17; 8:28; 12:49-50; 17:8. व्यव. 18:18-19.

"बेहतर नाम"- यह उत्तम नाम 'बेटा' है। इसका अर्थ उस से है जो सृष्टि के प्रभु हैं, पिता के स्वभाव को रखते हैं और जिनकी उपासना की जानी चाहिये (6,8,10)। फ़िलि. 2:9-11 से तुलना करें। स्वर्गदूतों से कम स्थान लेकर उन्होने संसार में जन्म लिया और वह नाम प्राप्त किया जो उनके इस दुनिया में आने से पहले परमेश्वर के बेटे का था। यहाँ मसीह द्वारा स्थापित नयी वाचा को स्वर्गदूतों द्वारा दी गई पुरानी वाचा से उत्तम दिखाया गया है - 2:2.

1:5 देखें भजन 2:7; 2 शमू. 7:14. कोई स्वर्गदूत स्वयं के लिये "परमेश्वर के बेटे" के पद के लिये दावा नहीं कर सकता। (यूहन्ना 3:16 पर टिप्पणी देखें)। 2 शमू. 7:14 में परमेश्वर पहले दाऊद के बेटे सुलेमान के विषय कहते हैं। किन्तु उन्हें मालूम था कि सुलेमान से बढ़कर एक और आएगा जो कि दाऊद का बेटा और परमेश्वर का बेटा होगा (रोमि. 1:3-4; यशा. 9:6)।

1:6 "सर्वश्रेष्ठ"- मूल भाषा में पहिलौठा शब्द आया है। पिता परमेश्वर को भी "पहिलौठा" कहने में कोई आपत्ति नहीं है क्योंकि इसका अर्थ है सृष्टि में परम प्रधान या सर्वश्रेष्ठ। कुल. 1:15 पर टिप्पणी देखें। इस शब्द का अर्थ शाब्दिक रीति से जन्म नहीं है (देखें भजन 89:27 - "अपना पहिलौठा और पृथ्वी के राजाओं पर प्रधान ठहराऊँगा")।

"दण्डवत करें"- पुराने नियम के यूनानी अनुवाद (सेप्टूजिन्ट) में ये शब्द व्यव. 32:43 में आए हैं। यहाँ पवित्र आत्मा इन शब्दों पर अपने सहमति की छाप लगाता है। भजन 97:7 भी देखें। क्योंकि स्वर्गदूतों से कहा गया है कि वे उन्हें दण्डवत करें, इसलिए यह स्पष्ट है कि मसीह उन से कहीं अधिक श्रेष्ठ है। यह भी स्पष्ट है कि मसीह और पिता का स्वभाव एक ही है - यदि ऐसा न होता तो वह स्वर्गदूतों को आज्ञा न देते कि वे मसीह की आराधना करें। बाईबल में आराधना केवल परमेश्वर के लिये है (देखें मत्ती 4:10)।

1:7-8 भजन 104:4; 45:6-7 पद देखें। ये पद दिखाते हैं कि स्वर्गदूत वे जीव हैं जिन्हें परमेश्वर ने बनाया है। परमेश्वर के पुत्र को बनाया नहीं गया, किंतु उनका और परमेश्वर का स्वभाव और व्यक्तित्व एक सा है। पद 8 में पिता बेटे से बातें करते हैं और दाऊद के मुख से कहते हैं - "हे परमेश्वर, आपका सिंहासन"। जो लोग यीशु के परमेश्वर होने को अस्वीकार करते हैं उन्हों ने इसी वाक्य को दूसरी तरह से कहने का प्रयास किया है, "परमेश्वर आपका सिंहासन है।" यह एक हास्यास्पद अनुवाद है। यह अनुवाद वास्तव में मसीह को परमेश्वर से महान दर्शाता है - क्योंकि जो सिंहासन पर विराजमान है, वह सिंहासन से श्रेष्ठ है। मसीह के परमेश्वरत्व के सम्बन्ध में फ़िलि. 2:6 में और संदर्भ देखें।

विषय में यह कहते हैं "कि वह अपने
दूतों को आत्माएँ, और अपने सेवकों को
आग की ज्वाला बनाते हैं।" 8परन्तु बेटे
से कहते हैं कि, "हे परमेश्वर, आपका
सिंहासन हमेशा बना रहेगा। आपके राज्य
का राजदण्ड धार्मिकता का राजदण्ड है।
9आप ने खराई से प्रेम और बुराई से बैर
रखा। इसलिए परमेश्वर, आपके परमेश्वर
ने आपके साथियों से बढ़कर आनन्द के
तेल से आपको अभिषेक किया।" 10और
यह कि, "हे प्रभु, आदि में आप ने पृथ्वी
की नींव डाली, और आसमान आपके
हाथों की कारीगरी है। 11वे तो नाश हो
जाएँगे, परन्तु आप बने रहेंगे और वे सब
कपड़ों के समान पुराने हो जाएँगे। 12आप
उन्हें चादर के समान लपेटेंगे, और वे बदल
जाएँगे लेकिन आप वही हैं और आप सदा
बने रहेंगे।" 13और स्वर्गदूतों में से उन्हों ने
किस से कब कहा, "कि तुम अधिकार
के साथ (मेरे दाहिने हाथ पर) विराजमान
रहो, जब तक कि मैं तुम्हारे दुश्मनों को
तुम्हारे पैरों के नीचे की चौकी न कर दूँ।"
14क्या स्वर्गदूत देख-भाल करने
वाली आत्माएँ नहीं, जो मुक्ति पाए हुए
(उत्तराधिकारी बने हुए) लोगों के लिए
मदद करने को भेजी जाती हैं?

2 इसलिए चाहिए कि हम उन बातों पर
जो हम ने सुनी हैं, और भी मन लगाएँ,
ऐसा न हो कि सुनी हुअी बातों से बहक

1:9 "आपके परमेश्वर"- परमेश्वर पिता - इफ़ि. 1:3.

1:10-12 "और यह कि" - भजन 102:25-27 देखें। यह भी भविष्यद्वक्ता के द्वारा परमेश्वर के बातचीत किये जाने का उदाहरण है। और वह परमेश्वर के बेटे मसीह को "प्रभु" कहता है (पद 8) और पद 10 में यह कि मसीह ने स्वर्ग, आकाश और पृथ्वी को बनाया। (उत्पत्ति 1:1)। मसीह और परमेश्वर का स्वभाव एक सा है इसका यह और एक सबूत है, क्योंकि केवल परमेश्वर ही सृजनहार हैं (उत्पत्ति 1:1)। पद 11,12 में परमेश्वर कहते हैं कि बेटा न बदलने वाला और अनन्त है। ये गुण केवल परमेश्वर ही में हैं। केवल परमेश्वर ही "कपड़ों की तरह" - लपेट सकते हैं (पद 12)? और मसीह ऐसा करेंगे। भजन 102:1 याहवे परमेश्वर से एक प्रार्थना है, किंतु यहाँ लेखक कहता है कि यह मसीह से की गई प्रार्थना है। दूसरे शब्दों में, याहवे मसीह में आए। लूका 2:11 में अन्य पद देखें।

1:13 भजन 110:1, इस सृष्टि में मात्र मसीह को परमेश्वर ने सर्वश्रेष्ठ स्थान दिया है।

1:14 मसीह मानवजाति के स्वामी/प्रभु हैं (पद 10; रोमि. 14:9; फ़िलि. 2:9-11)। किंतु स्वर्गदूत सेवक हैं जो उनकी सेवा के लिये भेजे गए हैं, जो मुक्ति के वारिस होंगे, जो मसीह में विश्वासी हैं। यहाँ "मुक्ति" का अर्थ उनके उद्धार का अन्तिम चरण है - रोमि. 8:23,29,30; 1 पतर. 1:5. यहाँ हमें यह नहीं बताया गया है कि स्वर्गदूत हमारे लिये क्या सेवा करते हैं। उत्पत्ति 16:7 स्वर्गदूतों पर टिप्पणी देखें।

इन पदों के साथ लेखक अपने पहले मुख्य मुद्दे को पूरा करता है - परमेश्वर ने अपने बेटे के द्वारा बातें की है जो परमेश्वर समान स्वभाव रखते हैं और वह सारे मनुष्यों और सारे स्वर्गदूतों से श्रेष्ठ हैं। हम इस बात से आश्वस्त हो सकते हैं कि परमेश्वर का प्रकाशन उनके बेटे के द्वारा उनका अन्तिम प्रकाशन है। अपने बेटे को भेजने और उसके द्वारा बातें करने के बाद, वह क्यों अपने किसी पुराने तरीके को अपनाकर मनुष्यों में से किसी को भविष्यद्वक्ता चुनकर उसके द्वारा बातें करते?

2:1-4 पाँच गम्भीर चितौनियों में से यह पहली है। अन्य चितौनियाँ 3:7-19; 6:1-8; 10:26-31; 12:25-29 में पायी जाती हैं। यह चितौनियाँ सुसमाचार को हल्का-फुल्का समझने (2:3), अविश्वास (3:12,19), विश्वास से मुकरने (6:6), जानबूझकर गुनाह में पड़े रहने, परमेश्वर और उसकी सच्चाई के प्रकाश को स्वीकार न करने (12:25) के विरोध में हैं। इन सभी पाँच बातों को एक शब्द 'विश्वास त्याग' कहा जा सकता है। विश्वास त्याग का अर्थ है परमेश्वर के विरोध में बलवा करना और उनके प्रगट किये गये सत्य से मुकरना।

2:1 "जो हम ने सुनी हैं"- प्रभु यीशु का सुसमाचार।

जाएँ। 2क्योंकि जो बातें स्वर्गदूतों के द्वारा कही गयी थीं यदि वे बनी रहीं और हर एक गुनाह और आज्ञा न मानने का ठीक-ठीक बदला मिला, 3तो हम लोग ऐसी बड़ी मुक्ति से निश्चिंत रहकर कैसे बच सकते हैं, जिसकी चर्चा पहले पहल यीशु के द्वारा हुई, और सुनने वालों के द्वारा पुष्टि की गयी? 4साथ ही परमेश्वर भी अपनी इच्छा के अनुसार चिन्हों, अद्‌भुत कामों, और अनेक तरह के सामर्थ के कामों, और पवित्र आत्मा के वरदानों के बाँटने के द्वारा इसकी गवाही देते रहे।

5परमेश्वर ने उस आने वाले जगत को जिसकी चर्चा हम कर रहे हैं, स्वर्गदूतों के

"बहक जाएँ"- उस सत्य से जो परमेश्वर ने हमें दिया है, दूर चले जाना सब से आसान बात है। उसके लिये कोशिशों की ज़रूरत नहीं है। दुनिया में ऐसी बहुत सी बातें हैं जो मनुष्य को परमेश्वर से दूर ले जाती हैं।

2:2 "स्वर्गदूतों के द्वारा कही गयी थीं"- ऐसा माना जाता है कि मूसा द्वारा दी गई व्यवस्था को स्वर्गदूतों की सहायता से पहुँचाया गया था। देखें, गल. 3:19 और प्रे.काम 7:23.

"बनी रहीं"- स्वर्गदूतों द्वारा लायी गयी व्यवस्था को मानना ज़रूरी था, (निर्ग. 19:5; लैव्य. 18:1-5; व्यव. 6:1-3; 32:45-47), और न मानने पर दण्ड - लैव्य. 26:14-39; व्यव. 28:15-68; 2 राजा 17:7-20.

2:3 "मुक्ति"- जो मुक्ति परमेश्वर ने मसीह के द्वारा दी है (रोमि. 1:16)। लेखक का कहना यहाँ यह है कि बेटे द्वारा परमेश्वर का प्रकाशन (सुसमाचार, नयी वाचा) स्वर्गदूतों द्वारा दिए गए उनके नियम और आज्ञाओं से श्रेष्ठ है। जिन्होंने परमेश्वर की व्यवस्था को नज़रअंदाज किया वे बच न पाए। न ही वे बच पायेंगे जो मसीह के सुसमाचार की उपेक्षा करते हैं। खुशी की खबर परमेश्वर के प्रेम और कृपा का खुलासा है, और मनुष्यों के लिये मुक्ति प्रदान करती है। परन्तु इसका अर्थ यह नहीं कि जो सुसमाचार सुनते हैं और उसे हल्का फुल्का जानते हैं वे दण्ड से बच पायेंगे। बल्कि उनकी सज़ा अधिक भयानक और अधिक निश्चित होगी क्योंकि जिस खुशी की खबर की वे उपेक्षा कर रहे हैं वह पिछले किसी भी खुलासे से श्रेष्ठ है। खुशी की खबर को "ऐसी बड़ी मुक्ति" कहा गया है। मसीह का सुसमाचार निम्नलिखित बातों में श्रेष्ठ है।

उसका लेखकः स्वयं परमेश्वर,

उसकी निश्चितताः कई अचूक प्रमाण (प्रे. काम 1:3),

उसका अनोखापनः मात्र एक और एक ही सत्य सुसमाचार है - यूहन्ना 14:6; प्रे.काम 4:12

उसकी मुक्ति देने की योग्यता - 7:25; रोमि. 1:16

उसके प्रेम और अनुग्रह का प्रकाशन - रोमि. 5:8

उसके न्याय का सन्तुष्ट किया जाना - रोमि. 3:25-26

उसके स्थायी परिणाम - 9:12; 10:10,14; रोमि. 5:9-10; आदि।

इस बात पर ध्यान दें, परमेश्वर के न्यायपूर्ण दण्ड का सामना करने के लिये यह जरूरी नहीं कि मनुष्य सक्रिय रूप से खुशी की खबर का इन्कार करें। हल्का फुल्का समझना ही उसे अस्वीकार करना है।

"जिसकी चर्चा प्रभु के द्वारा हुई"- अच्छे सन्देश की पहली चर्चा प्रभु यीशु मसीह के द्वारा हुई (मरकुस 1:14-15; लूका 4:18-21)।

2:4 "परमेश्वर भी"- पिता ने आश्चर्यकर्मों के द्वारा अपने पुत्र के सुसमाचार की पुष्टि की - मत्ती 28:6 (रोमि. 1:4); मरकुस 16:20; प्रे.काम 2:43; 5:12-16; आदि।

"वरदानों"- पवित्र आत्मा के इनाम, सुसमाचार के विषय में परमेश्वर की गवाही थी (1 कुरि. 12:7-11)।

2:5-18 कुछ लोगों के प्रश्न कि यदि मसीह स्वर्गदूतों से उत्तम हैं। तो मनुष्य रूप में स्वर्गदूतों से कम कैसे थे? स्वर्गदूतों से जो बढ़कर था, उन्हों ने फिर परीक्षा, दुख और मृत्यु का सामना क्यों किया? बहुत से यहूदियों के लिये यह असम्भव बात थी (1 कुरि. 1:23)। इसीलिए वे यीशु को 'परमेश्वर मनुष्य रूप में' स्वीकार करने के लिये तैयार नहीं थे - यूहन्ना 5:17-18; 10:31-33.

लेखक इन पदों में दो बातें कहता हैः केवल थोड़े समय के लिये मसीह स्वर्गदूतों से कम किये गये थे (पद 9), और यह उचित एवं आवश्यक था कि उन्हें स्वर्गदूतों से कम एक मनुष्य बनाया जाए, ताकि वह लोगों के गुनाह माफ़ करने वाले बन सकें। (पद 10,14,17)।

2:5 "आने वाले जगत"- मत्ती 25:31,34; प्रे. काम 3:21; रोमि. 8:18-23; यशा. 11; प्रका. 20-22 अध्याय।

वश न किया, 6लेकिन किसी ने कहीं यह
गवाही दी है, कि इन्सान क्या है कि आप
उसकी सुधि लेते हैं? या इन्सान क्या है
कि आप उस पर निगाह करते हैं? 7आप
ने थोड़े समय के लिए यीशु को स्वर्गदूतों
से कुछ ही कम किया। आप ने उनके सिर
पर महिमा और आदर का मुकुट रखा और
उन्हें अपने हाथों के कामों पर अधिकार
दिया। 8आप ने "सब कुछ" उनके पाँवों के
नीचे कर दिया, इसलिए जब कि परमेश्वर
ने सब कुछ उनके आधीन कर दिया, तो
उन्हों ने कुछ भी रख न छोड़ा, जो यीशु
के आधीन न हो परन्तु हम अब तक सब
कुछ उनके आधीन नहीं देखते। 9परन्तु
हम यीशु को जो स्वर्गदूतों से कुछ ही कम
किए गये थे, मौत का दुख उठाने के कारण
महिमा और आदर का मुकुट पहने हुए
देखते हैं, ताकि परमेश्वर की कृपा से हर
एक मनुष्य के लिए मौत का स्वाद चखें।
10क्योंकि जिस परमेश्वर के लिए सब
कुछ है, और जिनके द्वारा सब कुछ है,
उन्हें यही अच्छा लगा कि जब वह बहुत
से बेटों को महिमा में पहुँचाएँ, तो उनका
मुक्ति देने वाला पूरा दुख (क्रूस की मौत
तक) उठाए 11क्योंकि पवित्र करने वाला
अर्थात् यीशु और जो पवित्र किए जाते हैं
अर्थात् विश्वासी, सब एक ही स्त्रोत से हैं,
इसी कारण यीशु उन्हें भाई कहने से नहीं

2:6-8 भजन 8:4-6 की ओर संकेत देते हुए लेखक दिखाता है कि आने वाले समय में परमेश्वर स्वर्गदूतों को नहीं, मनुष्यों को शासक बनाएँगे। देखें मत्ती 19:28; 24:46-47; 25:21; लूका 19:17; 2 तीमु. 2:12; प्रका. 5:10; 20:6; 22:5.

2:8 "परन्तु हम अब तक"- पद 8 पूरी तरह से पूरा नहीं हुआ है। जिस ऊँचे पद को परमेश्वर मनुष्य को देना चाहते थे, अब तक वह उसका नहीं है।

2:9 आने वाले जगत के ऊपर मनुष्य का अधिकार होना केवल यीशु के द्वारा ही सम्भव है। वह "अन्तिम आदम" (1 कुरि. 15:45-47) मनुष्य जाति का प्रतिनिधि है। वह छुटकारा पाए हुए उन लोगों के अगुवा हैं, जो आने वाले जगत पर शासन करेंगे। वह मनुष्य को स्वर्गदूतों से ऊपर का स्थान देना चाहते थे। इसलिए हालांकि वह स्वर्गदूतों का निर्माण करने वाले हैं। फिर भी उन्हें स्वर्गदूतों से कम किया गया - यह कि वह मनुष्य बन गये थे (यूहन्ना 1:14; फ़िलि. 2:5-8)। मनुष्य बनने के पीछे उनका उद्देश्य था, लोगों के लिये मरना।

"मौत का स्वाद चखें"- का अर्थ है मरना। मनुष्य के लिये यह परमेश्वर का उद्देश्य था कि आने वाले जगत पर वह शासन करें, किंतु इस उद्देश्य के पूरा होने में एक रुकावट थी। सभी गुनाहगार थे और अपने गुनाहों की सज़ा के रूप में हर तरह की मृत्यु के आधीन थे (उत्पत्ति 2:17; रोमि. 5:12; 6:23)। प्रभु यीशु 'प्रत्येक व्यक्ति के लिये' मरने आये - 2 कुरि. 5:14-15; 1 तीमु. 2:6; 1 यूहन्ना 2:2.

2:10 "बहुत से बेटों को महिमा"- जो कुछ परमेश्वर ने किया है और लोगों में कर रहे हैं उसका यही उद्देश्य है। यूहन्ना 17:22,24; रोमि. 5:2; 8:18,28-30; 9:23; 2 कुरि. 4:17; इफ़ि. 1:18 से तुलना करें।

"मुक्ति देने वाला"- प्रभु यीशु - 12:2. जिस महिमा को परमेश्वर ने लोगों के लिये तैयार किया है, उसको हासिल करने के लिये उन्हों ने एक मार्ग भी तैयार किया है। "सिद्ध करने" का मतलब यह नहीं है कि यीशु का स्वभाव उनके दुखों से पहले सिद्ध नहीं था। वह अपने चरित्र और कार्यों में निष्पाप और सिद्ध थे। यहाँ अर्थ यह है कि लोगों के उद्धारकर्ता के रूप में कार्य करने के लिये परमेश्वर ने उन्हें दुखों के द्वारा पूरी तरह उपयुक्त पाया - 5:7-9; 7:28.

2:11-18 जिन लोगों को परमेश्वर महिमा देने वाले हैं, प्रभु यीशु ने पूरी तरह से स्वयं को उनके समान कर दिया था।

2:11 "पवित्र किए जाते"- यह मसीह हैं। देखें इब्रा. 10:10,14; 13:12. लैव्य. 20:6; और यूहन्ना 17:17-19 की टिप्पणी। जो पवित्र किए जाते हैं वे ही हैं जो उसमें विश्वास करते हैं और उन्हें गुनाह माफ़ करने वाले के रूप में और महिमा की ओर ले जाने वाले के रूप में अपनाते हैं। परमेश्वर ने उन्हें बाकी मानवजाति से अलग किया है और परमेश्वर के लिये पवित्र किया है।

शर्माते, 12किन्तु कहते हैं कि "मैं आपका
नाम अपने भाइयों को सुनाऊँगा, सभा के
बीच में मैं आपका भजन गाऊँगा?" 13और
फिर यह कि मैं उस पर भरोसा रखूँगा,
और फिर "देखो मुझे और इन बच्चों को,
जो परमेश्वर ने मुझे दिये हैं।"

14इसलिए जब कि बच्चे मांस और
लोहू के हिस्सेदार हुए हैं, तो वह आप
भी उसमें सहभागी हुए, ताकि अपनी
मौत के द्वारा उसे, अर्थात् शैतान को
जिसे मौत पर हक मिला था, कमज़ोर
(निकम्मा) कर दे। 15और जितने मौत के
डर के कारण जीवन भर गुलामी में फँसे
थे, उन्हें छुड़ा ले,

16क्योंकि वह तो स्वर्गदूतों को नहीं,
लेकिन अब्राहम के वंश को संभालते हैं।

17इस कारण उनको चाहिए था कि सब
बातों में अपने भाइयों के समान हों, जिससे

2:12-13 प्रभु यीशु और उनके विश्वासी एक समान इन्सानी स्वभाव रखते हैं और परमेश्वर के साथ उनका समान रिश्ता है। इसके सबूत के रूप में लेखक भजन 22:22 और यशा. 8:17-18 पदों की ओर संकेत करता है।

2:14-15 "बच्चे"- परमेश्वर की सन्तान। पद 10 में "बहुत से बच्चे" - सारी मनुष्य जाति की ओर संकेत हैं। मसीह उन्हीं के समान मांस और लोहू (देह) में प्रगट हुए- मत्ती 1:20-21; लूका 2:5-7; 24:49; यूहन्ना 1:14; 6:53-58. ऐसा करने के पीछे तीन उद्देश्य थे, मरना (मत्ती 16:21; 20:28; यूहन्ना 10:17-18), मृत्यु के द्वारा शैतान का हराना और अपने लोगों को आज़ाद करना। मत्ती 4:1-10 में शैतान पर शिक्षा देखें।

"मौत"- आदम और हव्वा को बुराई में गिराकर शैतान इस संसार में मृत्यु को लाया - उत्पत्ति 3. मनुष्य को गुलाम बनाकर वह पाप और मृत्यु के क्षेत्र में राज्य करता है एवं उन्हें आत्मिक मृत्यु की हालत में रखता है - 2 तीमु. 2:26. ऐसा प्रतीत होता है कि उसे मार डालने का भी अधिकार है - अय्यूब 2:6; 1 कुरि. 5:5. अपनी मौत और जी उठने के द्वारा मसीह ने शैतान को हराया और यह सम्भव किया कि मनुष्य पाप की क्षमा, आत्मिक जीवन पाए और अनन्तकालिक मृत्यु से पूरी तरह छूट जाए - यूहन्ना 5:24; 11:25-26; 1 कुरि. 15:54,57; 2 तीमु. 1:10. इसका अर्थ है शैतान का तख्ता पलटा जाना और उसका एवं उसके राज्य का सर्वनाश - यूहन्ना 12:31; प्रका. 20:10,14,15.

"मौत पर हक"- यूनानी भाषा में क्रिया वर्तमान काल को दर्शाती है। जो लोग अब तक अपने गुनाहों में हैं और मसीह को अस्वीकार कर रहे हैं, उनके ऊपर उसे अनन्तकालिक मौत का हक अभी भी है, किंतु मसीह में विश्वासियों के ऊपर नहीं (1 कुरि. 5:5 जैसे उदाहरण को छोड़कर)। मसीह ने हमें शैतान की सामर्थ और अन्धकार के राज्य से छुड़ाया और हमें परमेश्वर के राज्य में ला चुके हैं (प्रे.काम 26:18; कुल. 1:13)।

ध्यान दें कि "मौत के डर" के द्वारा शैतान मनुष्यों को अपनी बन्धुवाई में रखता है। "मौत के डर" यह मात्र मरने के डर से बढ़कर है - यह इस बात का डर है कि मृत्यु के पश्चात क्या होगा, जिसके कारण लोग झूठे मतों की चपेट में आ जाते हैं। मसीह, विश्वासियों को मृत्यु के भय से और दूसरे डरों से छुड़ाते हैं - यूहन्ना 8:32,36; रोमि. 6:18; 8:2,15,21; 2 कुरि. 5:6-8; फ़िलि. 1:21-23.

2:16 इस पद का अनुवाद कठिन है। शायद इसका अर्थ है मनुष्य बनने के कारण वह स्वर्गदूतों को नहीं, किंतु लोगों को संभालने के योग्य हैं, या अधिकार रखते हैं।

"अब्राहम के वंश"- मनुष्यों की सहायता करने के लिये मसीह स्वर्गदूत नहीं, मनुष्य बन गये। अब्राहम के वंश के अर्थात् वे यहूदी जिन्होंने मसीह पर विश्वास किया है और उनकी आत्मिक सन्तान जो उनके समान परमेश्वर पर विश्वास करती है - रोमि. 4:11-12,16,17; गल. 3:7-9.

2:17 "सब बातों में... अपने भाइयों के समान"- इसका अर्थ यह नहीं है कि यीशु गुनाहगार थे या लोगों के समान गुनाह स्वभाव के थे। देखें 4:15; 7:26; लूका 1:35; यूहन्ना 8:46; 2 कुरि. 5:21; 1 पतर. 2:22. इसका मतलब यह भी नहीं है कि वह एक मनुष्य थे, परमेश्वर नहीं - 1:6,8. इसका अर्थ यह है कि उनके पास वास्तविक मांस, रक्त और मानव स्वभाव था (पद 14) और उन्हें वास्तविक दुखों और परीक्षाओं का सामना करना पड़ा (पद 18)। इसके दो उद्देश्य थे - प्रायश्चित करना और लोगों के लिये महापुरोहित बनना। प्रायश्चित के सम्बन्ध में पद निर्ग. 29:33; 25:17; रोमि. 3:25-26 देखें।

वह उन बातों में जो परमेश्वर से सम्बन्ध रखती हैं, एक दयालु और विश्वासयोग्य महापुरोहित बन सकें, ताकि लोगों के अपराधों के बदले में प्रायश्चित करने के लिए मरें। 18वह उनकी भी मदद कर सकते हैं, जिनकी परख होती है, क्योंकि उन्हों ने भी परखे जाने के समय में दुख उठाया।

3सो हे पवित्र भाइयो, तुम जो ऊपरी बुलाहट में भागी हो, उस प्रेरित और महापुरोहित यीशु पर ध्यान करो, जिसे हम कबूल (अंगीकार) करते हैं। 2वह अपने नियुक्त करने वाले के लिए भरोसेमंद थे, जैसा मूसा भी परमेश्वर के सारे घराने में था। 3क्योंकि वह मूसा से इतना बढ़कर महिमा के लायक समझे गये हैं, जितना कि घर का बनाने वाला घर से बढ़कर आदर पाता है। 4हर एक घर को कोई न कोई बनाने वाला होता है, परन्तु जिस ने सब कुछ बनाया वह परमेश्वर हैं। 5मूसा उनके सारे घर में सेवक के समान विश्वासयोग्य रहा, ताकि जिन बातों का बाद में बताया जाने वाला था, उनकी गवाही दे। 6परन्तु मसीह बेटे के समान उनके घर के अधिकारी हैं, और उनका घर हम हैं, अगर हम साहस में, और अपनी आशा के आनन्द में अन्त

"महापुरोहित"- यहाँ लेखक इस पुस्तक में एक महत्वपूर्ण विषय का परिचय कराता है (3:1; 4:14; 5:10; 6:20; 7:26; 8:1; 9:11; 10:21)। बाईबल में एक पुरोहित वह था, जो लोगों के लिये बलि चढ़ाया करता था, परमेश्वर के मन्दिर के कार्यों पर निगरानी रखता और परमेश्वर के सामनें लोगों का प्रतिनिधित्व किया करता था। निर्ग. 28:1 की टिप्पणी देखें। सभी पुरोहितों के ऊपर महापुरोहित था, कुछ कार्य केवल वही कर सकता था - 5:1-3; 9:7. लैव्य. अध्याय 16 देखें। (परमेश्वर ने पुराने नियम के पुरोहितपन को समाप्त कर दिया है। अन्य किसी धर्म में पुरोहितपन की स्थापना परमेश्वर द्वारा प्रतिस्थापित नहीं थी। स्वर्ग में मसीह ही महापुरोहित हैं। और पृथ्वी पर उनके विश्वासी ही ऐसे पुरोहित हैं जो उसे ग्रहणयोग्य हैं - 1 पतर. 2:5,8; प्रका. 1:6.

"बदले में"- अधिकांश बाईबल के ज्ञाता यह मानते हैं कि 'प्रायश्चित' शब्द के लिये यूनानी भाषा में प्रयुक्त शब्द मसीह द्वारा "परमेश्वर के क्रोध को दूर कर उन्हें प्रसन्न" करने के अर्थ को प्रगट करता हैं। रोमि. 3:25 और 1 यूहन्ना 2:2 में देखें।

2:18 देखें 4:15; मत्ती 4:1-10. यीशु ने परीक्षाओं का सामना किया। शैतान ने उन्हें परीक्षा में डालने का प्रयास किया कि वह मात्र अपने ही विषय में सोचे, क्रूस से बचे और परमेश्वर की आज्ञा को तोड़े। इसलिए कि वह इन सारी बातों से गुज़रे हैं, वह अनुभव से शैतान के मार्गों को जानते हैं। और उन लोगों से सहानुभूति रखते हैं जो इन का सामना कर रहे हैं। मत्ती 6:13; 1 कुरि. 10:13 की टिप्पणी देखें।

3:1-6 मसीह मूसा से श्रेष्ठ हैं। मूसा परमेश्वर के घर में सेवक था, किंतु यीशु परमेश्वर के बेटे घर के ऊपर अधिकारी हैं।

3:1 "ऊपरी बुलाहट"- विश्वासियों की बुलाहट स्वर्ग से है और वह उन्हें स्वर्ग ले जाती है (रोमि. 8:30)।

"प्रेरित"- बाईबल में केवल यही एक स्थान है जहाँ मसीह को प्रेरित कहा गया है। इसका अर्थ है परमेश्वर ने उन्हें अपना काम पूरा करने के लिए संसार में भेजा और उसके द्वारा बातें की (1:2; यूहन्ना 6:48-49)।

3:2 मूसा और यीशु विश्वासयोग्य थे - गिनती 12:6; यूहन्ना 8:28-29; 17:4.

"घर"- का अर्थ है परमेश्वर के लोग।

3:3-4 मूसा परमेश्वर के घर का एक हिस्सा था, किंतु यीशु हैं जिन्होंने उसको बनाया था। इसलिए स्पष्ट है कि यीशु मूसा से बढ़कर हैं।

3:5-6 घर में सेवक से कहीं बढ़कर 'पुत्र' का पद है। "जिन बातों का वर्णन होने वाला था", उनके विषय में मूसा ने कहा। इसका अर्थ है कि परमेश्वर ने एक और सत्य के खुलासे की ओर संकेत किया (तुलना 10:1)। मूसा ने मसीह के विषय में गवाही दी - लूका 24:27; यूहन्ना 5:46.

3:6 "उनका घर हम हैं"- मूसा ने इस्त्राएलियों की सेवा की। मसीह का घर, उन पर विश्वास करने वाले सभी सदस्य हैं, और यीशु उस घर के अधिकारी हैं।

तक मज़बूती से स्थिर रहें। 7इसलिए जैसा
पवित्र आत्मा कहता है कि यदि आज तुम
उसका शब्द सुनो, 8तो अपने मनों को
कठोर न करो, जैसा जंगल में विद्रोह के
समय और परीक्षा के दिनों में इस्राएलियों
ने किया था, 9जहाँ तुम्हारे पूर्वजों ने मुझे
जाँचकर परखा और चालीस साल तक
मेरे काम देखे। 10इस कारण मैं उस समय
के लोगों से नाराज़ था, और मैंने कहा,
कि इन के मन सदा भटकते रहते हैं, और
इन्होंने मेरे रास्तों को नहीं पहचाना। 11तब
मैंने गुस्से में आकर शपथ खायी कि वे मेरे
आराम में प्रवेश करने न पाएँगे।

12हे भाइयो-बहनो, सावधान रहो, कि
तुम में ऐसा बुरा और अविश्वासी मन न
हो, जो जीवित परमेश्वर से दूर हट जाए।
13लेकिन जब तक इसे आज का दिन कहा
जाता है, हर दिन एक दूसरे की हिम्मत

3:7-19 ये पद विश्वास त्याग के विषय में दूसरी चेतावनी हैं। पद 7-11, भजन 95: 7-11 से लिये गये हैं। इस पद की टिप्पणी देखें। ये कहते हैं कि संपूर्ण पीढ़ी परमेश्वर का घराना कहलायी जा सकती है, फिर भी अविश्वास की दोषी बनकर उन आशीषों से वंचित रह सकती है, जिन्हें देने की प्रतिज्ञा परमेश्वर ने विश्वासियों से की है (पद 19)। यदि ये एक बार हो चुका है, तो कई बार हो सकता है।

3:7 "पवित्र आत्मा कहता है"- हालाँकि भजन 95 एक व्यक्ति के द्वारा लिखा गया, किंतु उसे परमेश्वर के आत्मा ने प्रेरित किया और उसके द्वारा बातचीत की। तुलना करें 9:8; 1 तीमु. 3:16; 2 पतर. 1:21.

"यदि"- पद 14; कुल. 1:23; 1 कुरि. 15:2 देखें। यह हमें नहीं सिखाता कि उनके घर के वे विश्वासी सदस्य अपना विश्वास खोकर अपनी सदस्यता खो सकते हैं। इसका अर्थ यह है कि विश्वास में बने रहना सदस्यता का वास्तविक प्रमाण है। पद 14 देखें। वह व्यक्ति जो धीरज और आशा खो देता है, खुशी की खबर का इन्कार करता है, और पाप के जीवन में फिर लौट जाता है, वही कभी सुसमाचार का भागी हुआ, ऐसा मानना व्यर्थ है (10:39; यूहन्ना 10:27; 1 यूहन्ना 2:19)। दुख की बात है कि कई लोग यह दावा करते हैं कि वे परमेश्वर के घर के हैं, परन्तु हैं नहीं।

"आज"- यह शब्द एक नए आरम्भ, अवसर के एक नए दिन की ओर इशारा करता है। इसका अर्थ है मसीह के सुसमाचार का एक नया युग। 2 कुरि. 6:1-2 से तुलना करें।

3:8 "विद्रोह"- निर्ग. 17:1-7; भजन 95:8.

3:9 "चालीस साल तक"- गिनती 14:26-35.

3:10 "सदा भटकते रहते हैं"- बाहरी रीति से वे परमेश्वर के लोग कहलाते हैं, भीतरी रीति से वे कठोर, अविश्वासी और बलवई हैं। तुलना करें भजन 58:3; यशा. 1:2-3; 53:6.

3:11 "गुस्से"- गिनती 25:3 में परमेश्वर के क्रोध पर टिप्पणी देखें।

"मेरे आराम"- मरुस्थल की यात्रा और कनान के शत्रुओं से विश्राम (व्यव. 1:34-36; 12:9; यहोशू 23:1)।

3:12-19 भजन 95:7-11 के शब्दों को लेखक अपने काल के यहूदियों की स्थिति में लागू करता है। हम अपने समाज में चर्च की स्थिति में इसे लागू कर सकते हैं। जो लोग परमेश्वर के लोग कहलाए जाते हैं उनके विश्वास के सम्बंध में चेतावनी है।

3:12 "सावधान रहो"- 12:25; अविश्वास की भयंकर संभावना है। इसके विषय में अत्यन्त सचेत रहें। अविश्वासी मन पापमय हृदय है। अविश्वासी मन को देखा नहीं जा सकता, परन्तु उसका बाहरी प्रमाण है परमेश्वर से मुँह फेर लेना। जब कभी लोग परमेश्वर से मुँह फेरते हैं, तब कारण, उनकी बुद्धि, तर्क या शिक्षा नहीं होती। मन की स्थिति यह निर्धारित करती है कि मनुष्य क्या करते हैं। तुलना करें नीति. 4:23.

3:13 मसीही विश्वासियों को चाहिए कि वे निरन्तर दूसरे विश्वासियों को परमेश्वर पर सच्चा विश्वास करने, और उस विश्वास में बने रहने, और गुनाह से दूर रहने हेतु प्रोत्साहित करते रहें। गुनाह के विषय में दो बातों पर ध्यान दें। गुनाह परमेश्वर के विरुद्ध मनुष्य के मन को कठोर करता है और वह एक धोखा है (2 थिस्स. 2:10)।

गुनाह एक अत्यन्त धोखादायक ताकत है जो मनुष्यों को अन्धा बनाती है और उन्हें विनाश के चौड़े मार्ग पर ले जाती है।

बढ़ाते रहो, ऐसा न हो, कि तुम में से कोई व्यक्ति गुनाह के छल में आकर सख़्त हो जाए। 14क्योंकि हम मसीह के साथ हिस्सेदार हुए हैं, यदि हम अपने शुरू के विश्वास से आखिर तक मज़बूती में बने रहें। 15जैसा कि कहा जाता है कि अगर आज तुम उसकी आवाज़ सुनो, तो अपने मनों को कठोर न करो, जैसा कि गुस्सा दिलाने के समय इस्राएलियों ने किया था।

16किन लोगों ने सुनकर गुस्सा दिलाया? क्या उन सब ने नहीं, जो मूसा के द्वारा मिस्र से निकले थे? 17वह चालीस साल तक किन लोगों से नाराज़ रहे? क्या उन्हीं से नहीं, जिन्होंने बलवा किया, और उनके शव जंगल में पड़े रहे? 18उन्हों ने किन से शपथ खाई कि तुम मेरे आराम में प्रवेश करने न पाओगे? क्या केवल उन से नहीं जिन्होंने आज्ञा न मानी? 19इसलिए हम देखते हैं कि वे अविश्वास के कारण दाखिल न हो सके।

4 इसलिए जब कि परमेश्वर के आराम (विश्राम) में प्रवेश करने (दाखिल होने) का वायदा अब तक है, तो हमें सावधानी

3:14 पद 6. इस पद का काल देखें - हम मसीह के भागी हो चुके हैं, (न कि भविष्य में होंगे), यदि हम अन्त तक उसमें स्थिर बने रहे। बीते समय में हुयी वास्तविक घटना को भविष्य मिटा नहीं सकता। लेखक परमेश्वर के सच्चे लोगों का वर्णन कर रहा है। लेखक परमेश्वर के सच्चे विश्वासियों की परिभाषा प्रस्तुत करता है - वे मसीह के भागी हैं और विश्वास में बने रहते हैं। विश्वास की परीक्षा हो सकती है, सच्चा विश्वासी धीरज के साथ अन्त तक उसमें बने रहता है। मसीही विश्वासी के रूप में मात्रा शुरू करना काफ़ी नहीं है। हमें आखिर तक उसमें बने रहना है। सच्चे विश्वासी अन्त तक उसमें बने रहते हैं, विश्वास त्यागने वाले नहीं (तुलना करें 10:35-39; रोमि. 5:9-10; यूहन्ना 10:27; 17:11-12; लूका 22:31-32; 1 यूहन्ना 2:19)।
3:15 मन कठोर करना और परमेश्वर के विरोध में बलवा करना अविश्वासी मन का सबूत है।
3:16 "उन सब ने नहीं"- दो व्यक्तियों को छोड़कर पूरा इस्त्राएल देश (गिनती 14:1-2,30)।

"मिस्र से निकले"- निर्ग. 14:29-31.
3:17 पद 10; 1 कुरि. 10:1-12; इफ़ि. 5:6; कुल. 3:6. लेखक इस सम्भावना की चेतावनी दे रहा है कि उसकी पीढ़ी के इब्री लोगों को भी परमेश्वर के गुस्से का सामना करना पड़ सकता है। उनके लिये यह ज़रूरी था कि वे विश्वास करें और मसीह में परमेश्वर के प्रकाशन की आज्ञा मानें।
3:18-19 पद 11; गिनती 14:11; व्यव. 9:24; भजन 78:10-12,21,22; प्रे.काम 7:51-53.

"आज्ञा न मानी"- इसका अनुवाद "विश्वास न किया" भी हो सकता है। यूहन्ना 3:16 की टिप्पणी देखें। अनाज्ञाकारिता और अविश्वास (पद 19) साथ-साथ चलते हैं। वे मनुष्यों को परमेश्वर की आशीषों को पाने से दूर रखते हैं। इन्हीं कारणों से इस्त्राएल कनान में प्रवेश न कर सका। इसी प्रकार ये बातें लोगों को स्वर्ग में प्रवेश करने से रोकेंगी।
4:1-13 इस खण्ड का विषय परमेश्वर के आराम में प्रवेश करना है - पद 1. मसीह में विश्वास करने वाले इस में प्रवेश करते हैं, किंतु अविश्वास करने वाले इस्त्राएली न कर सके - पद 2,3. इस प्रकार का आराम इस्त्राएल के दिनों में उपलब्ध था और वे उसमें प्रवेश न कर सके और यह परमेश्वर का उद्देश्य था कि कुछ लोग इस में प्रवेश करें, इसलिए उन्हों ने एक दूसरा दिन और समय निश्चित किया - पद 6-8.

सारांशः अभी एक आराम है, जिसमें प्रवेश किया जा सकता है - पद 9,10.

प्रोत्साहनः इस में दाखिल होने का भरसक प्रयत्न करें - पद 11, इसलिए कि परमेश्वर का वचन परख सकता है और अविश्वासी के दाखिल होने पर सदैव के लिये रोक लगा सकता है - पद 12,13.
4:1 "परमेश्वर के आराम"- का अर्थ है आत्मिक सुकून जिसके विषय में यीशु ने मत्ती 11:28 में कहा था। यह मसीह में उद्धार को दिखाता है। कनान की भूमि उस आराम का मात्र चित्र है (यहोशू 1:18 की टिप्पणी देखें।)।

"तुम में से कोई"- वह 'हम में से कोई' नहीं कहता है। वह यह नहीं कहता है कि विश्वासी को मुक्ति का आश्वासन नहीं हो सकता है या उन्हें किसी रीति से भयभीत होना चाहिये कि वे कहीं खो न जाएँ। (देखें 2:15; लूका 12:32; रोमि. 8:15; 1 यूहन्ना 5:13)। लेखक स्वयं के विषय में भयभीत

बरतनी चाहिए, ऐसा न हो कि तुम में से कोई व्यक्ति उस वायदे से चूक जाए। 2हमें उन्हीं की तरह खुशी का समाचार सुनाया गया है, लेकिन सुने हुए वचन (संदेश) से उन्हें कुछ फ़ायदा न हुआ, क्योंकि सुनने वालों के मन में विश्वास के साथ नहीं बैठा। 3हम जिन्होंने विश्वास किया है, उस चैन में दाखिल होते हैः जैसा परमेश्वर ने कहा कि, "मैंने अपने क्रोध में प्रतिज्ञा की, कि वे मेरे आराम में प्रवेश करने न पाएँगे।" हालांकि सृष्टि की शुरूआत से पहले परमेश्वर के काम पूरे हो चुके थे। 4क्योंकि सातवें दिन के विषय में कहीं इस तरह कहा है "परमेश्वर ने सातवें दिन कुछ न बनाया क्योंकि छः दिनों में रचना का कार्य खत्म हुआ।"

5यह भी लिखा है, कि "वे मेरे आराम में प्रवेश न कर पाएँगे।"

6तो जब यह बात बाकी है कि दूसरे और हैं जो उस आराम में प्रवेश करें, और जिन्हें उनका सुसमाचार पहले सुनाया गया, उन्हों ने आज्ञा न मानने के कारण उसमें प्रवेश न किया। 7तो फिर वह किसी विशेष दिन को ठहराकर इतने दिन के बाद दाऊद की पुस्तक में उसे आज का दिन कहते हैं। जैसे पहले कहा गया, "यदि आज तुम उसका शब्द सुनो, तो तुम्हारे मन ढिठाई न दिखाएँ।"

8और यदि यहोशू उन्हें आराम में प्रवेश करा लेता, तो उसके बाद दूसरे दिन की चर्चा न होती।

9इसलिए यह जान लो कि परमेश्वर के लोगों के लिए सब्त का आराम बाकी है।

नहीं था, किंतु दूसरों के लिये। हम सभी लोगों को सतर्क होना चाहिये। जब मसीही कहलाने वाले अविश्वास और अनाज्ञाकारिता के चिन्ह दिखाते हैं, तब हमको उन्हें चेतावनी और प्रोत्साहन देने में सावधानी बरतनी चाहिये - 3:13; 1 तीमु. 5:20.

4:2 इस्राएल को यह सु-संदेश दिया गया था कि प्रतिज्ञा किया हुआ देश तुम्हारे सामने है, जाओ और इसे ले लो - व्यव. 1:19-21. मनुष्यों को जिस सुसमाचार का प्रचार किया जा रहा है वह हैः परमेश्वर आपको मसीह में आत्मिक आराम और उद्धार प्रदान करते हैं। उन्हें विश्वास के द्वारा ग्रहण करें। इस्राएली लोग भूमि को लेने तैयार नहीं थे, इस तरह उन्हों ने अपने अविश्वास और अनाज्ञाकारिता को व्यक्त किया। आज लोग मसीह को अपनाने से और उसमें परमेश्वर की आशीषों को लेने से इन्कार करते हैं और इस तरह अपने अविश्वास को दर्शाते हैं। सुसमाचार सुनना ही काफ़ी नहीं है, उसके साथ विश्वास का होना जरूरी है, ऐसा विश्वास जो आज्ञाकारिता को उत्पन्न करता है।

4:3 परमेश्वर के आराम में दाखिल होने का मात्र तरीका मसीह पर विश्वास करना है - जिस आराम के विषय में परमेश्वर ने कहा था - भजन 95:11.

4:4-5 लेखक उत्पत्ति 2:2 और भजन 95:11 में दिखाता है कि परमेश्वर का एक 'आराम' है और सृष्टि के बनाए जाने के पश्चात् से है। परमेश्वर की सृष्टि उस आत्मिक आराम का चित्र है, जो वह विश्वासियों को देते हैं।

4:6-8 यह परमेश्वर का उद्देश्य है कि लोग उनके आराम में प्रवेश करें। इस्राएल ने कनान देश में दाखिल होने के बाद ऐसा नहीं किया (जो कि उस आराम का एक प्रकार था। यहोशू के द्वारा परमेश्वर ने उन्हें मानवीय दुश्मनों से आराम दिया। इसलिए परमेश्वर ने एक नये समय को नियुक्त किया और उसे "आज का दिन" कहा।

4:7 "आज का दिन"- का अर्थ है यीशु मसीह के प्रथम बार आने के बाद से। देखें 3:7. न यहोशू, न मूसा, न नियमशास्त्र, न ही पूरी वाचा लोगों को वह आराम दे सकी जो परमेश्वर ने उनके लिये रखा था। इसलिए परमेश्वर ने एक दूसरे समय और दूसरी वाचा को नियुक्त किया।

4:9 "सब्त का आराम"- यूनानी में 'सबैटिस्मौस' - सब्त 'मानना' या 'आराम'। सब्त के विषय में देखें निर्ग. 20:8-11. यहूदी 'सब्त' को आने वाले संसार की तस्वीर के रूप में देखते थे - इस्राएलियों ने कहा, "हे सम्पूर्ण विश्व के प्रभु, आने वाले विश्व का एक रूप दिखाइए।" परमेश्वर ने उत्तर दिया, "वह सब्त ही उसका प्रकार है" (यह यहूदी ग्रंथ में लिखा है)। उन्हों ने कहा कि भजन 92 सब्त का भजन था, क्योंकि यह आने वाले विश्व को दिखाता है, जो कि पूरा सब्त का दिन है। क्योंकि यह आने वाले विश्व की ओर संकेत करता है जो कि पूरा सब्त और अनन्त जीवन के लिये आराम है।" - यहाँ लगता है कि लेखक ऐसा ही सिखा रहा है।

10क्योंकि जिसने उनके आराम में प्रवेश
किया है, उसने भी परमेश्वर की तरह
अपने कामों को खतम (पूरा) किया है।
11इसलिए हम उस आराम में प्रवेश करने की
पूरी कोशिश करें, ऐसा न हो कि कोई उन
लोगों के समान आज्ञा न मानकर गिर पड़े।
12क्योंकि परमेश्वर का वचन जीवित
और शक्तिशाली, और हर एक दोधारी
तलवार से भी बहुत चोखा है, आत्मा और
प्राण को, और गाँठ-गाँठ, और गूदे-गूदे को
अलग करके, आर पार छेदता है, और मन
की इच्छाओं और विचारों को जाँचता है।
13सृष्टि की कोई वस्तु सृष्टिकर्ता से छिपी
नहीं है। और ऐसा कोई भी प्राणी नहीं है,
जो उनकी दृष्टि से छिपा हो, परन्तु उनकी
आँखों के सामने सब वस्तुएँ खुली और
बेपरदा हैं, जिन्हें हमें लेखा देना होगा।
14इसलिए जब हमारे ऐसे महापुरोहित
हैं, जो स्वर्ग में दाखिल हो चुके हैं, अर्थात्
परमेश्वर के बेटे यीशु, तो आओ, हम

4:10 विश्वासी आराम में कब प्रवेश करते हैं? निश्चित रीति से अपने पार्थिव जीवन के बाद। तब वे अपने परिश्रम से परमेश्वर की उपस्थिति में आराम पाते हैं। तुलना करें, प्रका. 14:13; 2 कुरि. 5:8; फ़िलि. 1:21-24)। किंतु कुछ अर्थों में, वे इसी आराम में प्रवेश करते हैं - मत्ती 11:28-29. यह आराम अन्तिम सब्त का आराम नहीं, किंतु यह उसका पूर्वानुभव है। इसका अर्थ है, पाप क्षमा के लिये मात्र मसीह पर भरोसा रखना और अपने कार्यों के आधार पर मुक्ति प्राप्त करने का प्रयास न करना (रोमि. 4:4-5)। यह आराम यहीं अभी आरम्भ होता है, किंतु परमेश्वर की उपस्थिति अन्तिम और सिद्ध आराम होगा। यदि हम यह आराम अभी इस पृथ्वी पर मसीह में नहीं आरम्भ करते हैं, तो आने वाले विश्व के सब्त का आराम नहीं पाएँगे यह निश्चित है।

4:11 मत्ती 11:12; लूका 13:24; 2 कुरि. 13:5; 2 पतर. 1:10 से तुलना करें। हम स्वयं में, और दूसरे मसीहियों में अविश्वास और अनाज्ञाकारिता को देखने की कोशिश करें, और लक्ष्य की ओर विश्वास से मिल कर आगे बढ़ें। यह निश्चित जानकर कि हमारे पास मसीह के द्वारा प्रतिज्ञा किया हुआ आराम अभी है और हम उसके साथ जुड़े हुए आगे बढ़ रहे हैं, तो निस्संदेह हम उस अन्तिम आराम में दाखिल होंगे।

"कोशिश करें"- यहाँ कार्यों के आधार पर उद्धार नहीं सिखाया जा रहा है, लेकिन एक बने रहने वाले विश्वास पर (3:14)।

4:12-13 लेखक कह रहा है, "अविश्वास का एक बुरा मन", एक मन "जो पाप के धोखे से कठोर हो गया है" (3:12-13), परमेश्वर से छिपा नहीं रह सकता। बाईबल भीतरी मनुष्य को प्रगट करता है और परमेश्वर जिसने अपनी शिक्षा दी है, यह जानेंगे कि किस को उस आराम में प्रवेश कराए और किसको बाहर रखे।

"जीवित और शक्तिशाली"- 1 पतर. 1:23.

"तलवार"- इफ़ि. 6:17; यिर्म. 23:24 से तुलना करें।

4:13 "सृष्टिकर्ता से"- 2 इति. 16:9; भजन 14:2; 90:8; 139:1-12; यिर्म. 23:24; मत्ती 6:4;।

"लेखा देना"- मत्ती 12:36; प्रे.काम 17:31; रोमि. 14:12; प्रका. 22:12.

4:14 जिस विषय का परिचय लेखक ने 2:17 में दिया था, उसकी ओर वह वापस लौटता है। प्रोत्साहन और चेतावनी देकर वह 10:18 तक अपने विषय को जारी रखता है।

"हमारे ऐसे महापुरोहित हैं"- ऐसा प्रतीत होता है कि प्रत्येक धर्म में मनुष्य एक मध्यस्थ (पुरोहित) की ज़रूरत महसूस करता है - एक ऐसा व्यक्ति जिसे वे अपनी तुलना में परमेश्वर के अधिक निकट समझते हैं। मसीह के आने से पहले लगभग 1400 वर्षों तक यहूदी मत में (पुरोहित) और महायाजक (महापुरोहित) होते रहे थे। किंतु मसीह के मानने वालों के सामने दिखने वाला कोई पुरोहित नहीं था। यहूदियों ने, जो मसीह पर विश्वास नहीं करते थे, सोचा और कहा होगा कि पूरी पृथ्वी पर उनका कोई मध्यस्थ नहीं है, इसलिए उनके लिये कोई महापुरोहित है ही नहीं।

इस पत्र का लेखक इसी गलत धारणा को सही करना चाहता है। मसीह के विश्वासियों के पास सर्वश्रेष्ठ सम्भावित महापुरोहित हैं, अर्थात् परमेश्वर के पुत्र। इसलिए कि वह पृथ्वी पर नहीं हैं और दिखायी नहीं देते, इस में कोई हर्ज़ नहीं है - बल्कि इसके विपरीत है, क्योंकि वह परमेश्वर के समक्ष पृथ्वी के और किसी भी मध्यस्थ से अच्छा काम कर सकते हैं। इस

अपने विश्वास को मज़बूती से थामे रहें।
15क्योंकि हमारे ऐसे महापुरोहित (याजक)
नहीं, जो हमारी कमज़ोरियों में हमारे साथ
दुखी न हो सकें, लेकिन वह सब बातों में
हमारे समान परखे तो गये, तौभी बेगुनाह
निकले।
16इसलिए आओ, हम उस सिंहासन के
पास हिम्मत से पहुँचें, जहाँ कृपा मिलती है,
ताकि ज़रूरत के वक्त हमें मदद मिल सके।

5 क्योंकि हर एक महापुरोहित इन्सानों
में से चुना जाता है, और इन्सानों ही
के लिए उन बातों के बारे में जो परमेश्वर
से सम्बन्ध रखती हैं, ठहराया जाता है कि
भेंट और बलिदान गुनाहों के लिए चढ़ाया
करे। 2यह महापुरोहित कम समझ रखने

सत्य की अज्ञानता लोगों को प्रत्येक स्थान पर मानवीय मध्यस्थ के बंधन में रखती है। इसलिए लेखक यीशु मसीह को एक महापुरोहित के रूप में प्रगट करने के लिये और यह दिखाने के लिये कि वह इस कार्य के लिये कितने उपयुक्त हैं, अत्याधिक परिश्रम करता है।

"आओ... थामे रहें"- 3:1; 4:1. परमेश्वर हमें सत्य इसलिए देते हैं ताकि हम उसे लागू करें।

4:15 "हमारी कमज़ोरियों"- हम में से प्रत्येक में यह भरी पड़ी है। तुलना करें मत्ती 26:41; रोमि. 7:18; 8:26; 1 कुरि. 2:3; 2 कुरि. 12:5,9; गल. 5:17.

"हमारे साथ दुखी न हो सकें"- यह एक कारण था कि अपने इस्त्राएली लोगों के लिये पुरोहितपन को स्थापित करने के लिये परमेश्वर ने ऐसा किया। आदर्श पुरोहित वह था जो लोगों की कमज़ोरियों, दुखों, कठिनाइयों और आवश्यकताओं को जानता था और परमेश्वर के सामने उन्हें सहानुभूति के साथ प्रस्तुत कर सकता था - 5:1-2; निर्ग. 28:29 से तुलना करें। इस्त्राएल के पुरोहित या संसार के किसी और मत के पुरोहित से बढ़कर प्रभु यीशु मसीह यह कार्य कर सकते थे।

"परखे तो गये"- 2:18; मत्ती 4:1-10. इसलिए वह हमारे साथ सहानुभूति रख सकते हैं। यीशु ने सारी परीक्षाओं का सामना किया जिस में से पृथ्वी पर हर मनुष्य गुज़रता है। उन में वास्तविक माँस और खून था और वह वास्तविक मानवीय स्वभाव था - 2:14. उन्हों ने यह अनुभव से जाना कि किस तरह शैतान परमेश्वर के लोगों के विरोध में गरजता फिरता है। वह पाप की भयानक सामर्थ को जानते हैं जिसका उपयोग शैतान हमारे और हमारे विश्वास के विरोध में करता है। यीशु ने शैतान के हर आग की तरह के हमलों का सामना किया, और वह बेगुनाह निकले।

"बेगुनाह निकले"- इसके दो अर्थ हो सकते हैं, एक यह कि प्रलोभन में फँसे नहीं, परन्तु प्रत्येक बार विजय के साथ परीक्षा से बाहर निकल आए; या यह कि उनके पास बुरा स्वभाव नहीं था। सच पूछें तो दोनों ही बातें सही हैं (2:17 की टिप्पणी देखें)। किंतु क्या यह सम्भव है कि जिस व्यक्ति के पास बुरा स्वभाव नहीं है, उसके सामने प्रलोभन हो? हाँ है, देखें, उत्पत्ति 3:1-6; 2 पतर. 2:4; यहूदा 6.

4:16 "सिंहासन"- परमेश्वर के सिंहासन का मतलब है वह जगह जहाँ से वह सारी सृष्टि को चला रहें हैं। हमारे महापुरोहित प्रभु यीशु परमेश्वर के साथ राज्य करते हैं। 1:3; प्रका. 3:21. हमारे पापों के लिये बलिदान हो जाने के कारण, अब कृपा का राज्य है। देखें रोमि. 5:21; 6:14. वह स्वयं हमसे कहते हैं कि हम अपनी ज़रूरतों के लिये उनके निकट आएँ - मत्ती 6:9-13; 7:7-10; यूहन्ना 16:23-24. हमारी सब से बड़ी ज़रूरतें हैं दया और कृपा। हमें चूकने और बुराई में गिरने से बचना है, और यदि हम चूक जाते हैं तो हमें क्षमा की आवश्यकता है। हमें वह बल चाहिए जो कृपा हमें प्रदान करता है और जब हम अपनी कमज़ोरी में गिर जाते हैं तब हमें तरस और दया की ज़रूरत होती है। हम कृपा के सिंहासन के पास आते हैं, हमें यह निश्चित जानना है कि कोई भी ताकत परमेश्वर को हमारी ज़रूरत की वस्तुओं को हमें देने से नहीं रोक सकती। हम जानते हैं कि हमारी ज़रूरतों को पूरा करने के लिये वह तैयार हैं (फ़िलि. 4:19 तुलना करें)।

5:1-10 लेखक महापुरोहित के विषय पर चर्चा जारी रखता है। 1-4 पदों में इस्त्राएलियों में अच्छे महापुरोहित की योग्यताओं का वर्णन है। 5-10 पद दिखाते हैं कि मसीह में ये सभी गुण है।

5:1 "हर एक"- मूसा और मसीह के बीच के समय के इस्त्राएल की धार्मिक व्यवस्था की ओर इशारा है।

वालों, और भूले भटकों के साथ नर्मी से व्यवहार कर सकता है, इसलिए कि वह आप भी कमज़ोरी से घिरा है। 3और इसी लिए उसे चाहिए कि जैसे लोगों के लिए, वैसे ही अपने लिए भी पाप-बलि चढ़ाया करे। 4यह आदर का पद कोई अपने आप से नहीं लेता, जब तक कि हारून की तरह परमेश्वर की तरफ़ से ठहराया न जाए।

5वैसे ही मसीह ने भी महापुरोहित बनने का बड़प्पन अपने आप से नहीं लिया, परन्तु उन्हें परमेश्वर ने दिया, जिन्होंने उन से कहा था कि, "तुम मेरे बेटे हो, मैं ने ही तुम्हें जन्म दिया है।" 6वह दूसरी जगह में भी कहते है, आप मलिकिसिदक की तरह हमेशा के लिए पुरोहित हैं।

7यीशु ने अपनी देह में रहने के दिनों में ऊँचे शब्द से पुकार पुकारकर, और आँसू बहा बहाकर परमेश्वर से जो उनको मौत से बचा सकते थे, 8प्रार्थनाएँ और बिनतियाँ की, और उनके समर्पण के कारण उनकी सुनी गई। 9बेटा होने पर भी, यीशु ने दुख

5:2 "कम...भटकों"- लैव्य. 4:2; 5:17; गिनती 15:28. ऐसे लोगों से पुरोहित नरमी से व्यवहार करता था, किंतु जो लोग जानबूझकर और उद्दण्डता के साथ पाप करते थे उनके लिये कठोर सज़ा थी - 2:2; गिनती 15:30-36 आदि।
5:3 "लोगों के लिए"- लैव्य. 16:15-16,32-34.

"अपने लिये भी पाप-बलि चढ़ाया करे" - लैव्य. 16:3-6. दूसरे अन्य लोगों के समान इस्त्राएल में महापुरोहित कमज़ोर था और उसकी पाप में गिरने की प्रवृत्ति थी। प्रथम महापुरोहित हारून की कमज़ोरी को देखें, निर्ग. अध्याय 32.
5:4 निर्ग. 28:1.
5:5 1:5; भजन 2:7.
5:6 पद 10; 6:20; 7:17. देखें भजन 110:4; भजन 110:5 में शब्द 'बेटा' मसीह के लिये है और जिस प्रकार से हारून को परमेश्वर ने अब पुरोहित ठहराया था, उसी प्रकार यीशु को भी ठहराया।

"मलिकिसिदक"- अध्याय 7 में नोट्स देखें।
5:7-9 लेखक यह दिखाता है कि मसीह में महापुरोहित के दूसरे गुण भी थे - लोगों पर दया दिखाने की योग्यता। पृथ्वी पर उनके दुखों के फलस्वरूप उसकी यह योग्यता सिद्ध हो गयी थी। इस पत्र में अन्य किसी स्थान में वह दिखाता है कि किस तरह मसीह ने महापुरोहित की अन्य ज़िम्मेदारियों को पूरा किया - लोगों की ओर से परमेश्वर के सामने खड़े होना (वचन 1; 7:25; 9:24), और उनके गुनाहों के लिये बलिदान चढ़ाना (7:27; 8:3; 9:11-12; 10:28; 10:10,14)।

"जो उनको मौत से बचा सकते थे"- कुछ आलोचकों को कहना है कि शैतान यीशु को गतसमनी बाग में ही मार डालना चाहता था और यीशु परमेश्वर से प्रार्थना कर रहे थे कि सृष्टिकर्ता इस से बचाएँ और क्रूस पर पापों के बलिदान के रूप में मरने की योग्यता प्रदान करे। परन्तु इस प्रकार की शिक्षा बाईबल में नहीं पायी जाती। कुछ लोग कहते हैं कि वह क्रूस की मौत से बचाए जाने के लिये प्रार्थना कर रहे थे। परन्तु यह सच नहीं हो सकता। क्योंकि वह अपने मृत्यु के उद्देश्य को जानते थे (मत्ती 20:28; यूहन्ना 10:17-18)। और आगे लेखक यह भी कहता है कि 'उनकी सुनी गयी'। हम जानते हैं कि यीशु ने तो क्रूस की मृत्यु सही। इसलिए उनकी प्रार्थना यह नहीं थी।

सम्भावित अर्थ यह है, कि यीशु इसलिए प्रार्थना कर रहे थे कि मृत्यु के पश्चात् मृत्यु के दायरे से पिता उन्हें छुड़ा लें, ताकि मृत्यु उनके ऊपर अपना प्रभाव न बनाए रखे (प्रे.काम 2:24)। दूसरे शब्दों में, पिता उन्हें मृतकों में से जीवित करें। तुलना करें भजन 22:15-21. (पद 19-20 फिर से जी उठने के लिये उनकी प्रार्थना प्रतीत होती है)।
5:8 "प्रार्थनाएँ और बिनतियाँ"- अपने पृथ्वी पर रहने के दिनों में प्रभु यीशु एक प्रार्थना करने वाले जन थे (मत्ती 14:23; लूका 5:16)। परन्तु लेखक यहाँ एक निश्चित समय का उल्लेख करता है जब वह मौत का सामना कर रहे थे। संभावना है कि वह मसीह के गतसमनी बाग के अनुभव के विषय में कहता है (मत्ती 26:36-46; मरकुस 14:32-42; लूका 22:39-46)। यहाँ वह दुख से व्याकुल हुए, उनका पसीना मानो लोहू की बून्दों की नाईं टपक रहा था। ये सारी बातें परीक्षा के भयानक समय को और दैहिक कमज़ोरी के अनुभव को दर्शाती हैं (तुलना करें 2 कुरि. 13:4)।

"सुनी गई"- इसका मतलब है उनकी प्रार्थना

उठा-उठा कर आज्ञा माननी सीखी। वह मज़बूत बनकर अपने सब आज्ञा मानने वालों के लिए सदा काल की मुक्ति का कारण हो गए। 10और उन्हें (यीशु को) परमेश्वर की ओर से मलिकिसिदक की तरह महापुरोहित का पद मिला।

11इस विषय में हमें बहुत सी बातें कहनी हैं, जिनका समझाना भी कठिन है, इसलिए कि तुम ऊँचा सुनने लगे हो। 12समय के विचार से तो तुम्हें गुरु हो जाना चाहिए था, लेकिन ऐसा लगता है, कि तुम्हें अभी भी एक ऐसे इन्सान की ज़रूरत है जो तुम्हें परमेश्वर के वचनों (बाइबल) की मूल शिक्षा फिर

का उत्तर मिला। हम यह जानते हैं कि यीशु को क्रूस पर मरने से बचाया नहीं गया, जिसका मतलब हुआ कि यीशु ने क्रूस की मृत्यु से बचाव के लिये प्रार्थना नहीं की थी।

किंतु क्या यीशु को यह ज्ञान नहीं था कि परमेश्वर उन्हें जिला देंगे? फिर उसके लिये प्रार्थना क्यों करना? उन्हें यह ज्ञान था कि परमेश्वर ने यह प्रतिज्ञा की थी कि वह उन्हें जिला देंगे (भजन 16:10)।

किंतु प्रार्थना का यह महत्वपूर्ण अंग है - परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं के पूरे होने के लिये उनके सामने गिड़गिड़ाना (तुलना करें यूहन्ना अध्याय 17; दानि. 10:2-19 आदि) और जब भयंकर अनुभव का प्याला उनके सामने आया (मत्ती 26:39; 2 कुरि. 5:21), और वह अंधकार का समय जो उनके ऊपर आया (लूका 22:53), तब यीशु बड़े व्याकुल होकर आँसुओं से रोये। और पिता ने उनकी सुन ली (मत्ती 28:6)। इसलिए कि यीशु में पिता के प्रति श्रद्धा थी।

5:9 "आज्ञा माननी सीखी"- इसका मतलब यह नहीं है कि वह कभी अनाज्ञाकारी थे, और उन्हों ने धीरे-धीरे आज्ञा माननी सीखी। अनाज्ञाकारिता परमेश्वर का विरोध करना है और वह कभी भी अनाज्ञाकारी नहीं थे (यूहन्ना 4:34; 6:38; 8:29; फ़िलि. 2:6-8; 1 पतर. 2:21-22)। किंतु यीशु ने अपने अनुभव से यह सीखा कि आज्ञाकारिता का मतलब क्या है। यह भी कि आज्ञाकारिता में अपनी इच्छा को मारना, परीक्षाओं का सामना करना और दुख उठाना सभी सम्मिलित है। उस प्याले (मत्ती 26:39) को जो उनके सामने था, देखकर वह यह अनुभव कर सके कि आज्ञाकारिता आसान नहीं है।

"मज़बूत बनकर"- इसका मतलब यह नहीं है कि यीशु के जीवन में कुछ खोट थी, जिसके सुधार की आवश्यकता थी। 2:10 के सम्बंध में टिप्पणी देखें, परमेश्वर ने यीशु को हमारे महापुरोहित बनाने के लिये दुखों के अनुभव में से जाने दिया। इस प्रक्रिया में से जाए बिना वह हमारे लिये ऐसे सिद्ध नहीं बन सकते थे जिसकी हमें ज़रूरत थी।

"आज्ञा मानने वालों"- इस पद के प्रकाश में और दूसरे पद, जैसे यूहन्ना 3:36; प्रे.काम 5:32; 2 थिस्स. 1:8), क्या हम यह कह सकते हैं कि जो व्यक्ति यीशु की आज्ञा मानने से इन्कार करता है, वह मुक्ति प्राप्त कर सकता है? इसका अर्थ यह नहीं कि मुक्ति कार्यों से मिलती है, किंतु पौलुस के अनुसार 'विश्वास' की आज्ञाकारिता से (रोमि. 1:5)। यह कृपा है जो हमें ऐसा विश्वास और मन देती है, जिससे हम भरोसा कर सकें। (इफ़ि. 2:8-9)। प्रे.काम 22:10 की टिप्पणी देखें।

5:11-14 लेखक एक और प्रोत्साहन और चेतावनी आरम्भ करता है जो 6:12 में खतम होती है। यह वापस जाने के सम्बन्ध में चेतावनी है (6:6)। यह चेतावनी उसने इसलिए दी क्योंकि उसने इन यहूदियों में से आए हुए विश्वासियों के मसीही जीवन में तरक्की की कमी देखी।

5:12-14 कई पासबान, प्रचारक, शिक्षक आज यही शिकायत करते हैं। कई मसीही विश्वासी हैं जो विश्वास में आने के कई वर्षों बाद भी केवल दूध ही माँगते हैं, और दूध ही लेते हैं, अर्थात् सुसमाचार की सरल सच्चाईयाँ। वे सुसमाचार की सभाओं में भीड़ लगाते हैं और बाईबल अध्ययन से दूर रहते हैं। एक ही सच्चाई उन्हें बार-बार सिखानी पड़ती है।

"परमेश्वर के वचनों"- शायद इसका अर्थ भी पद 12 का 'ठोस खाना' है। 1 कुरि. 2:6-10 में पौलुस ने ज्ञान के विषय में परिपक्व मसीहियों को सिखाया, इसका अर्थ भी वही है।

से सिखाए? तुम ऐसे हो गए हो कि तुम्हें अनाज के बदले अब तक दूध ही चाहिए। 13दूध नए विश्वासियों के लिए है जिन्हें परमेश्वर के रास्ते का अनुभव नहीं है, क्योंकि वे बच्चे हैं। 14लेकिन ठोस खाना सयानों के लिये है, जिन्होंने अपने मनों को अभ्यास के द्वारा भले बुरे में भेद करने का ज्ञान हासिल किया है।

6 इसलिए आओ, मसीह के बारे में शुरुआती शिक्षाओं के ऊपर बहस करना छोड़कर, हम परिपूर्णता की ओर आगे बढ़ते जाएँ, और बुरे कामों से मुड़ने और परमेश्वर पर विश्वास करने, 2और बपतिस्मों और हाथ रखने, और मरे हुओं के जी उठने, और सनातन न्याय की बुनियाद फिर से न डालें। 3और यदि परमेश्वर चाहें, तो हम

"अनाज"- का अर्थ है, यीशु और दूसरे सिद्धान्तों के बारे में शिक्षा। परमेश्वर की ऐसी सच्चाईयों को स्वीकार न करना अपरिपक्वता दिखाती है। देखें 1 कुरि. 3:1-4.

5:13 "परमेश्वर के रास्ते का अनुभव नहीं है"- आत्मिक जीवन में ऐसे शिशु परमेश्वर की बातों के विषय में शिक्षा सुन सकते हैं, लेकिन अपने जीवन भर लागू करने के सम्बन्ध में उनके पास कोई अनुभव नहीं है।

5:14 "सयानों के लिये"- जो लोग परमेश्वर की बातों के अभ्यास और आत्मिक समझ में दृढ़ हो गये हैं। प्रायः भले और बुरे में और सच एवं झूठ में भेद करना मुश्किल होता है। इसके लिये प्रशिक्षण (परमेश्वर के वचन की गहरी बातों के अर्थ को समझने में प्रयास) की ज़रूरत है। इसका अर्थ है निरन्तर का प्रयास, अध्ययन और अनुशासन। जो लोग आत्मिक शिशु हैं, ये शायद वे लोग हैं, जिनके पास आत्मिक विकास के लिये थोड़ा समय और अवसर है या वे लोग जो कोशिश नहीं करना चाहते हैं।

6:1-2 "शुरूआती शिक्षाओं"- यह स्पष्ट नहीं कि किस आरम्भ की बात की जा रही है। जो यहूदी मसीही हो गये थे, उन्हें वह लिख रहा है। यहूदी होने के नाते उन्हों ने जिस पुराने नियम को प्राप्त किया था, शायद उसी की ओर संकेत है या नयी वाचा के काल में प्रेरितों द्वारा रखी गयी आरम्भ की बातों के विषय में कहा जा रहा है। अर्थ संदेहस्पद है, क्योंकि यहाँ वर्णित छः बातों में से एक भी स्पष्ट रूप से मसीही नहीं है। सभी बातें पुरानी वाचा (नियम) में रखी नींव या आरम्भ की बातों का एक भाग हो सकती हैं।

6:1 "सिद्धता"- "परिपक्वता" या "पूरा विकास" - 5:14; इफ़ि. 4:13-15

"बुरे कामों से मुड़ने और परमेश्वर पर विश्वास करने"- लेखक यहाँ "मसीह में विश्वास" की बात नहीं करता है।

6:2 "बपतिस्मों"- बहुवचन देखें। यदि वह यहाँ पर मसीही बपतिस्मे के विषय में कहता, तो एक वचन न होता? देखें इफ़ि. 4:5. यहाँ पर "धोया जाना" एक सम्भावित और बेहतर अर्थ है। पुरानी वाचा में कई प्रकार का धोया जाना था - निर्ग. 29:4; 3:19-21; लैव्य. 11:25; 13:6; 14:8; 16:26; 17:16; गिनती 8:17; 19:18 आदि।

"हाथ रखने"- यह भी पुराने नियम में है - गिनती 8:10; 27:18; निर्ग. 29:10; लैव्य. 1:4.

"मरे हुओं के जी उठने"- (दानि. 12:2; यशा. 26:19; भजन 16:10)।

"न्याय"- (भजन 9:8; 82:8; दानि. 7:9-10; योएल 3:12)।

फिर भी बाईबल का ज्ञान रखने वाले कुछ लोग दूसरे दृष्टिकोण से देखते हैं। वे कहते हैं कि लेखक के मन में "परमेश्वर पर भरोसे" का अर्थ मसीह पर भरोसा भी हो सकता है। वे ये भी कहते हैं कि "बपतिस्मे" का अर्थ यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले का बपतिस्मा, मसीही बपतिस्मा, पवित्र आत्मा का बपतिस्मा हो सकता है। हाथ रखना, आरम्भिक कलीसिया में हाथ रखने की प्रथा हो सकती है (प्रे.काम 6:6; 8:16-18; 13:3 आदि)। यदि यह सूची मसीही जीवन की नींव की बातों (आधारभूत) का वर्णन करने के लिये उपयोग की जाए, तौभी यह एक विचित्र सूची होगी - इस सूची में मसीह के उत्पन्न होने, पाप के लिये बलिदान, पवित्र आत्मा के दिये जाने, मसीह की कलीसिया, मसीह के द्वारा अनन्त जीवन के विषय कुछ भी नहीं है। संदेहस्पद होने के कारण यह नहीं कह सकते कि इसका अर्थ यह है या वह है।

यही करेंगे।
4क्योंकि जिन्होंने एक बार सच्चाई जान ली है, और जो स्वर्गिक वरदान का स्वाद चख चुके हैं और पवित्र आत्मा के भागी

6:4-6 इन पदों का अर्थ लगाना सरल नहीं है। इन के अर्थ के विषय में बाईबल का ज्ञान रखने वालों में आपस में मतभेद है। इन पदों के विषय भी चार प्रकार के मत हैं।

पहला, ये मसीह में विश्वासियों के सम्बन्ध में हैं, जो मसीह से मुकर कर अपने उद्धार को खो सकते हैं।

दूसरा, ये पद उन विश्वासियों की ओर संकेत करते हैं जो यदि गिर जाते हैं, अपना उद्धार नहीं खोते हैं। वे मात्र उन पुरस्कारों से वंचित रह जाएँगे जो उन्हें विश्वासयोग्य सेवा के कारण मिले होते।

तीसरी विचारधारा के लोग यह मानते हैं कि ये पद उन सच्चे विश्वासियों के विषय में है जिन्हें वापस जाने के वास्तविक खतरे के बारे में चेतावनी दी गयी थी, किंतु वे सचमुच में कभी विश्वास से नहीं मुकरेंगे।

चौथे मत वाले कहते हैं, कि ये वास्तविक विश्वासी नहीं है - जो बातें यहाँ लिखी गयी हैं वे विश्वासियों के सम्बन्ध में सत्य हैं, किंतु उन मसीहियों के सम्बन्ध में भी सही हो सकती हैं जो कभी भी सच्चे विश्वासी नहीं रहे हैं।

इस अध्ययन बाईबल के लेखक का अपना मत यह है कि मसीह के सच्चे विश्वासी कभी विश्वास से मुकर नहीं जाते हैं, और न ही वे विश्वास त्याग से सम्बन्धित कोई पाप करते हैं (2:1-4 से सम्बन्धित टिप्पणी और 10:39; यूहन्ना 10:27; 1 यूहन्ना 3:9; 5:18 देखें और तुलना करें यूहन्ना 5:24; 6:37-40; 10:27-29; 17:11-12; रोमि. 5:9-10; 8:28-39; फ़िलि. 1:6; 1 पतर. 1:5)।

हमें कभी भी इस तरह के मुश्किल पदों (जैसा यहाँ इब्रानियों में पाया जाता है) का उपयोग स्पष्ट पदों को हटाने के लिये नहीं करना चाहिये। इब्रानियों के ये पद स्पष्ट रीति से यह नहीं कहते हैं कि मसीह में सच्चे विश्वासी विश्वास से मुकर जाते हैं और खो जाते हैं। सच पूछें तो इन पदों में मसीह में विश्वास की चर्चा तक भी नहीं की गयी है।

संपूर्ण नये नियम की शिक्षा के प्रकाश में तीसरा अर्थ सही लगता है। शैतान का यह प्रयास रहता है कि विश्वासी अपने विश्वास से मुकर जाये और इसका खतरा है भी। किन्तु खतरे की संभावना का अर्थ यह नहीं है कि ऐसा अवश्य होगा। यदि परमेश्वर का वचन, उनकी सम्हालने की योग्यता और उनके लिये मसीह की प्रार्थनाएँ न होतीं तो यह संभव था (तुलना करें लूका 22:31-32; यूहन्ना 17:11-12; 1 पतर. 1:5)। किन्तु इन कारणों से वे मुकरने से बचे रहते हैं और जब खतरा आता है, मुकरने के विषय में दी गयी चेतावनियों के कारण वे विश्वास को त्यागने से बचे रहते हैं।

किन्तु चौथा अर्थ संभवतः सही है। 4 से 6 पद उन लोगों के बारे में हो सकते हैं जो सत्य को जानते हैं, उसके द्वारा प्रभावित हुए हैं, परमेश्वर के राज्य के बहुत निकट आ चुके हैं, फिर भी उन्हों ने उसमें प्रवेश नहीं किया है। जो लोग परमेश्वर की सन्तान नहीं हैं, किन्तु ऐसा ऐलान करते हैं, कुछ समय तक वे परमेश्वर की सन्तान दिखायी दे सकते हैं (तुलना मत्ती 13:18-23,24-30; 25:1-2; 2 कुरि. 11:14-15)। 4 से 6 पद में कही हुई बातें विश्वासियों के सम्बन्ध में सत्य हैं, किन्तु इस बात की भी संभावना है कि जो लोग विश्वासी नहीं हैं, किन्तु दिखायी देते हैं, उनके बारे में भी वे सत्य हैं।

6:4 "जिन्होंने...है"- उन लोगों के विषय में कहा गया है, जो सत्य को जानते हैं। 10:26 से तुलना करें। मसीह की रोशनी उन पर चमकी है। किंतु इसका अर्थ यह नहीं है कि उन्हों ने रोशनी पर अपना भरोसा रखा या 'ज्योति की सन्तान' (यूहन्ना 12:35-36) बन गए। लोग बिना मन परिवर्तन और उद्धार के या यीशु पर बिना विश्वास किये सत्य को जानना जारी रख सकते हैं।

"स्वर्गिक वरदान का स्वाद चख चुके हैं"- इसका यह मतलब नहीं लगाना चाहिये कि उन्हें स्वर्गिक वरदान प्राप्त हो चुका है। हो सकता है कि लेखक ने यहाँ पर यूहन्ना 6:57 के 'खाने' शब्द की तुलना चखने से की होगी। गिनती 13:23,26 से तुलना करें। इस्राएली जिन्होंने कनान में अविश्वास के कारण कभी भी प्रवेश नहीं किया (3:19), कनान के फलों को चखा होगा।

हो गए हैं, 5और परमेश्वर की उत्तम शिक्षा
का और आने वाले युग की सामर्थ का
स्वाद चख चुके हैं 6यदि वे भटक जाएँ,
तो उन्हें मन बदलाव के लिए फिर नया
बनाना असंभव है क्योंकि वे परमेश्वर के
बेटे को अपने लिए फिर क्रूस पर चढ़ाते हैं
और खुले रूप में उन पर कलंक लगाते हैं।
7क्योंकि जो ज़मीन बरसात के पानी

"पवित्र आत्मा के भागी हो गये हैं"- लेखक यह नहीं कहता है कि उन्हों ने 'पवित्र आत्मा पाया'। भागी होने का अर्थ यह हो सकता है और नहीं भी। पवित्र आत्मा का हिस्सेदार होना कई तरीकों से हो सकता है। झूठे बालाम को उसका अनुभव था (गिनती 24:2)। यहूदा इस्करियोती को था (मत्ती 10:1; यूहन्ना 6:70-71)। प्रे.काम 8:9-24 में शमौन इसका एक अच्छा उदाहरण हो सकता है। शायद यहाँ पर भागी होने का अर्थ है, सामर्थ के साथ पवित्रात्मा के कार्य के समय व्यक्ति का उपस्थित होना, आत्मा के द्वारा कायल किया जाना (यूहन्ना 16:8-11), पश्चाताप के स्थान पर, परमेश्वर के राज्य की सीमा तक आत्मा के द्वारा लाया जाना।

6:5 "आने वाले युग की सामर्थ"- मत्ती 7:22-23 से तुलना करें।

"सामर्थ का स्वाद"- तुलना करें मत्ती 13:20-21.

6:6 "यदि"- शब्द यह नहीं सिखाता कि जिन लोगों का वर्णन 4,5 पद में है, वे विश्वास का त्याग करने वाले लोग हैं। किंतु निस्संदेह लेखक इसके खतरे के विषय में ज़रूर सिखाता है।

"भटक जाएँ"- भटकना किसी गुनाह में पड़ जाने से अधिक भयंकर है। पतरस बुरी तरह से गिरा, किंतु पुनः उसने पश्चाताप किया और पुनः वापस आ गया (मत्ती 26:69-75)। यदि हम गुनाह में गिरते हैं, हमें मुआफ़ी प्राप्त हो सकती है (1 यूहन्ना 1:9; 2:1; मत्ती 6:12; 12:31-32; नीति. 24:16 देखें)। "भटक जाएँ" का अर्थ है विश्वास त्याग। इसका अर्थ पूरी तरह से सत्य को छोड़ देना भी है (2:1-4 की टिप्पणी देखें)। लेखक यह क्यों कहता है कि पश्चाताप के लिये उन्हें नया बनाना असम्भव है? वह यह क्यों नहीं कहता कि विश्वास का नवीनीकरण हो, यदि वह उन लोगों के विषय कह रहा है जिनके पास विश्वास है? पश्चाताप का अर्थ है, मन परिवर्तन, और यहाँ अर्थ यह हो सकता है, पहले इन इब्री लोगों ने यह सोचा कि यीशु उनके मसीह नहीं हैं। बाद में उन्हों ने अपने मन को परिवर्तित किया और विश्वास किया कि वह हैं। पद 4,5 में उनके बारे में कहा गया है कि उस से वे पूरी तरह से मुकर गए, तो पुनः उन्हें मन बदलाव के स्थान पर कैसे लाया जा सकता है?

"फिर क्रूस पर चढ़ाते हैं"- इस से हमें यह कारण मिल जाता है कि फिर उनके लिये कोई पश्चाताप क्यों नहीं है। वे मसीह का इन्कार करते हैं और उनके हत्यारों का पक्ष लेते हैं, जैसे यहूदा ने किया था। लेखक पिछड़ जाने से अधिक बुरी स्थिति की बात कर रहा है। पिछड़े हुए लोगों को पश्चाताप और विश्वास में लाना सम्भव है (2 कुरि. 2:5-10; गल. 6:1; याकूब 4:8-10; भजन 32:3-5; 51:1-12; यिर्म. 3:12; यहेज. 18:30-32; होशे 14:1-4)।

"खुले...कलंक"- यदि इब्री लोग मसीह को छोड़कर वापस यहूदी धर्म में जाते तो यह सब लोगों को मालूम हो जाता। यदि कोई व्यक्ति मसीह को ठुकराकर किसी दूसरे मत में जाता है, तो सभी लोग यह बात जान जाते हैं। इसका अर्थ मसीह और उनके सुसमाचार के लिये सार्वजनिक शर्म और इस कारण लोग सच्चे परमेश्वर का अनादर भी करेंगे।

6:7-8 इसके अर्थ को समझाने के लिये लेखक यह उदाहरण देता है। उत्पादन देने वाली भूमि विश्वासियों की ओर संकेत करती है (मत्ती 13:23 देखें)। फल न देने वाली भूमि अविश्वासियों और विश्वास त्यागने वालों को दर्शाती है। वे लोग परमेश्वर के लिये कोई फल नहीं उत्पन्न करते हैं (तुलना करें मत्ती 13:19-22; लूका 13:6-9 आदि)। दोनों प्रकार की ज़मीन पर वर्षा हो सकती है (यहाँ पर वर्षा परमेश्वर के सत्य और पवित्र आत्मा के प्रभाव को दिखाती है। किंतु परमेश्वर के लिये दोनों ही फल पैदा नहीं करते हैं। एक मनुष्य के जीवन का उत्पादन (फल) यह प्रगट करता है कि वह मसीह में है या नहीं है। विश्वास त्याग के काँटे इस बात का चिन्ह हैं कि इन लोगों में मसीह कभी नहीं थे (तुलना करें 1 यूहन्ना 2:19; मत्ती 3:8; 7:16-20)।

को जो इस पर बार-बार पड़ता है, पी पीकर जिनके द्वारा जोती-बोई जाती है, उनके काम का साग-पात उपजाती है, वह परमेश्वर से आशीष पाती है। 8परन्तु यदि वह झाड़ी और ऊँटकटारे उगाती है, तो निकम्मी और सज़ा लायक है, और उसका अन्त जलाया जाना है।

9हे प्रियो, हालांकि हम ये बातें कहते हैं, तौभी तुम्हारे विषय में हम इस से अच्छी बेहतर बातों का भरोसा करते हैं। 10क्योंकि परमेश्वर अन्यायी नहीं कि तुम्हारे काम, और उस मेहनत को भूल जाए, जो तुम ने उनके नाम के लिए इस तरह से दिखाया, कि दूसरे पवित्र जनों की सेवा की, और कर भी रहे हो। 11हम बहुत चाहते हैं कि तुम में से हर एक जन आखिर तक पूरी आशा के लिए ऐसी ही समझदारी से काम ले 12ताकि तुम आलसी न हो जाओ वरन् उनको नमूना बनाओ जो विश्वास और धीरज के द्वारा वायदों के वारिस होते हैं।

13और परमेश्वर ने अब्राहम को प्रतिज्ञा देते समय जब शपथ खाने के लिए किसी को अपने से बड़ा न पाया, तो अपनी ही शपथ खाकर कहा, 14"मैं सचमुच तुम्हें बहुत आशीष दूँगा, और तुम्हारी सन्तान को बढ़ाता जाऊँगा।"

15और इस तरह से उसने धीरज धरकर प्रतिज्ञा के नतीजे को पाया।

16मनुष्य तो अपने से किसी बड़े की शपथ खाया करते हैं, और उनके हर एक विवाद का फ़ैसला शपथ से पक्का होता है। 17इसलिए जब परमेश्वर ने प्रतिज्ञा के

6:9-10 यह स्पष्ट है कि किसी भी प्रकार की अनावश्यक चेतावनी जो उसके शब्दों द्वारा प्रगट हुयी होगी, उसे हटाने की वह कोशिश करता है (तुलना करें 4:1; रोमि. 8:15)। उसके "गिर जाने", "श्रापित होने" और "जलाए जाने", की सम्भावना से वह इस कारण इन्कार करता है क्योंकि उनके जीवन में आत्मिक फल प्रगट हुआ था। वे परमेश्वर से प्रेम रखते थे, परमेश्वर के लिये कार्य करते थे और उन्हों ने परमेश्वर के लोगों की सेवा की थी (10:32-34 देखें)। यदि मसीह के जीवन में इस प्रकार की बातें नहीं दिखायी देती तो उसके विश्वासी होने का क्या चिन्ह है? यदि उसके सम्बन्ध में 4,5 का सम्पूर्ण मत सही है और उसके जीवन में परमेश्वर के लिये कोई फल नहीं है, तो सब कुछ बेकार है। वह आज ऐसी ज़मीन के समान है, जो काँटे उगाती है।

6:10 "सेवा की"- मत्ती 25:34-40; 1 थिस्स. 1:3.

6:11-12 वह चाहता था कि पद 4-8 में दी गयी चेतावनी से वे लोग सीखें। यदि वे मसीह में आगे बढ़ने के लिये तत्पर नहीं है तो उन सभी का अर्थ लगाने में हमारा और उनका कोई लाभ न होगा। महत्वपूर्ण बात यह है कि इस पृथ्वी पर हमारे जीवन के अन्त तक मसीह में विश्वास रखा जाए और उनकी सेवा की जाए। यदि हम ऐसा करें तो हम विश्वास त्यागने वाले नहीं होंगे और न ही हमें डरना चाहिये कि कहीं ऐसा हो।

"आखिर तक"- 3:6,14; 10:36.

"पूरी आशा"- 2 कुरि. 13:5; 2 पतर. 1:10; 1 यूहन्ना 5:13.

6:12 "आलसी"- मत्ती 25:26; नीति. 18:9; 24:30-34. आत्मिक बातों में आलस्य विनाशकारी है, जैसा दूसरे क्षेत्रों में भी होता है।

"धीरज"- 10:36; रोमि. 8:25; याकूब 1:4.

"वायदों"- उत्पत्ति 22:16-18.

6:13-20 अध्याय 5:11 में आरम्भ किये हुए भाग को लेखक यहाँ खतम करता है और हमें मसीह के मध्यस्थ होने के विषय पर वापस लाता है (पद 20)। धीरज, विश्वास और मेहनत के विषय में 11 और 12 पद में बताने के बाद एक ऐसे इन्सान का उदाहरण देता है जिसके जीवन में यह बातें थीं। अन्त में वह उन बातों को सभी विश्वासियों पर लागू करता है।

6:13-15 अब्राहम सभी इब्रियों का पूर्वज था। रोमि. 4:11,16 के अनुसार वह सभी विश्वास करने वालों का पिता है। 11:18-19 में अब्राहम के विश्वास का वर्णन है। विश्वास और धीरज का वह एक महान नमूना है।

6:16-18 यदि मनुष्य सत्य कहने के लिये शपथ लेता है तो उन से और क्या अपेक्षा की जा सकती है? परमेश्वर से मनुष्य इस से अधिक और क्या अपेक्षा कर सकता है? शपथ के बाद मनुष्य झूठ बोल सकता है, किंतु परमेश्वर नहीं (तीतुस 1:2)। यदि कुछ करने की शपथ वह लेता है, वैसा वह करता है।

वारिसों पर और भी साफ़ तरह से प्रगट
करना चाहा, कि उनकी मनसा बदल नहीं
सकती, तो शपथ को बीच में लाए, 18ताकि
दो बे-बदल बातों के द्वारा जिनके विषय
में परमेश्वर का झूठा ठहरना अनहोना है,
हमारा दृढ़ता से ढाढ़स बन्ध जाए, जो शरण
लेने को इसलिए दौड़े हैं कि उस आशा को
जो सामने रखी हुई है, प्राप्त करें।

19यह आशा हमारे प्राण के लिए ऐसा
लंगर है जो स्थिर और मज़बूत है, और
परदे के अन्दर तक पहुँचता है, 20जहाँ
यीशु मलिकिसिदक की तरह सदा काल
के महापुरोहित बनकर हमारे लिए अगुवे
के रूप में दाखिल हो चुके हैं।

7 इस शालेम के राजा मलिकिसिदक
ने, जो परम प्रधान परमेश्वर के लिए
सदा के लिए पुरोहित है, अब्राहम से भेंट
कर के उस समय उसे आशीष दी, जब वह
(अब्राहम) राजाओं को मारकर लौट रहा
था। 2इसी को अब्राहम ने सब वस्तुओं
का दसवां अंश भी दिया। यह पहले अपने
नाम के अर्थ के अनुसार, "धार्मिकता
का राजा", 3और फिर "शालेम अर्थात्
शान्ति का राजा" है। इसका न पिता, न
माता, न वंशावली है, न ही इसके जीवन
की शुरुआत है, और न जीवन का अन्त
है, फिर भी परमेश्वर के बेटे के स्वरूप
में ठहराये जाने के कारण वह निरन्तर

6:18 "दो बे-बदल बातें"- (पद 18) परमेश्वर की प्रतिज्ञाएँ और शपथ दोनों विश्वासियों के प्रोत्साहन के लिये हैं, विश्वासी शरण प्राप्त करने के लिये भागे हैं - गुनाह से, गुनाह के प्रति परमेश्वर के क्रोध से, पतित संसार से, और प्रत्येक उस बात से जो लोगों को अनन्त उद्धार से अलग रखती है (गिनती 35:9-29 से तुलना करें)। उन्हों ने परमेश्वर के अनन्त उद्धार की प्रतिज्ञा को पकड़ लिया है।

"शरण"- भजन 7:1; 18:2; 91:2 आदि।

6:19-20 जिस आशा के विषय में बाईबल बताती है, वह निर्बल और डाँवाडोल नहीं है। यह मज़बूत और सुरक्षित लंगर है। यह कभी न हिलने वाली है (रोमि. 5:2-5)। लंगर समुद्र में जहाज को एक स्थान पर स्थिर रखता है। आशा से विश्वासी एक स्थान पर स्थिर रहते हैं - 'परदे भीतर' (स्वर्ग जहाँ मसीह है) वहाँ विश्वास त्याग का कैसा तूफ़ान भी क्यों न आ जाए, वे कभी भी नाश नहीं होंगे।

"परदे"- 10:19-20; मत्ती 27:51. मिलाप वाले तम्बू और मन्दिर दोनों में ही पवित्र और महापवित्र स्थान का विभाजन परदे के द्वारा किया गया था। महापवित्र स्थान स्वर्ग की ओर संकेत करता है। उन विश्वासियों ने वहाँ प्रवेश नहीं किया था, किंतु यीशु ने किया था। विश्वास और आशा के द्वारा वे सदा-सदा के लिये उस से बँधे हुए थे। वह उनके सामने और उनके लिये वहाँ हैं - 4:14; 9:24; इफ़ि. 2:6; कुल. 3:3-14. वहाँ पर वह हैं। और वही हमें वहाँ पहुँचाएँगे - यूहन्ना 17:24.

7:1-3 मलिकिसिदक मसीह का एक प्रकार है या उनके समान है जो राजा और याजक दोनों ही था 5:6,10; 6:2. बाईबल के इतिहास में मलिकिसिदक केवल एक बार प्रगट होता है - उत्पत्ति 14:19-20. नये नियम में इब्रानियों की पत्री में एक और बार उसके बारे में पढ़ने से पहले, भजन 110:4 में भी उसका वर्णन है। इसीलिए कुछ लोग यह सोचते हैं कि वह मसीह ही था। किंतु यदि मलिकिसिदक कनान में शालेम का एक राजा था, तो वह मसीह हो ही नहीं सकता। लेखक यहाँ कहता है कि वह परमेश्वर के बेटे के समान था, न कि वह परमेश्वर का बेटा था।

इसका अर्थ क्या है कि वह बिना पिता और माता के था? शायद इसका अर्थ है, कि बाईबल में इन सब का कोई लेखा जोखा नहीं है। हम उसके माता-पिता, वंशावली, जन्म और मृत्यु के सम्बंध में कुछ नहीं जानते हैं। अचानक ही वह बाईबल में प्रगट होता है और सदैव एक राजा याजक के रूप में मसीह की ओर संकेत करता है। मसीह धार्मिकता के राजा, शान्ति के राजा हैं जो कि अब्राहम से बढ़कर हैं, जिनकी उत्पत्ति नहीं है और न ही अन्त है (1:2-3,8,10-12), और वह सदा-सदा के लिये मध्यस्थ हैं (5:6)।

पुरोहित बना रहता है।

4अब इस पर ध्यान करो कि वह कैसा
महान था, जिसको कुलपति अब्राहम ने
अपनी अच्छी से अच्छी लूट के माल
का दसवाँ अंश दिया। 5लेवी की सन्तान
में से जो पुरोहित का पद पाते हैं, उन्हें
आज्ञा मिली थी कि लोगों, अर्थात् अपने
भाइयों से, हालाँकि वे अब्राहम ही की
देह से जन्में थे, व्यवस्था (नियमशास्त्र)
के अनुसार दसवाँ भाग लें। 6लेकिन उस
ने, जो उनकी वंशावली में का भी न था,
अब्राहम से दसवाँ अंश लिया और जिसे
प्रतिज्ञाएँ मिली थीं उसे आशीष दी। 7इस
में संदेह नहीं, कि छोटा बड़े से आशीष
पाता है। 8यहाँ तो मरनहार मनुष्य दसवाँ
अंश लेते हैं, परन्तु वहाँ वही दसवाँ भाग
लेता है, जिसकी गवाही दी जाती है कि
वह जीवित है। 9तो हम यह भी कह सकते
हैं कि लेवी ने भी, जो दसवाँ लेता है,
अब्राहम में होकर दसवाँ हिस्सा दिया।
10क्योंकि जिस समय मलिकिसिदक ने
लेवी के पिता से मुलाकात की, उस समय
वह अपने पिता की देह में था।

11तब यदि लेवीय पुरोहित पद के द्वारा,
सिद्धता हो सकती है (जिसके सहारे से
लोगों को नियमशास्त्र मिला था) तो
फिर क्या ज़रूरत थी, कि दूसरा पुरोहित
मलिकिसिदक की तरह खड़ा हो, और
हारून की रीति का न कहलाए? 12क्योंकि
जब पुरोहितपन बदला गया है, तो व्यवस्था
का भी बदलना अवश्य है। 13क्योंकि
जिसके विषय में ये बातें कही जाती हैं कि
वह दूसरे गोत्र का है, जिस में से किसी
ने वेदी की सेवा नहीं की, 14तो साफ़ है,
कि हमारा प्रभु यहूदा के गोत्र में से उदय
हुआ है और इस गोत्र के विषय में मूसा ने

7:4-10 लेखक मलिकिसिदक की महानता दिखाता है - वह अब्राहम से बढ़कर था (4-8), लेवी से उत्तम (19,20)। इसका अर्थ हुआ, पद में ऊँचा। यीशु का पुरोहित का पद लेवी गोत्र के पुरोहितपन से बढ़कर है, यही दिखाने का उसका उद्देश्य है।

7:5 "लेवी"- इस्त्राएल का वह गोत्र है, जिसमें से पुराने नियम (वाचा) के सभी याजक (पुरोहित) आते हैं (गिनती 1:48-53; 3:5-10)।

"दसवाँ भाग"- लैव्य. 27:30; गिनती 18:24-28.

7:6 जिसकी वंशावली क्या है, इसका कुछ ज्ञान नहीं है - मलिकिसिदक।

7:8 "यहाँ"- जहाँ तक पुरोहितों का प्रश्न है वे लेवी के वंश से हैं। "वहाँ" - मलिकिसिदक के विषय में।

7:9-10 लेवी और उसके गोत्र के लोग जो अब्राहम से निकले, उन लोगों से भी मलिकिसिदक श्रेष्ठ था, वह सब से ऊँचे पद पर था। मलिकिसिदक को अब्राहम के द्वारा दसवां अंश दिये जाने के 120 वर्ष बाद लेवी उत्पन्न हुआ था।

7:11-19 इस अध्याय के शेष भाग, और (10:18 तक) लेखक यह दिखाता है कि पुरोहित के रूप में मसीह लेवी के गोत्र के मध्यस्थ से कितना अधिक बढ़कर है। यह भी कि पुराने समय का मध्यस्थपन पूर्ण रूप से अपूर्ण था। यदि इस पुराने मध्यस्थपन के द्वारा वह सब हासिल किया जा सकता था जो परमेश्वर चाहते थे, तो मलिकिसिदक के क्रम के अनुसार एक दूसरे मध्यस्थ की आवश्यकता नहीं पड़ती।

7:11 'सिद्धता' - 10:4. लेवी के गोत्र का पुरोहितपन मनुष्यों के गुनाह को मिटा न सका, मन को परिवर्तन कर न सका और स्वर्ग के लिये योग्य बना न सका।

7:12 व्यवस्था और पुराने नियम के पुरोहितपन एक दूसरे से बँधे हुए से हैं। एक की असफ़लता से सब कुछ असफल हो गया और पुरानी वाचा भी (अध्याय 8), और परमेश्वर ने इसे अलग हटाकर एक बेहतर और नयी सच्चाई को सामने रखा।

7:14 "यहूदा"- यीशु यहूदा गोत्र में से थे (मत्ती 1:1,3-6,16)। यदि यीशु चाहते तो पृथ्वी पर, उनके जीवन काल में मंदिर का प्रशासन न ही उन्हें पवित्र स्थान में प्रवेश करने देता, न वेदी के सामने सेवा का अवसर देता (8:4; गिनती 3:10)।

पुरोहितपन की कुछ चर्चा नहीं की।

15यह बात और भी स्पष्ट हो जाती है,
क्योंकि मलिकिसिदक के समान एक और
ऐसा पुरोहित उत्पन्न होने वाला था, 16जो
शारीरिक आज्ञा की व्यवस्था के अनुसार
नहीं, परन्तु अविनाशी जीवन की सामर्थ
के अनुसार ठहराया गया, तो हमारा दावा
और भी साफ़ तरीके से प्रगट हो गया।
17क्योंकि उसके विषय में यह गवाही दी
गई है, "कि तुम मलिकिसिदक की तरह
युगानुयुग पुरोहित हो।"

18क्योंकि पहली आज्ञा कमज़ोर और
निष्फल होने के कारण खत्म हो गई।
19(इसलिए कि यहूदी नियमों ने किसी बात
को सिद्धता प्रदान नहीं की) और उसके
स्थान पर एक ऐसी उत्तम आशा रखी गई
है, जिसके द्वारा हम परमेश्वर के समीप
जा सकते हैं।

20और इसलिए कि मसीह की नियुक्ति
बिना शपथ नहीं हुई, 21वे लोग तो बिना
शपथ पुरोहित ठहराए गए, परन्तु यह
शपथ के साथ उसकी ओर से नियुक्त
किया गया जिसने उनके बारे में कहा,
"कि प्रभु ने शपथ खाई, और वह उस से
फिर न पछताएँगे कि युगानुयुग पुरोहित हैं।
22यीशु एक उत्तम वाचा के जामिन ठहरे।

23बहुत से पुरोहित बनते आए थे, इसका
कारण यह था कि मौत उन्हें रहने नहीं देती

7:15-17 लेखक कहता है कि पुरोहितपन और व्यवस्था में एक परिवर्तन आया है - पद 12. यह स्पष्ट है कि यहूदा के गोत्र को परमेश्वर ने प्रधान पुरोहितपन के रूप में ठहराया, लेकिन इसका आधार नया था। पुराने नियम के पुरोहितपन उनकी वंशावली के आधार पर नहीं चुने गए थे। यह ज़रूरी था कि वे लेवी और हारून के वंशज हों। किंतु परमेश्वर ने मसीह को उनके न समाप्त होने वाले जीवन के कारण चुना, पद 16,24.

7:17 लेखक यह सिखा रहा है कि भजन 110:4 की भविष्यवाणी संपूर्ण पुरानी वाचा, पुरोहितपन और व्यवस्था को अलग हटाकर रख देने के सम्बंध में है।

7:18-20 'एक उत्तम आशा' - इसका सम्बन्ध मसीह के पुरोहितपन से है। हमारे प्रति उनके और उनके कार्य के द्वारा हम परमेश्वर के निकट आ सकते हैं - 10:19-22.

7:18-19 "पहली आज्ञा"- यह कि हारून और लेवी के वंश के पुरुष ही पुरोहित बन सकते हैं, यह विधान कमज़ोर और बेकार था। इसलिए संपूर्ण पुरानी वाचा का पुरोहितपन और पुरानी वाचा, जो इस पर निर्भर थी, लोगों को मुक्ति देने में कमज़ोर और बेकार थी। उन से कोई भी और कुछ भी सिद्ध नहीं हुआ - पद 11. इस से हमें एक महत्वपूर्ण सत्य सीखना चाहिये। इसलिए कि पुराने नियम के पुरोहितपन को जिस परमेश्वर ने स्थापित किया था, कमज़ोर और बेकार ठहरा, तो किसी भी धर्म में प्रचलित मानवीय पुरोहितपन और अधिक कमज़ोर और बेकार होगा। किंतु परमेश्वर ने ऐसा इसलिए किया ताकि हमें सिखाए कि यह कमज़ोर और बेकार है और यह कि हम देखें, कि मसीह ही बड़े पुरोहित हैं, उनकी हमें ज़रूरत है।

7:20-22 मसीह का पुरोहितपन लेवी के वंशज के पुरोहितपन से बेहतर है, इसका एक और कारण लेखक देता है। जब परमेश्वर ने मसीह को प्रधान पुरोहितपन ठहराया, उसने गम्भीरता से यह प्रतिज्ञा की कि वह पुरोहित ठहरेगा। लेवी के वंश के पुरोहितों के संदर्भ में ऐसी कोई बात नहीं थी (6:11)। वह यह चाहता था कि यहूदी और (हम) मसीह के पुरोहितपन के विषय में पूरी रीति से आश्वस्त हों। मनुष्य की मुक्ति के लिये पुरोहितपन एक नींव के समान है। यदि मलिकिसिदक के क्रम में मसीह एक पुरोहित नहीं है, तो कभी भी किसी व्यक्ति के लिये मुक्ति सम्भव नहीं है।

7:22 "एक उत्तम वाचा"- (पद 22) इस विषय में 8:6-13 में हम पाते हैं।

7:23-25 पुराने नियम के पुरोहितों से बढ़कर मसीह के उत्तम पुरोहित होने का यहाँ एक और कारण है। मसीह का पुरोहित होना स्थायी है, उनका नहीं। इस्त्राएल में प्रत्येक मुख्य पुरोहित पद को दूसरे के लिये छोड़ा जाता था। हारून और 70 ईस्वी. के बीच (जब मंदिर ढा दिया गया) अस्सी से अधिक मुख्य पुरोहित हुए थे। यीशु जीवित हैं और सदा-सदा के लिये अपने कार्य को जारी रखते हैं। परिणाम स्वरूप वह अपने लोगों को सदा के लिये बचाने के योग्य हैं।

थी। 24लेकिन यह युगानुयुग हैं, इस कारण
यीशु का पुरोहितपन अटल है। 25इसीलिए
जो उनके (यीशु के) द्वारा परमेश्वर के पास
आते हैं, वह उनका पूरा-पूरा उद्धार कर
सकते हैं, क्योंकि वह उनके लिए बिनती
करने के लिए हमेशा जीवित हैं।

26इसलिए ऐसा ही महायाजक या पुरोहित
हमारे योग्य था, जो पवित्र, निष्कपट और
निर्मल, और पापियों से अलग, और स्वर्ग
से भी ऊँचा किया गया हो, 27और उन
महापुरोहितों के समान उन्हें (यीशु को)
आवश्यक नहीं कि प्रतिदिन पहले अपने
अपराधों और फिर लोगों के अपराधों के
लिए बलिदान चढ़ाएँ, क्योंकि यीशु ने अपने
आप को बलिदान चढ़ाकर उसे एक ही
बार निपटा दिया। 28क्योंकि नियमशास्त्र
तो कमज़ोर मनुष्यों को महापुरोहित नियुक्त
करता है, परन्तु उस शपथ का वचन जो
नियमशास्त्र के बाद खाया गया, उस बेटे
को नियुक्त करता है जो युगानुयुग के लिए
सिद्ध किये गये हैं।

8 अब जो बातें हम कह रहे हैं, उन में से
सब से खास बात यह है, कि हमारा
ऐसा प्रधान पुरोहित है, जो स्वर्ग पर महा-
महिम के सिंहासन पर अधिकार के साथ

7:25 "पूरा-पूरा"- का अर्थ सदा के लिये भी हो सकता है। यीशु लोगों को पूर्ण रूप से और सदैव के लिये बचाते हैं।

'क्योंकि' - लोगों का मसीह के द्वारा पूरी तरह और सदा के लिये बचाया जाना लोगों के लिये उनकी मध्यस्थता से सम्बंधित है। देखें 9:24; 1 यूहन्ना 2:1; रोमि. 8:34. मसीह यीशु के विश्वासी, स्वर्ग के उनके जीवन के द्वारा मुक्ति की स्थिति में रखे जाते हैं - रोमि. 5:9-10. उनके लोगों के लिये उनकी प्रार्थनाएँ कैसी थीं, उसका उदाहरण यीशु ने तब दिया जब वह इस पृथ्वी पर थे - यूहन्ना 17; लूका 22:32. क्योंकि वह स्वर्ग में मध्यस्थी करने वाले किए गये सब से बड़े पुरोहित हैं, वह सभी विश्वासियों को महिमा में लाने के योग्य हैं (2:10)। परीक्षा में उनके सहायक हैं (2:18; 4:16)। अन्त तक विश्वास में बने रहने में सहायक हैं (3:6,14; 10:39)।

7:26-28 लेखक इस बात का कारण देता है कि मसीह का मध्यस्थ होना पुराने नियम के पुरोहितों से बेहतर क्यों है। मसीह स्वयं उन सभी पुरोहितों से बढ़कर हैं। वह हमारी वास्तविक ज़रूरत की पूर्ति करते हैं, जब कि दूसरे ऐसा नहीं कर सकते थे। वह पूर्णतया पवित्र हैं, किंतु वे पापी थे और उन्हें अपने पापों के लिये भी बलिदान चढ़ाना पड़ता था। अपने लोगों के लिये उन्हें बार-बार बलिदान चढ़ाना पड़ता था। अपने बलिदान के द्वारा यीशु ने सदा-सदा के लिये उनके पापों को हटा दिया। वे निर्बल लोग थे, और यीशु वह परमेश्वर हैं जो देह में आए।

"पापियों से अलग"- इस पृथ्वी पर वह गुनाहगारों के साथ रहे, भोजन किया, उन्हें स्वीकार किया, उनके मित्र कहलाए, उन्हें प्रेम दिखाया, उनके लिये गुनाह बन गए और मर गए - मत्ती 11:29; लूका 15:2; रोमि. 5:8; 2 कुरि. 5:21; 1 पतर. 3:18. किंतु चरित्र में वह उन से अलग थे। उनकी बुराई उन्हें अशुद्ध न कर सकी। वह निष्पाप थे।

"स्वर्ग से भी ऊँचा किया गया हो"- 1:3; 8:1. यह बात दूसरे महापुरोहितों के विषय में सही नहीं थी।

7:27 "बलिदान...निपटा दिया"- ऐसा किसी अन्य पुरोहित के बारे में सत्य नहीं था - पद 19.

7:28 "शपथ"- पद 20-22.

"नियमशास्त्र के बाद"- इसलिए कि व्यवस्था और पुराने नियम का पुरोहितपन कमज़ोर और असर रहित रहा, परमेश्वर ने दूसरे तरीके को स्थापित किया।

8:1-13 लेखक यह कहना जारी रखता है कि मसीह का पुरोहितपन, पुराने नियम के पुरोहितपन से बढ़कर है (सभी प्रकार के पुरोहितपन से भी)। यह बेहतर इसलिए है क्योंकि स्वर्ग में परमेश्वर के सच्चे स्थान में वह पुरोहित के रूप में सेवा करते हैं, किंतु पुराने नियम के सभी पुरोहित पृथ्वी के मन्दिर में सेवा करते थे जो स्वर्गिक स्थान का एक छोटा सा चित्र है - पद 1-5. यीशु का पुरोहितपन इसलिए भी श्रेष्ठ है क्योंकि यह पुरानी वाचा से बेहतर नयी वाचा से सम्बंधित है। पद 6-13.

8:1 1:3; 7:26 देखें.

है, 2और पवित्र स्थान और उस सच्चे तम्बू
का सेवक हुआ, जिसे किसी मनुष्य ने नहीं,
किन्तु प्रभु ने खड़ा किया था।

3क्योंकि हर एक प्रधान पुरोहित भेंट,
और बलिदान चढ़ाने के लिए ठहराया
जाता है, इस कारण ज़रूर है, कि उसके
पास भी कुछ चढ़ाने के लिए हो। 4यदि
वह पृथ्वी पर होता, तो कभी पुरोहित न
होता, इसलिए कि नियमशास्त्र के अनुसार
भेंट चढ़ाने वाले तो हैं, 5जो स्वर्ग में की
वस्तुओं के प्रतिरूप और प्रतिबिम्ब की
सेवा करते हैं, जैसे जब मूसा तम्बू बनाने
पर था, उसे यह चेतावनी मिली कि ध्यान
से जो नमूना उसे पहाड़ पर दिखाया गया
था, उसी के अनुसार सब कुछ बनाए।

6परन्तु यीशु को उसकी सेवकाई से
बढ़कर सेवा मिली, क्योंकि वह और भी
उत्तम वाचा के मध्यस्थ ठहरे, जो और
उत्तम प्रतिज्ञाओं के सहारे बान्धी गई है।
7क्योंकि यदि वह पहली वाचा बिना किसी
खोट और कमी की होती, तो दूसरी के
लिए अवसर न ढूँढा जाता। 8किन्तु वह
उन पर दोष लगाकर कहता है, "कि प्रभु
कहता है, देखो, वे दिन आते हैं, कि मैं
इस्राएल के घराने के साथ, और यहूदा के
घराने के साथ, नई वाचा बान्धूँगा। 9यह
उस वाचा के समान न होगी, जो मैंने उनके
पूर्वजों के साथ उस समय बान्धी थी, जब

8:2 "सच्चे तम्बू"- 9:1,11; प्रका. 7:15; 11:19; 13:6; 14:15; 15:5-6; 16:1. निर्गमन के अध्याय 25-30 में वर्णित पुराने नियम के तम्बू की तुलना में परमेश्वर का आत्मिक स्वर्गिक तम्बू (मन्दिर) झूठा नहीं था, किंतु यह "सत्य" - कहलाया। पुरानी वाचा का तम्बू स्वर्गिक तम्बू का एक चित्र है - पद 5; 9:23-24; 10:1. निर्ग. 25:9 देखें। (ऐसा प्रतीत होगा कि यह स्वर्गिक तम्बू पृथ्वी तक फैला है। केवल महापवित्र स्थान जो कि परमेश्वर की उपस्थिति है, स्वर्ग में है। पीतल की वेदी - निर्ग. 27:1-8, जहाँ मसीह बलिदान हुए थे, कलवरी का एक चित्र है। स्वर्गिक तम्बू का हौद इस पृथ्वी पर है जहाँ मसीही विश्वासी अपने आप को धोते हैं - निर्ग. 30:17-21 से तुलना करें। पवित्र स्थान पृथ्वी पर मसीह की कलीसिया (चर्च) है - तुलना करें निर्ग. 25:31-40; प्रका. 1:12-13; 2:1. निर्ग. 30 अध्याय के अन्त की टिप्पणी देखें।)

8:3 देखिए 5:1 ।

"उसके पास"- प्रभु यीशु। उन्हें स्वयं अपने आपको और अपने खून को देना था - 7:27; 9:14.

8:5 पद 2.

"उसे...मिली"- निर्ग. 25:8-9,40; 26:30; 27:8. परमेश्वर ने चार बार यूँ ही आज्ञा नहीं दी थी। वह चाहते थे कि पार्थिव तम्बू स्वर्गिक सत्यता सिखाए। वह नहीं चाहते थे कि उनके द्वारा दिये गये तम्बू के नमूने से भिन्न तम्बू बनाए जाने के द्वारा सच्चाई को तोड़ा मरोड़ा जाए।

8:6 लेखक मूसा द्वारा दी गई वाचा की तुलना यीशु द्वारा स्थापित वाचा से करता है। वह 10:18 तक यह करना जारी रखता है। निर्ग. 19:5-6,21-25 में पुरानी वाचा और यिर्म. 31:31-34; मत्ती 26:28 में नयी वाचा की टिप्पणी को देखें। 2 कुरि. 3:6-18 में पुरानी और नयी वाचा के बीच तुलना देखें। मनुष्यों के मुक्ति के लिये जो पुरानी वाचा न कर सकी वह नई वाचा कर सकी थी, क्योंकि नई वाचा पुरानी से बढ़कर है। एक वाचा, दो पक्षों के बीच की सहमति है या एक दूसरे से की गई प्रतिज्ञा। पुरानी वाचा में इस्त्राएलियों को परमेश्वर से यह प्रतिज्ञा मिली कि यदि वे उसकी व्यवस्था (नियम, निर्देश, आदि) का पालन करेंगे, तो उन्हें आशीष मिलेगी। नयी वाचा में परमेश्वर गुनाहों की माफ़ी, एक नया मन और परमेश्वर के ज्ञान की प्रतिज्ञा करते है जो अनन्त जीवन देता है। मनुष्य को मन बदलना है, विश्वास करना है।

"उत्तम प्रतिज्ञाओं"- पद 10-12. मसीह नयी वाचा के 'मध्यस्थ' है - 9:15; 12:24. यीशु के द्वारा परमेश्वर ने नयी वाचा को स्थापित किया और उन्हीं के द्वारा वह वाचा निरन्तर प्रभावकारी बनती है।

8:7 पुरानी वाचा की समस्या क्या थी? लोग पापी (भ्रष्ट) थे और परमेश्वर के नियमों का पालन नहीं करना चाहते थे। इसलिए, आशीष के विपरीत उनके जीवन में दण्ड आया - रोमि. 8:3; गल. 3:10-13.

8:8-12 यिर्म. 31:31-34 की टिप्पणी देखें।

मैं उनका हाथ पकड़कर उन्हें मिस्र देश से
निकाल लाया, क्योंकि वे मेरी वाचा में बने
नहीं रहे, और मैंने उनका ख्याल न रखा,
10फिर प्रभु कहते हैं कि "जो वाचा मैं उन
दिनों के बाद इस्राएल के घराने के साथ
बान्धूँगा, वह यह है, कि मैं अपने नियमों
को उनके मनों में डालूँगा, और उसे उनके
आत्मा पर लिखूँगा, और मैं उनका परमेश्वर
ठहरूँगा, और वे मेरे लोग ठहरेंगे। 11 और
हर एक अपने देश वासी को और अपने
भाई को यह शिक्षा न देगा कि तुम प्रभु को
पहचानो, क्योंकि छोटे से बड़े तक सब
मुझे जान लेंगे। 12क्योंकि मैं उनकी बुराई
के विषय में दयावन्त होऊँगा, और उनकी
बुराई को फिर याद न करूँगा।

13नई वाचा की स्थापना से उन्हों ने प्रथम
वाचा को रद्द कर दिया, और जो वस्तु
पुरानी और कमज़ोर हो जाती है उसका
मिट जाना ज़रूरी है।

9 उस पहली वाचा में भी सेवा के नियम
थे और ऐसा पवित्र स्थान जो इस दुनिया
का था। 2इस में एक तम्बू था। तम्बू में पहले
दीवट, और मेज़, और भेंट की रोटियाँ थीं।

8:9 "मेरी वाचा में बने नहीं रहे"- सारी समस्या तो यही थी। नियमशास्त्र की पुरानी वाचा लोगों को यह दिखा सकी कि उन्हें क्या करना चाहिये या कैसा बनना चाहिये, किंतु वह करने और वैसा बनने में उनकी सहायता न कर सकी। निर्गमन से लेकर मलाकी तक का पुराने नियम का इतिहास इस्त्राएल की विश्वासहीनता की कहानी है।

8:10 यहाँ परमेश्वर अपने लोगों को नया और भिन्न बनाने की प्रतिज्ञा करते हैं, एक ऐसा नया मन और हृदय देने की प्रतिज्ञा करते हैं जो उनकी आज्ञाओं को मानेगा (तुलना करें यूहन्ना 1:12-13; 3:3-8; रोमि. 8:3-4; 2 कुरि. 5:17; 1 पतर. 1:23)।

"मेरे लोग"- 2 कुरि. 6:16-18; 1 पतर. 2:9-10.

8:11 "सब मुझे जान लेंगे"- मत्ती 11:27; यूहन्ना 14:7,17; 17:3,6; 2 कुरि. 4:6 आदि। नयी वाचा परमेश्वर के ज्ञान की प्रतिज्ञा करती है और वह देती है जिसकी प्रतिज्ञा की गई है। यह मात्र सृष्टिकर्ता पिता के बारे में जानना नहीं है, किंतु सीधा अनुभव किया जाने वाला आत्मिक ज्ञान है। कोई और मार्ग, दर्शन शास्त्र, धार्मिक व्यवस्था यह ज्ञान नहीं दे सकती है। 1 कुरि. 1:19-21; 2:7-16; कुल. 2:8 की टिप्पणी देखें।

8:12 यशा. 44:22; मीका 7:19; लूका 24:47; प्रे.काम 13:38-39; रोमि. 4:6-8; 8:33 । 8-12 पदों में परमेश्वर के वचनों पर ध्यान दें - 'मैं ऐसा करूँगा' 'वैसा करूँगा'। पुरानी वाचा लोगों के शब्दों पर निर्भर थी, 'हम करेंगे' - निर्ग. 19:8; 24:7. इस कारणवश पुरानी वाचा कमज़ोर थी और असफल हो गई, और नयी वाचा सामर्थी है, एवं सफ़ल होगी।

8:13 "रद्द कर दिया"- उपयोग नहीं लाई जाने वाली, अस्वीकृत। मूसा द्वारा दिए गए नियमों का परमेश्वर की दृष्टि में अन्त आ पहुँचा था और इसके साथ ही पुराने पुरोहितपन का भी अन्त आ पहुँचा था।

"मिट जाना ज़रूरी है"- यरूशलेम में मंदिर था और पुरोहित अपने कामों में लगे हुए थे। यह सब 70 ईस्वी. में खतम हो गया। मत्ती 24:1-2 और लूका 19:41-44 देखें। उस समय से यरूशलेम में कोई यहूदी प्रार्थना भवन नहीं है और न ही यहूदी प्रबन्ध के अनुसार पुरोहितों का कार्य।

9:1 इस अध्याय में लेखक पुराने प्रबन्ध के पुरोहितपन और नए नियम के पुरोहितपन की तुलना करता है। वह पुराने तम्बू और वहाँ पुरोहित की सेवा के विषय में कहता है पद 1-7. वह यह भी बताता है कि सेवा और आराधना किस बात को दिखाती है - पद 8-10. फिर वह स्वर्गिक तम्बू में उसके प्रवेश और पुरोहित के रूप में यीशु के बलिदान की बात कहता है - पद 11-28.

"पवित्र स्थान"- निर्ग. 25:8 देखें।

9:2 निर्ग. 25:40 तम्बू और उसके निर्माण के बारे में है। स्थान से सम्बन्धित वस्तुओं के महत्व को देखें। लैव्य. और गिनती के कई भाग इसकी सेवा से सम्बन्धित हैं। इसको दिया गया स्थान यह दिखाता है कि परमेश्वर के सिखाने के कार्यक्रम में इसका क्या महत्व है। लगभग 40 अध्याय इस विषय पर दिये गये हैं। मनुष्य, पृथ्वी और स्वर्ग की सृष्टि के सम्बन्ध में मात्र दो अध्याय हैं (हालाँकि उत्पत्ति 1 और 2 के बाद बाईबल में सृष्टि के संदर्भ में कई बार आया है। निर्ग. 30 के अन्त में टिप्पणी देखें कि तम्बू को आत्मिक अभ्यास के लिये कैसे उपयोग किया जाए।

"दीवट"- निर्ग. 25:31-40.

"मेज़"- निर्ग. 25:23-30.

वह पवित्र स्थान कहलाता है। 3दूसरा परदे के पीछे वह तम्बू था, जो परम पवित्र-स्थान कहलाता है। 4उसमें सोने की धूपदानी, और चारों ओर से सोने से मढ़ा हुआ वाचा का बक्सा और इस में मन्ना से भरा हुआ सोने का मर्तबान और हारून की छड़ी, जिसमें फूल निकल आए थे और वाचा की पटियाँ थीं। 5बक्से के ऊपर दोनों तेज से भरे करूब थे, जो प्रायश्चित् के ढक्कन पर छाया किए हुए थे। इन का एक-एक करके वर्णन करने का अभी अवसर नहीं है।

6जब ये वस्तुएँ इस रीति से तैयार हो चुकीं, तब पहले तम्बू में तो पुरोहित कभी भी प्रवेश करके सेवा के काम निभाते लगे। 7परन्तु दूसरे में केवल प्रधान पुरोहित वर्ष भर में एक ही बार जाता था। वहाँ वह खून लेकर जाता था, जिसे वह अपने लिए और लोगों की भूल-चूक के लिए चढ़ाता था। 8इस से पवित्र आत्मा यही दिखाता है, कि जब तक पहला तम्बू और यह जो कुछ दर्शाता है खड़ा है, तब तक महा पवित्र स्थान में प्रवेश नहीं कर सकता। 9और यह तम्बू तो वर्तमान समय के लिए एक दृष्टांत है जिसमें ऐसी भेंट और बलिदान चढ़ाए जाते हैं, जिनसे आराधना करने वालों के विवेक शुद्ध नहीं हो सकते। 10इसलिए कि वे केवल खाने पीने की वस्तुओं, और भांति-भांति के स्नान विधि के आधार पर शारीरिक नियम

9:3 "दूसरा परदे"- निर्ग. 26:31-35. पहला पर्दा पवित्र स्थान को बाहरी आँगन से अलग करता है।
9:4 "धूपदानी"- निर्ग. 30:1-10.
"बक्सा"- निर्ग. 25:10-15.
"मन्ना"- निर्ग. 16:14-16,33.
"हारून की छड़"- गिनती 17:8-11.
"पटियाँ"- गिनती 25:16.
9:5 "तेज से भरे"- निर्ग. 40:34-35.
"करूब"- निर्ग. 25:17-22.
9:6 "पहले तम्बू"- का अर्थ है पवित्र स्थान - पद 2.
"सेवा"- निर्ग. 27:21; 30:7-8; लैव्य. 24:5-9.
9:7 "दूसरे"- से अर्थ है अति पवित्र स्थान - पद 3. लैव्य. 16 अध्याय पुरोहित के वर्ष में एक दिन के कार्य को बताता है। इन दोनों अध्यायों को भली-भाँति समझ लेने के लिये उनका एक साथ अध्ययन किया जाना चाहिए।

"भूल-चूक"- लेखक यहूदी विद्वान के न जानने के कारण होने वाले या बिना जाने बूझे किये पापों के बारे में नहीं कहता है, किंतु ऐसे गुनाह जो परमेश्वर को न जानने (या उसकी व्यक्तिगत पहचान न होने) के कारण होते हैं, कहता है (तुलना करें इफ़ि. 4:17-19)। इस्त्राएल में प्रायश्चित के दिन लोगों के सभी प्रकार के पाप, अशुद्धता, दुष्टता, विद्रोह की क्षमा के लिये इन्तज़ाम था - लैव्य. 16:21-22,30,34. (ध्यान दें इन शब्दों पर 'उनके सभी पाप')। लैव्य. 26 में पुरोहित का कार्य गलतियों या बिना जान बूझकर किये गये गुनाहों तक सीमित नहीं था।
9:8 "पवित्र आत्मा"- 3:7 (यूहन्ना 14:16-17)। इस से हमें लेखक के इस विश्वास को देखते हैं कि तम्बू और प्रधान पुरोहित के काम के बारे में पवित्र आत्मा की प्रेरणा की भूमिका थी (2 तीमु. 3:16-17)। उसने इस्त्राएल में प्रायश्चित के दिन से क्या सिखाया? यह कि परमेश्वर की मौजूदगी में पहुँचने का मार्ग अब तक ज़ाहिर नहीं किया गया है। जब तक तम्बू खड़ा था तब तक प्रधान पुरोहित के अलावा और कोई इस्राएली महापवित्र स्थान में प्रवेश नहीं कर सकता था। महा पवित्र स्थान तम्बू का वह स्थान था जहाँ परमेश्वर की उपस्थिति थी। तम्बू यह सिखाता था कि परमेश्वर की उपस्थिति में जाने के लिये रुकावटें क्या हैं, न कि कैसे उसमें प्रवेश किया जाए (नोट निर्ग. 27:9-19)।

इसका मतलब यह नहीं है कि इस्त्राएल में कोई व्यक्ति, तम्बू को छोड़कर किसी और स्थान में परमेश्वर की मौजूदगी में प्रवेश न कर सकता था। नहीं ऐसा नहीं है, तुलना करें उत्पत्ति 5:24; 6:9; 27:7; निर्ग. 33:14; भजन 51:11; 89:15. किंतु उस युग में परमेश्वर ने यह किस प्रकार संभव है, प्रगट नहीं किया था। अब परमेश्वर इसे प्रगट किया है। गुनाहगार लोग पूर्ण पवित्र परमेश्वर की उपस्थिति में इसलिए आ सकते हैं क्योंकि मसीह ने उनके पापों को उठाने के लिये बलिदान किया था - 10:19-20; 1 पतर. 3:18.
9:9 पुराने प्रबन्ध के बलिदान गुनाह के एहसास और सजा को हटाने के लिये पर्याप्त नहीं थे - 10:2. यदि विवेक शुद्ध नहीं है तो 'विश्वास के पूरे आश्वासन' (10:22) से परमेश्वर की उपस्थिति में जाना नहीं हो सकता है। विवेक पर प्रे.काम 23:1 में टिप्पणी देखें।
9:10 भोजन आदि के सम्बन्ध में पुराने नियम

हैं, जो नए क्रम (नई वाचा) के आने तक थे।
11 लेकिन मसीह आने वाली अच्छी-
अच्छी वस्तुओं का प्रधान पुरोहित होकर
आये, और उन्हों ने और भी बड़े और सिद्ध
तम्बू से होकर जो हाथ का बनाया हुआ
नहीं, अर्थात् इस दुनिया का नहीं, 12 और
न ही बकरों और बछड़ों के खून से, किन्तु
अपने ही खून के द्वारा एक ही बार हमारे
लिए अनन्त आज़ादी प्राप्त करके पवित्र
स्थान में प्रवेश किया।
13 क्योंकि जब बकरों और बैलों का
खून और बछड़े की राख अशुद्ध लोगों पर
छिड़के जाने से बाहरी रूप से शुद्ध किए
जाते हैं, 14 तो मसीह का खून जिसने अपने
आप को सनातन आत्मा के द्वारा परमेश्वर
के सामने निष्कलंक चढ़ाया, तुम्हारे विवेक

(लैव्य. 11; निर्ग. 6:15,17; 28:7-8; निर्ग. 30:17-21; लैव्य. 16:24) में आत्मिक सत्य के प्रकार और छाया थी। स्वयं में उनके कोई महत्व नहीं था, लेकिन बाहरी रीति विधियाँ थीं। वह सब परमेश्वर ने सदा के लिये उन्हें नहीं दिया था - लेकिन 'सुधार के समय' तक के लिये। यूनानी शब्द 'सुधार' का अनुवाद का अर्थ है, सीधा किया जाना। पुराने नियम की गतिविधियाँ तब तक के लिये थीं, जब तक परमेश्वर एक नए प्रबंध (मसीह द्वारा स्थापित नई वाचा) का परिचय नहीं करते)।

9:11-28 लेखक प्रभु यीशु के प्रधान पुरोहित होने के विषय को ले लेता है और दिखाता है कि जो कुछ पुरानी वाचा के प्रधान पुरोहित की गतिविधियों द्वारा नहीं किया जा सका वह सब किस तरह से मसीह याजक के द्वारा किया गया है।

9:11 8:2,5 देखें.

9:12 "बकरों और बछड़ों"- लैव्य. 16:14-15,27.

"अपने ही खून के"- वचन 11-28 में, खून शब्द का 11 बार उपयोग किया गया है। बलिदान और मृत्यु शब्दों का कई बार उपयोग किया गया है और ये शब्द खून की ओर इशारा करते हैं। लेखक यह दर्शाता है कि मसीह का खून (बलिदान और मृत्यु) इतना महत्वपूर्ण है क्योंकि वह विश्वासियों के विवेक को शुद्ध करता है (पद 14)।

यह उनके छुटकारे के लिये मुक्ति का दाम था (पद 16)। यह क्षमा का मात्र एक ही आधार था (पद 22)।

वह स्वर्गिक वस्तुओं को शुद्ध करता था (पद 23)।

और वह पाप को मिटाता था (पद 26 और 28)।

"आज़ादी"- पद 15. भजन 78:35; मत्ती 20:28 की टिप्पणी देखें। यह देखें कि जो छुटकारा मसीह ने विश्वासियों के लिये हासिल किया है, वह सनातन है। तुलना करें 5:9; 10:14. इसका परिणाम स्थायी है। यीशु ने उन्हें अपने खून की कीमत से खरीदा है और वे हमेशा के लिये उसके हैं - 1 पतर. 1:18-19; 1 कुरि. 6:20; यूहन्ना 6:37; 17:6,11,12.

9:13 "बछड़े" - गिनती अध्याय 19. अपराध क्षमा या मन को पाप से शुद्ध कराने के सम्बन्ध में इस प्रकार से कुछ सम्बन्ध नहीं था और न ही किसी अन्य बलिदान का।

9:14 "निष्कलंक"- 4:15; 7:26; 1 पतर. 1:19; 2:22; 3:18.

"विवेक"- विवेक मनुष्य का वह भाग है जो उसके कार्यों को उचित अनुचित है, अच्छा बुरा ठहराता है। देखें, प्रे.काम 23:1; 24:16; रोमि. 2:15; 9:1; 1 कुरि. 8:7; 10:28-29; 2 कुरि. 1:12; 1 तीमु. 1:5; 3:9; 4:2; तीतुस 1:15. यदि हमारा विवेक पाप से अशुद्ध हो चुका है और अपराध चेतावनी है, तो इसे शुद्धता की आवश्यकता है। यह जानना आवश्यक है, कि गुनाह और अपराध हटा दिये गये हैं और अब कोई कारण नहीं रहा है कि परमेश्वर का न्याय और सज़ा आए।

यही मसीह का रक्त करता है। मसीह के बलिदान के विषय में हमारा ज्ञान और यह विश्वास कि उनका खून हमारे पापों को हटाने के लिये बहाया गया, हमारे विवेक को सन्तुष्ट करता है। मसीह का खून हमें इस ज्ञान से शुद्ध नहीं करता कि हम पापी हैं। 1 यूहन्ना 1:8; 1 तीमु. 1:5 आदि। किंतु आश्वासन देता है कि परमेश्वर का क्रोध हम से हटा दिया गया है। परमेश्वर मसीह के बलिदान के सत्य का जो हमारे मनों में है, हमारे विवेक को सिखाने और शुद्ध करने के लिये उपयोग करते हैं। प्रे.काम 15:9 से तुलना करें। एक जगाया हुआ विवेक जो दोषी ठहराता है और हमारे विरोध में, आक्रोश दिखाता है बड़ा कष्टदायी हो सकता है। वह शान्ति और सुकून कैसे पा सकता है। केवल मसीह के बलिदान में। जब यह होता है तब हम आज़ादी और आनन्द से 'जीवित परमेश्वर की सेवा' कर सकते हैं। इस पद में त्रिएकत्व पर ध्यान करें - बेटे ने पवित्र आत्मा के द्वारा पिता के प्रति अपने आपको चढ़ा दिया। त्रिएकत्व पर इन पदों पर टिप्पणी देखें मत्ती 3:16-17.

को मरे हुए कामों से और ज़्यादा क्यों न शुद्ध करेगा, ताकि हम जीवित परमेश्वर की सेवा करें?

15इसी कारण वह नई वाचा के मध्यस्थ हैं, ताकि उस मौत के द्वारा जो पहली वाचा के समय के अपराधों से आज़ादी पाने के लिए हुई है, बुलाए हुए लोग वायदे के अनुसार अनन्त मीरास को प्राप्त करें।

16क्योंकि जहाँ वसीयतनामा तैयार किया गया वहाँ वसीयतनामा बनाने वाले की मौत को समझ लेना भी ज़रूरी है। 17क्योंकि ऐसा वसीयतनामा मरने पर ही अमल में आता है, और जब तक वसीयतनामा बनाने वाला ज़िन्दा रहता है, तब तक वह काम का नहीं होता।

18इसीलिए पहली वाचा भी बिना खून के नहीं बान्धी गई, 19क्योंकि जब मूसा सब लोगों को नियमशास्त्र की हर एक आज्ञा सुना चुका, तो उसने बछड़ों और बकरों का खून लेकर, पानी और लाल ऊन, और जूफ़ा के साथ, उस किताब पर और सब लोगों पर छिड़क दिया, 20और कहा, "कि यह उस वाचा का खून है, जिसकी आज्ञा परमेश्वर ने तुम्हारे लिए दी है।"

21और इसी तरह से उसने तम्बू और सेवा के सारे सामान पर खून छिड़का। 22नियमशास्त्र के अनुसार प्रायः सब वस्तुएँ खून के द्वारा शुद्ध की जाती हैं। बिना खून बहाए गुनाहों की माफ़ी नहीं है। 23इसलिए ज़रूरी है कि स्वर्ग की चीज़ों के प्रतिरूप इन बलिदानों द्वारा शुद्ध किए जाएँ, परन्तु स्वर्ग में की वस्तुएँ, इन से भी उत्तम बलिदानों के द्वारा शुद्ध की जातीं।

24क्योंकि मसीह ने उस हाथ के बनाए हुए पवित्र स्थान में जो सच्चे पवित्र स्थान

9:15 "इसी कारण"- यह सत्य कि यीशु का रक्त विवेक को स्वच्छ करता है। पुराने प्रबन्ध के बलिदान यह नहीं कर सकते थे - पद 9; 10:2.

"नई वाचा के मध्यस्थ"- 8:6-13. यह वाचा यीशु के बहाए हुए खून के ऊपर आधारित है, सम्मिलित है, जिन्होंने उसके पृथ्वी पर आने से पहले पाप किया - मत्ती 26:28.

"पहली वाचा"- इस संसार के सभी युगों के लोगों के अपराधों के लिये मसीह मरे। इस में वे लोग भी आते हैं, जिन्होंने उसके पृथ्वी पर आने से पहले गुनाह किया था, तुलना करें रोमि. 3:25.

"आज़ादी"- "किसी के बदले में मुक्तिदाम" - पद 12; मत्ती 20:28.

"मीरास"- 1:2,14.

9:16 "वसीयतनामा"- यूनानी का "वाचा" शब्द और "वसीयतनामा" - एक ही है। हिन्दी भाषा में दोनों के लिये पूर्ण रूप से दूसरे शब्दों का उपयोग किया जाता है। पद 15 में लेखक 'मीरास' के विषय में कहता है जो विश्वासियों को प्राप्त होती है। अब वह कहता है कि जब तक वसीयतनामा तैयार करने वाले की मृत्यु नहीं हो जाती तब तक विरासत या मीरास नहीं मिल सकती।

9:18-20 निर्ग. 24:1-8 देखें। लेखक पुरानी वाचा (निर्ग. 19:5) के विषय में कहता है कि वह एक वसीयत नामा है। इस वाचा को परमेश्वर ने बनाया था और इस्त्राएल को मीरास की प्रतिज्ञा दी (व्यव. 12:8-10; यहोशू 1:6; 23:4; भजन 105:11)। परन्तु इस वाचा को पूरा करने के लिये परमेश्वर नहीं मरे, परन्तु उन्हों ने नियुक्त किया कि पशु मारे जाएँ। जानवरों की मृत्यु परमेश्वर की वाचा को कैसे पूरी कर सकती है? पशुओं का बलिदान मसीह की मृत्यु की तस्वीर थी। मूसा ने लोगों की देह पर खून को छिड़का (निर्ग. 24:8), इस प्रकार मसीह ने अपना खून (आत्मिक रीति से विश्वासियों के मन और विवेक पर छिड़का है, 14; 10:22)

9:22 "प्रायः सब"- सामान्यतया पशुओं का खून प्रायश्चित के लिये ज़रूरी था। परन्तु इसके कुछ अपवाद थे (लैव्य. 5:11-13; गिनती 31:22-24)।

"बिना...नहीं"- लैव्य. 17:11. परमेश्वर केवल मसीह द्वारा बहाए गए खून के आधार पर मनुष्यों को माफ़ी प्रदान करते है - मत्ती 26:28; इफ़ि. 1:7.

9:23 "स्वर्ग की चीजें"- वे आत्मिक सच्चाइयाँ जिनका सम्बन्ध विश्वासियों के वर्तमान पवित्रीकरण, आराधना, और सेवा से है। 'उत्तम बलिदान' स्वयं मसीह और उनका खून।

"चीज़ों के प्रतिरूप"- 8:5; 10:1.

9:24 "सच्चे"- 8:2 की टिप्पणी देखें।

का नमूना है, प्रवेश नहीं किया, पर स्वर्ग ही में प्रवेश किया, ताकि हमारे लिए अब परमेश्वर के सामने मौजूद हों। 25यह नहीं कि वह अपने आप को बार-बार चढ़ाएँ, जैसा कि प्रधान पुरोहित प्रति वर्ष कुर्बानियों का खून लिए पवित्र स्थान में प्रवेश किया करता था, 26नहीं तो दुनिया की शुरूआत से लेकर यीशु को बार-बार दुख उठाना पड़ता, लेकिन अब युग के आखिर में वह एक बार प्रगट हुए हैं, ताकि अपने ही बलिदान के द्वारा गुनाह की सज़ा को उठा लें।

27जैसे मनुष्यों के लिए एक बार मरना और उसके बाद इन्साफ़ का होना ठहराया गया है, 28वैसे ही मसीह भी बहुतों के गुनाहों की सज़ा को उठा लेने के लिए एक बार बलिदान हुए। जो लोग उनका इन्तज़ार करते हैं, उन्हें सज़ा-मुक्ति के बाद की (भविष्य की) आशीषों को देने के लिये वह बादलों में दिखायी देंगे।

10 क्योंकि नियमशास्त्र जिसमें आने वाली अच्छी चीज़ों की छाया है, लेकिन उनकी असलियत नहीं, इसलिए उन एक ही तरह के बलिदानों के द्वारा, जो हर साल चढ़ाए जाते हैं, भक्ति करने वालों को बिल्कुल पूरी शुद्धता नहीं दे सकते, 2यदि

"नमूना"- स्वर्ग 'सच्चा' महा पवित्र स्थान है। तम्बू और मंदिर दोनों के पवित्र स्थान उसी नमूने पर बनाए गये थे।

"हमारे लिए"- 7:25; 1 तीमु. 2:5; 1 यूहन्ना 2:1.

9:25 लैव्य. 16:14-15,34.

9:26 "एक बार प्रगट हुए"- 12:28; 10:10,14. दो हज़ार साल पहले मसीह द्वारा एक ही बार किया गया बलिदान मनुष्यों के पापों की क्षमा के लिये ज़रूरी था। यीशु ने स्वयं का बलिदान देकर दुनियाँ के अपराधों को उठा लिया (यूहन्ना 1:29)। इस बलिदान का फिर दोहराया जाना अनावश्यक और अविचारणीय है।

9:27 "एक बार मरना"- बाईबल यह नहीं बताती कि लोग पृथ्वी पर बार-बार जन्म लेते और बार-बार मरते हैं। केवल एक ही शारीरिक मौत है और एक ही शारीरिक जन्म। अय्यूब 11:12; यूहन्ना 9:3 में पुर्नजन्म के विषय में देखें। पुनर्जन्म के द्वारा व्यक्ति उद्धार या मुक्ति पा सकता है यह कल्पना सरासर अनावश्यक और गलत है। मसीह ने अपने बलिदान के द्वारा हम सभों के पापों को उठा लिया। और उन पर विश्वास करने के द्वारा हम अपराधों की क्षमा, नया जन्म और मुक्ति पा सकते हैं।

"इन्साफ़ का होना"- मत्ती 10:15; प्रे.काम 17:31. उस एक मृत्यु के द्वारा मरने के बाद, हम इस दुनिया में दोबारा जन्म नहीं लेते, परन्तु उसके बाद न्याय होगा।

9:28 "बहुतों के गुनाह"- यशा. 53:11; मत्ती 26:28. तुलना करें यूहन्ना 1:29; 2 कुरि. 5:14; यूहन्ना 3:16; 1 यूहन्ना 2:2.

"जो लोग उनका इन्तज़ार करते हैं"- मत्ती 24:42-51. इसका अर्थ है आशा के साथ उनके आने की बाट जोहना। तुलना करें तीतुस 2:13. प्रायश्चित के दिन (लैव्य. अध्याय 16) महापुरोहित के महापवित्र स्थान में प्रवेश करने के बाद लोग उसके वापस आने की बाहर प्रतीक्षा करते थे। यीशु ने महापवित्र स्थान में, स्वर्ग में प्रवेश किया है। बाहर पृथ्वी पर लोग उनके आने की बाट जोह रहे हैं। यह इस बात की ओर इशारा करता है कि मसीह के पहले और दूसरे आगमन के बीच का समय एक बड़े प्रायश्चित के दिन के समान है।

"भविष्य की"- यूहन्ना 14:3. इस पद में मुक्ति का अर्थ है, विश्वासियों की अन्तिम मुक्ति जिसे भविष्य की प्रक्रिया के रूप में देखा गया है। यह ऐसी मीरास के समान है जो यहाँ के बाद मिलने वाली है - 1:14; रोमि. 8:23-24; 1 पतर. 1:4-5. वे पाप की उपस्थिति, उसके परिणाम से बचाए जाएँगे और आत्मा, प्राण और देह का उद्धार प्राप्त करेंगे।

10:1 "छाया"- 8:2,5; 9:23-24. व्यवस्था, तम्बू भेंट और नियम "आने वाली अच्छी बातों के" मात्र प्रतीक, और चित्र थे - मसीहियों के सनातन उद्धार के।

"पूरी शुद्धता नहीं दे सकते"- पद 14; 2:10; 5:9; 11:40; 12:23. पशुओं का बलिदान किसी को परमेश्वर की उपस्थिति के लिये योग्य नहीं बना सकता (7:11,19)। पशुओं के बलिदान के महत्व के लिये देखें लैव्य. 1:2.

10:2-3 9:9 देखें.

ऐसा हो सकता तो उनका चढ़ाना बन्द क्यों हो जाता? भक्ति (सेवा) करने वाले एक ही बार शुद्ध हो जाते, तो फिर उनका विवेक उन्हें दोषी न ठहराता। 3लेकिन उनके द्वारा हर साल पापों का स्मरण हुआ करता है। 4क्योंकि असंभव है, कि बैलों और बकरों का खून पापों को दूर करे।

5इसी कारण वह जगत में आते समय कहते हैं, "बलिदान और भेंट आप ने न चाही, लेकिन मेरे लिए एक देह तैयार की। 6होम-बलियों और पाप-बलियों से आप खुश नहीं हुए। 7तब मैंने कहा, 'देखो, मैं आ गया हूँ, (पवित्र वचन में मेरे विषय में लिखा हुआ है) ताकि हे परमेश्वर, आपकी इच्छा पूरी करूँ।'

8वह कहते हैं, कि न आप ने बलिदान और भेंट और होम-बलियों और पाप-बलियों को चाहा, और न उन से खुश हुए, यद्यपि ये बलिदान तो नियमशास्त्र के अनुसार चढ़ाए

"विवेक उन्हें दोषी न ठहराता"- या सम्भवतः 'पाप की चेतावनी'। लेखक का अर्थ है कि लोगों ने यदि वास्तव में सोचा था कि उनके गुनाह पूरी तरह से उनके बलिदानों के द्वारा हटा लिये गये थे, तो उनका विवेक शुद्ध हो गया होगा। उन्हों ने यह भी महसूस किया होता कि उनके मन को अब उन्हें दोषी ठहराने की आवश्यकता नहीं। देखें 9:14.

10:4 "असंभव"- यह असंभव क्यों था? पशु मनुष्यों का स्थान नहीं ले सकते थे और न ही उनके स्थान पर मर सकते थे। वे मात्र एक प्रतीक थे। उनके (पशुओं के) अज्ञानी होने के कारण, और अनिच्छा से वध किये जाने के कारण, वह दण्ड जो मनुष्य के ऊपर उसके अपराध के कारण था, उसे वे उठा नहीं सकते थे। यह दण्ड आत्मिक मृत्यु, और परमेश्वर से अलगाव था। देखें मत्ती 25:41; 2 थिस्स. 1:9; प्रका. 20:14.

मनुष्य भी दूसरे मनुष्यों के लिये पाप बलि नहीं बन सकता था। हर मनुष्य दोषी है और वह केवल अपने ही गुनाहों के लिये मरेगा, किसी और के पापों के लिये नहीं। यदि कोई निष्पाप व्यक्ति होता, और यदि वह पापों के लिये बलिदान हो सकता, तो वह किसी और एक ही व्यक्ति के बदले में मर सकता, सारी मानवजाति के लिये नहीं। फिर परमेश्वर को भी इस बात के लिये सहमत होना पड़ता, और वह सहमत नहीं हुए। प्रायश्चित के विषय में और दूसरे के ऐवज़ (बदले) में मरने के लिये हमें निम्नलिखित बातों को समझना होगा।

जो भी बुरा हम करते हैं, वह परमेश्वर के विरोध में करते हैं - भजन 51:4. जो बुराई मनुष्य दूसरे लोगों के, या स्वयं के, या संसार के विरोध में करता है, वह बुराई वास्तव में परमेश्वर के विरोध में ही है, क्योंकि सभी मनुष्य और सारी सृष्टि उनकी संपत्ति है। यदि परमेश्वर मनुष्यों को क्षमा करना चाहें, तो उन्हें उनके पापों के परिणाम को सहने के लिये तैयार होना होगा। और जो कुछ किया है उसके लिये कीमत चुकानी होगी। गुनाह, दण्ड या बलिदान के लिये पुकारता है (देखें गिनती 31:1-3; व्यव. 32:41,43; यशा. 34:8; 47:3; रोमि. 12:19)। कौन इस सजा को सहेगा या सह सकता है? उनके तोड़े हुए नियमों के कारण परमेश्वर को जिस न्यायोचित सज़ा की माँग है, वह कौन सह सकता है? क्या मनुष्य के लिये बलि किया गया पशु इस सज़ा को सह सकता है? यह असम्भव है, तो कौन कर सकता है? अपराधी लोग या परमेश्वर स्वयं? केवल वही एक निष्पाप मनुष्य के रूप में आकर लोगों के अपराधों के लिये स्वयं को बलिदान के रूप में देकर उनकी सज़ा को सह सकते और उनकी सज़ा को ले सकते थे। यही यीशु ने किया।

प्रायश्चित और क्षमा दुख पर आधारित हैं, बलि किये हुए पशु के दुख पर नहीं। हमारे अपने दुखों पर नहीं किंतु परमेश्वर के।

10:5-7 भजन 40:6-8 की टिप्पणी देखें। ख्रीष्ट पूर्व तीसरी शताब्दी का पुराना नियम जो यूनानी भाषा में अनुवाद किया गया, उस से यह पद उद्धृत किया गया है। यहाँ लेखक पुराने नियम से यह सिखा रहा है कि पशु बलिदान के सम्बंध में उसकी शिक्षा सही है।

"बलिदान और भेंट"- परमेश्वर पशु बलि नहीं चाहते थे किंतु उन से बेहतर पद 7 का "मैं" मसीह की ओर इशारा करता है। "आपकी इच्छा, हे पिता", का यहाँ अर्थ है कि मनुष्यों के गुनाहों के लिये मात्र मसीह ही को बलिदान होना था।

10:7 मत्ती 26:39 आदि.

10:8 "नियमशास्त्र के अनुसार चढ़ाये जाते थे"- परमेश्वर ने उन्हें इसलिए नियुक्त किया ताकि वे मसीह के बलिदान का एक प्रतीक ठहरें। किंतु

जाते थे। 9वह यह भी कहते हैं, "देखिए, मैं आ गया हूँ, ताकि आपकी इच्छा पूरी करूँ," वह पहले को हटा देते हैं, ताकि दूसरे को उस की जगह लाया जा सके।

10उसी इच्छा से हम यीशु मसीह की देह के एक ही बार बलिदान चढ़ाए जाने के द्वारा पवित्र किए गए हैं।

11और हर एक पुरोहित खड़े होकर हर दिन सेवा करता है, और एक ही प्रकार के बलिदान को जो गुनाहों को कभी भी दूर नहीं कर सकते, बार-बार चढ़ाता है। 12परन्तु यह तो पापों के बदले एक ही बलिदान सर्वदा के लिए चढ़ाकर परमेश्वर के दाहिने जा बैठे, 13और उसी समय से वह इसका इन्तज़ार कर रहे हैं कि उनके दुश्मन उनके पाँवों के नीचे की चौकी बनें।

14क्योंकि यीशु ने एक ही बलिदान के

उन्हें यह मालूम था कि उनकी अपेक्षा को वे पूर्ण नहीं कर सकते थे।

10:9 "ताक...सके"- उनका मतलब पुरानी और नयी वाचा से था। उसने पहली को अलग कर दिया है - 8:7,13.

10:10 "पवित्र किए गए हैं"- परमेश्वर की इच्छा को पूरी तरह से पूरा करने और विश्वासियों के लिये मरने के द्वारा, मसीह ने उन्हें पवित्र बना दिया है। इसका अर्थ यह हुआ कि यीशु ने उन्हें अलग कर दिया है और उन्हें परमेश्वर के लोग होने के लिये समर्पित कर दिया है - 1 पतर. 2:9. पवित्र किए जाने के सम्बन्ध में लैव्य. 20:7 और यूहन्ना 17:17-19 की टिप्पणी देखें। पद 10 में यहाँ शब्द मसीहियों के पवित्रता के जीवन के विषय में नहीं बताता है। वह हमें 12:10-16 में मिलता है। विश्वासी मसीह में अभी पवित्र हैं, वे पवित्र बनाए जा रहे हैं (12:10)। अन्त में वे पूरी तरह से पवित्र बना दिए जाएँगे (कुल. 1:22)। यह मात्र कुछ विश्वासियों के विषय में नहीं, लेकिन सभी विश्वासियों के सम्बन्ध में सत्य है।

10:11 "खड़े होकर"- तम्बू या मंदिर में कोई कुर्सी नहीं थी। यह पद शायद यह दिखाता है कि वहाँ याजकों का कार्य कभी समाप्त नहीं होता है।

"गुनाहों को कभी दूर नहीं कर सकते"- पद 4.

"बार-बार"- पद 10,14; 9:12,25-28. यीशु का एक बलिदान सदा के लिये है, क्योंकि गुनाहों के लिये अब और कोई बलिदान शेष नहीं है।

10:12 "दाहिने"- लेखक हमें वापस वहीं लाता है जहाँ उसने आरम्भ किया था - 1:3.

"जा बैठे"- यह संकेत है कि उनका बलि चढ़ाए जाने का कार्य सदा के लिये है। देखें यूहन्ना 19:30. किसी भी पुरोहित द्वारा अब किया गया कार्य किसी भी प्रकार से किसी व्यक्ति के उद्धार के लिये आवश्यक नहीं है।

10:13 "चौकी"- (पटरा)- 1:13; भजन 110:1. स्वर्गिक पिता ने अभी तक मसीह के दुश्मनों को पैरों की चौकी (पटरा) नहीं बनाया है। मसीह अभी तक इस प्रतीक्षा में हैं। ऐसा होगा - प्रका. 11:15-18.

10:14 बहुत वर्षों तक पुरोहितों द्वारा प्रति वर्ष बड़ी संख्या में पशु चढ़ाए जाते थे, किंतु उनके द्वारा एक गुनाह भी नहीं मिटाया जा सकता था। एक व्यक्ति भी 'पवित्र' नहीं किया गया, किंतु मसीह के एक बलिदान से सदा-सदा के लिये सभी विश्वासी उन में शुद्ध बनाए गए। इसका अर्थ क्या है? यूनानी शब्द का एक अर्थ है "पूरा किया जाना"। इसका अर्थ यह होगा कि उनके लोगों के लिये मसीह का बलिदान बिना किसी कमी उन्हें पूरी तरह से बचाता है (तुलना करें 7:25)।

परमेश्वर के सामने खड़े रहने के लिये उनका मात्र एक बलिदान ही आधार है। उसके द्वारा प्रत्येक रुकावट हटा दी गयी है और सिद्ध मेलमिलाप किया जा चुका है।

उनके अपराधों को ख्रीष्ट ने पूरी तरह से ले लिया है - उनके विरोध में अब एक भी नहीं रहा (रोमि. 4:8; 8:33)।

यीशु ने उन्हें परमेश्वर के साथ एक सिद्ध सम्बन्ध दिया है (रोमि. 8:1,15; 2 कुरि. 5:18-19)।

यीशु ने उनके विवेक को पूर्ण रीति से शुद्ध कर दिया है (9:14)। यीशु ने परमेश्वर की उपस्थिति में उन्हें अभी प्रवेश करने और सदा तक रहने के लिये तैयार किया है (पद 22; रोमि. 5:2; इफ़ि. 2:18)।

23 पदों तक यह स्पष्ट है कि शुद्ध किये जाने का मतलब यही है। इस पृथ्वी पर कोई भी विश्वासी इस अर्थ में शुद्ध नहीं है, कि उसमें कोई निर्बलता, गुनाह, या खराबी न हो - याकूब 3:2; 1 यूहन्ना 1:8. हर प्रकार से कोई विश्वासी सिद्ध नहीं है - फ़िलि. 3:12 देखें, जहाँ वही शब्द उपयोग में लाया गया है। इस प्रकार की सिद्धता भविष्य में ही संभव है - 1 यूहन्ना 3:2.

द्वारा उन्हें जो पवित्र किए जाते हैं, सर्वदा के लिए शुद्ध (सिद्ध) कर दिया है।

15पवित्र आत्मा भी हमें यही गवाही देता है, 16"कि प्रभु कहते हैं कि जो वाचा मैं उन दिनों के बाद उन से बान्धूँगा वह यह है, कि मैं अपने नियमों को उनके मन पर लिखूँगा और मैं उनके मन में डालूँगा। 17फिर वह यह कहते हैं, "मैं उनके अपराधों को, और उनके अधर्म के कामों को कभी याद न करूँगा।

18जब इन की माफ़ी हो गई है, तो फिर पाप का बलिदान न रहा।

19इसलिए हे भाइयो-बहनो, जब कि हमें यीशु के खून के द्वारा उस नये और जीवित रास्ते से पवित्र जगह में दाखिल होने की हिम्मत हो गयी है, 20जो यीशु ने परदे

"सर्वदा"- 5:9; 9:12. उनके लोगों के लिये मसीह का बलिदान व्यक्तिगत और सामूहिक रीति से स्थायी और न बदलने वाला है।

"जो पवित्र किये गए हैं" - पद 10. यदि ऐसा कहें कि जो पवित्र किये जा रहे हैं (जैसा कुछ अनुवादक कहते हैं) तब तो इसका इशारा उस प्रक्रिया की ओर हुआ, जो मसीह में सभी विश्वासियों के साथ घट रही है और यही सच्चे विश्वासी की परिभाषा भी होगी। तुलना करें 12:5-10; मत्ती 5:6,8; रोमि. 6:15-22; 8:12-14; 1 यूहन्ना 3:3,6,9,10. कुछ समर्पित और पवित्रता प्राप्त किये हुए नहीं, किंतु मसीह में सभी विश्वासी सिद्ध किए जा चुके हैं, शुद्ध किये जा चुके हैं और शुद्ध हो रहे हैं।

10:15 "पवित्र आत्मा भी हमें यही गवाही देता है"- 3:7; 9:8; 2 तीमु. 3:16; 2 पतर. 1:21. यहाँ वह यह प्रगट करता है कि मसीह में विश्वासियों के 'सिद्ध बनाए जाने' का अर्थ क्या है।

10:16 यिर्म. 31:34 देखें। मसीह जिस सिद्धता में विश्वासियों को लाते हैं, उसमें यह तत्व बहुत महत्वपूर्ण है। परमेश्वर अपनी इच्छा की आत्मिक समझ और उसकी आज्ञाकारिता के लिये भीतरी इच्छा एवं योग्यता देते हैं। यह मसीह के पास थी (पद 7) और यीशु के बलिदान के आधार पर यह परमेश्वर अपने लोगों को देते हैं। यह नयी वाचा का एक आवश्यक चिन्ह है। सचमुच यदि देखें, तो इसके अतिरिक्त सच्चे विश्वासी होने का क्या चिन्ह है? यूहन्ना 14:15,23; रोमि. 8:3-4; 1 कुरि. 2:16; 2 कुरि. 3:3. यदि एक व्यक्ति के पास परमेश्वर के लिये मन नहीं, है, सेवा के लिये मन नहीं है, बाईबल में बतायी परमेश्वर की इच्छा को पूरा करने में दिलचस्पी नहीं है, तो यह कहने का क्या अर्थ हे कि मेरे अपराध क्षमा हो गए हैं? क्या नयी वाचा की आशीषों को बाँटा जा सकता है? क्या हम एक आशीष को स्वीकार करेंगे और अन्य को नहीं करेंगे?

10:17 लेखक का यह कहना कि मसीह ने विश्वासियों को "शुद्ध" बनाया है, इसे समझने में यह सहायक होता है। उसने उन्हें पूरी क्षमा दी है। यहाँ भी अर्थ वही है जो पौलुस का है, जब वह कहता है कि विश्वासियों को निर्दोष ठहराया गया है। रोमि. 3:24; 4:6-8; 8:33 देखें। मसीह ने परमेश्वर के सामने विश्वासियों का स्थान सिद्ध रखा है।

10:18 "तो फिर पाप का बलिदान न रहा"- कार्य पूरी रीति से सदा-सदा के लिये किया जा चुका है। मसीह के एक बलिदान के स्थान पर और कोई दूसरे बलिदान की या मसीह के बलिदान के दोहराये जाने की ज़रूरत न रही।

10:19 "इसलिए"- 2:1; 3:1; 4:1,14; 6:1. लेखक ने मसीह के प्रधान पुरोहित और नयी वाचा के मध्यस्थ के रूप में शिक्षा को यहाँ समाप्त किया है। अब वह सभी विश्वासियों को प्रोत्साहन देता है कि वे इस सच्चाई के अनुरूप व्यवहार करें। इसके द्वारा वह यह भी दिखाता है कि परमेश्वर की निगाह में उनका स्थान कितना "सिद्ध"- है।

"दाखिल होने की हिम्मत"- वर्ष में एक बार प्रधान पुरोहित को महापवित्र स्थान में प्रवेश करने का मौका प्राप्त होता था (9:7)। किसी इस्त्राएली को साहस नहीं था कि वह प्रवेश करे। अब विश्वासी किसी भी समय कभी भी महापवित्र स्थान में प्रवेश कर सकता है - स्वर्गिक पिता की उपस्थिति में। परमेश्वर ने सभी विश्वासियों को पुरोहित (13:15-16; 1 पतर. 2:9; प्रका. 1:6) बनाया है और परमेश्वर की उपस्थिति में वे अपने प्रधान पुरोहित यीशु के पीछे आ सकते हैं। यह इसीलिए सम्भव है क्योंकि यीशु के खून के द्वारा पाप के लिये प्रायश्चित्त किया जा चुका है और वह रुकावट जो परमेश्वर और मनुष्य के बीच थी, हटायी जा चुकी है।

10:20 पुरानी वाचा जो लोगों को दूर ही रखती

अर्थात् अपनी देह में से होकर, हमारे लिए
खोल दिया (अभिषेक किया) है। 21 और
इसलिए कि हमारा ऐसा महान मध्यस्थ
(याजक, पुरोहित) है, जो परमेश्वर के घर
का अधिकारी है, 22 तो आओ हम सच्चे मन,
और पूरे ईमान के साथ, और विवेक के
कचोटते रहने को दूर करने के लिए मन
पर छिड़काव लेकर, और देह को शुद्ध
जल से धुलवाकर परमेश्वर के पास जाएँ।
23 और अपनी आशा के अंगीकार को
मज़बूती से थामे रहें, क्योंकि जिसने वायदा
किया है वह सच्चे हैं। 24 और प्रेम, और भले

थी, उस से मसीह के इस रास्ते की तुलना की गयी है - निर्ग. 19:21-25; 27:9-19. यह एक जीवित राह है जो मसीह के जीवन पर निर्भर है और जो विश्वास करते हैं उन्हें नया आत्मिक जीवन देती है - यूहन्ना 14:6; 3:1-4. यह पुरानी वाचा की मरी रीति, विधियों और प्रथाओं के विरुद्ध है।

"परदे"- मिलाप वाले तम्बू और मंदिर दोनों ही में एक पर्दा था जिससे पवित्र और महापवित्र स्थान बँटा हुआ था (9:3)। यह दिखाता था कि परमेश्वर की मौजूदगी तक पहुँचने वाला पथ अभी तक प्रगट नहीं हुआ था - 9:8. पर्दा मसीह को दिखाता है। जब मसीह देह में आकर हमारे गुनाहों के लिये मरे (10:5) और हमारे अपराधों के लिये मरे, तब मंदिर का पर्दा ऊपर से नीचे तक फट गया था - मत्ती 27:50-51. दूसरे शब्दों में, उनकी मृत्यु ने पिता की उपस्थिति में जाने का रास्ता खोल दिया। महापवित्र स्थान में हम मसीह की क्रूसित देह के कारण जो हमारे लिये तोड़ी गयी, दाखिल हो सकते हैं।

10:21 "हमारा ऐसा महान मध्यस्थ है"- 2:17; 4:14.

"परमेश्वर का घर"- 3:6.

10:22 "पूरे ईमान के साथ"- 11:1,6 तुलना करें 3:12. सभी विश्वासियों के पास यह होना चाहिये और हो भी सकता है। हमें यह आश्वासन होना चाहिये कि मसीह ने हमारे पापों को ले लिया है और यह कि वह हमारे प्रधान पुरोहित हैं। उनके मार्ग हमें वापस परमेश्वर के पास लाते हैं; यह भी कि वह हमें अपनी उपस्थिति में अपना लेते है। इस सम्बन्ध में हमारे मन में संदेह और डर नहीं रहना चाहिये। इब्रानियों की पत्री में लेखक ने जो सच्चाई रखी है, उसे समझने पर हमारा आश्वासन बढ़ सकता है। तुलना करें 3:14; 6:19; 1 यूहन्ना 5:13; 2 तीमु. 1:12; यूहन्ना 14:1; लूका 12:32.

"विवेक...लेकर"- यह हृदय का छिड़काव भीतरी अनुभव को दिखाता है। देखें 9:13-14. यीशु का रक्त विश्वासी के मन पर छिड़का जाता है। इसका मतलब है कि मसीह के बलिदान की समझ और इस बलिदान पर विश्वास, मन को धोता है।

"देह को शुद्ध जल से धुलवाकर"- इस पूरी पत्री में लेखक ने पुरानी वाचा की आराधना की भौतिक वस्तुओं के माध्यम से आत्मिक सच्चाई बताने की कोशिश की है। यहाँ पर भी वह ऐसा कर रहा है। हमारे कुछ विद्वान सोचते हैं कि वह मसीही बपतिस्मे की ओर संकेत कर रहा था। देखें निर्ग. 30:17-21; लैव्य. 8:6; 16:4. यह पुरोहितों के शरीर का धोया जाना विश्वासियों की देह के अभी धोए जाने को दिखाती है। वे नयी वाचा में पुरोहित हैं - पद 19. जैसे उनके मनों की शुद्धता आवश्यक है, ठीक उसी प्रकार से उनका बाहरी व्यवहार भी शुद्ध होता है। नया और जीवित रास्ता जो परमेश्वर ने विश्वासियों के लिये खोल दिया है, वह किसी सीमा तक बाईबल में दिया गया है। निर्ग. के 30 अध्याय में तम्बू के आत्मिक उपयोग के विषय में दी गयी टिप्पणी देखें।

"पास"- देखें 4:16; इफ़ि. 2:18; 3:12; रोमि. 5:1-2; याकूब 4:8. हमें जिस तरह से उसके पास आना चाहिये उसके सम्बन्ध में चार बातें सम्मिलित हैं।

'सच्चे मन' - लूका 12:1; मत्ती 5:8; यूहन्ना 4:23-24; 1 कुरि. 5:8.

10:23 "वह सच्चे हैं"- 6:16-18; तीतुस 1:2; 1 यूहन्ना 5:9-10. संदेह और अविश्वास द्वारा हमें प्रभु का अनादर नहीं करना चाहिये - हमारे संदेह और अविश्वास का मतलब यह होगा कि वह अपनी प्रतिज्ञाओं के प्रति विश्वासयोग्य नहीं है।

10:24 पद 19-23 में उसने परमेश्वर ओर विश्वासियों के बीच के सम्बन्ध के विषय में कहा है। अब वह दिखाता है कि एक दूसरे के प्रति उनकी जिम्मेदारियाँ हैं। देखें 3:12; रोमि. 14:19; 15:2. 1 कुरि. 9:24; कुल. 3:15.

कामों में दूसरों को बढ़ाने के लिए एक दूसरे का ध्यान रखा करें, 25और एक दूसरे के साथ इकट्ठा होना न छोड़ो, जैसे कि बहुत से लोग करते हैं, लेकिन एक दूसरे को समझाते रहो, और जैसे-जैसे उस दिन को पास आते देखो, वैसे-वैसे और भी अधिक यह किया करो।

26क्योंकि सच्चाई की पहचान हासिल करने के बाद यदि हम जान बूझकर गुनाह करते रहें, तो गुनाहों के लिए फिर कोई कुर्बानी बाकी नहीं। 27हाँ, दण्ड की एक भयानक प्रतीक्षा और आग का जलना बाकी है, जो विरोधियों को भस्म कर देगी। 28जब कि मूसा की व्यवस्था का

"ध्यान रखा करें"- हमें ऐसे तरीकों के विषय सोचना चाहिये जिनके द्वारा हम दूसरों को प्रोत्साहित कर सकें कि वे प्रभु की सेवा बेहतर रीति से करो।

10:25 दूसरे विश्वासी जहाँ मिलते हैं वहाँ जाना रोकना नहीं चाहिये। हर एक को संगति की ज़रूरत है और प्रत्येक को दूसरों से मिलते रहने के लिये प्रोत्साहित करना चाहिये।

'उस दिन को पास आते देखो' - का मतलब क्या है? शायद यह यरूशलेम और मंदिर के नाश की ओर संकेत है (मत्ती 24:1-3; लूका 19:41,44; 21:20-24)। यह बर्बादी का समय उसके लिखे जाने के निकट का था या इसका अर्थ मसीह का दोबारा आना था (9:28; मत्ती 24:33), या दोनों की ओर ही इशारा था। प्रथम शताब्दी के समय के विश्वासी इन दोनों घटनाओं को एक ही समय में घटते हुए देखने की अपेक्षा कर रहे थे।

10:26-31 विश्वास त्याग के सम्बन्ध में यह चौथी चेतावनी है। 2:1-4 की टिप्पणी देखें। यह मसीह के सम्बन्ध में परमेश्वर द्वारा प्रगट महिमान्वित सत्य के प्रकाश के विरोध में जानबूझ कर अपराध करना है।

"सच्चाई की पहचान"- वह यह नहीं कहता कि "पश्चाताप और विश्वास के बाद"। हमें सच्चाई का ज्ञान हो सकता है और फिर भी पश्चाताप और विश्वास को ठुकरा सकते हैं। इस पद में लेखक जिस गुनाह की बात करता है, वह इस बात को लगातार अस्वीकार करना हो सकता है। आगे उपयोग हुए शब्दों से यह बात स्पष्ट हो जाती है।

10:26 "गुनाह करते रहें"- यह मन और जीवन की एक स्थिर हालत को बताता है, न कि किसी एक गुनाह या गुनाह की क्रिया को। लेखक यह नहीं कहता है कि वह सोचता है कि उन लोगों में से कोई इस स्थिति में गिरेगा। वह "यदि" शब्द का उपयोग करता है (तुलना 6:6)। पद 39 में वह कहता है कि उसे निश्चय है कि विश्वासी जिन्हें वह लिख रहा है वे इस अपराध के दोषी न ठहरेंगे (तुलना करें 1 यूहन्ना 3:9-10)।

ऐसा प्रतीत होता है कि लेखक किसी एक अपराध के विषय में कह रहा है। विश्वासी लोग किये हुए अपराधों की माफ़ी प्राप्त कर सकते हैं - (1 यूहन्ना 1:9; 2:1; 5:16)। लेकिन एक अपराध है, जिसके लिये कोई माफ़ी नहीं है। यहाँ यह मसीह और उसके बलिदान का तिरस्कार करना है, उसके रक्त की नयी वाचा से मुड़ना और पवित्र आत्मा की वाणी की आज्ञा नहीं मानना है (पद 29)। ऐसे लोग भी हैं जो यह सिखाते हैं कि विश्वासी किसी गुनाह में गिरने के कारण सदा के लिये नाश हो सकते हैं। नये नियम की यह शिक्षा नहीं है - मत्ती 6:12; 1 यूहन्ना 1:9; 2:1.

"कोई...नहीं"- यदि कोई मसीह के बलिदान को अस्वीकार करता है, तो उसने अपने आपको मुआफ़ी के रास्ते से अलग कर लिया है। यदि ऐसा व्यक्ति सोचता है कि वह पुनः पुरानी वाचा के बलिदान को चढ़ा सकता है (या और कोई बलिदान) और यह भी कि परमेश्वर उसे ग्रहण करेगा, तो वह एक बड़ी गलती कर रहा है।

10:27 "दण्ड"- 9:27; प्रे.काम 17:31; प्रका. 22:11-15.

"आग का जलना"- 12:29; 2 थिस्स. 1:7; मत्ती 3:10; मरकुस 9:42-48; लूका 16:24; प्रका. 20:14.

"विरोधियों"- उसका इशारा परमेश्वर के विरोधियों की ओर है। प्रत्येक व्यक्ति जो मसीह और उनके एक बलिदान के विषय में प्रगट सच्चाई को जानबूझकर अनदेखा करता है, जान जाएगा कि वह परमेश्वर का दुश्मन है। तुलना करें यूहन्ना 7:7; 15:18; रोमि. 5:10; याकूब 4:4.

10:28 देखें 2:2; व्यव. 17:6-7. उन गुनाहों को जो कानून के अन्तर्गत मृत्यु दण्ड को लाते थे, देखें निर्ग. 21:36. एक उदाहरण देखें - गिनती 15:30-35.

न मानने वाला दो या तीन जनों की गवाही
पर, बिना दया के मार डाला जाता है 29तो
सोच लो कि वह और कितनी भारी सज़ा
के लायक ठहरेगा, जिसने परमेश्वर के बेटे
को पाँवों से रौंदा, और वाचा के खून को
जिसके द्वारा वह पवित्र ठहराया गया था,
अपवित्र जाना है, और अनुग्रह की आत्मा
का अपमान किया। 30क्योंकि हम परमेश्वर
को जानते हैं, जिन्होंने कहा, "बदला लेना
मेरा काम है, मैं ही दण्ड दूँगा" और फिर
यह कि प्रभु अपने लोगों का इन्साफ़ करेंगे।
31जीवित परमेश्वर के हाथों में पड़ना
भयानक बात है।
32उन पहले दिनों को याद करो, जब

10:29 यह वह पाप है जिसके विषय में लेखक 26 पद में कहता है। तुलना करें 6:6; मत्ती 12:31; 1 यूहन्ना 5:16-17. पुरानी वाचा में जान बूझकर गुनाह करने पर मौत की सज़ा का विधान था। नयी वाचा, पुरानी वाचा से बढ़कर है, इसलिए इसके विरोध में अपराध पुरानी वाचा में किये गये अपराध से अधिक भयानक है। परमेश्वर जितना अधिक ज्ञान और सच्चाई देते हैं, उतनी ही अधिक हमारी आज्ञाकारिता की ज़िम्मेदारी बढ़ जाती है और उसे न अपनाने पर सजा भी बड़ी होती है। क्या मसीह में एक विश्वासी इस पद में वर्णित बुराई करेगा - मसीह को पैरों से रौंदेगा, उनके खून को अपवित्र करेगा, आदि? नये नियम में विश्वासियों के सम्बन्ध में जो शिक्षा है, उसको ध्यान में रखते हुए ऐसा संभव नहीं है। देखें यूहन्ना 5:24; रोमि. 8:1,28-33; फ़िलि. 1:6; 1 यूहन्ना 3:9-10 आदि।

"वाचा के खून को जिसके द्वारा वह पवित्र ठहराया गया था" - इसका अर्थ क्या हुआ? क्या यह संभव है कि एक व्यक्ति जो उनके खून से शुद्ध ठहराया गया है, विश्वासी न हो या उसने उद्धार न पाया हो? पवित्रीकरण का सदैव अर्थ मुक्ति और विश्वास नहीं है। इसका मूल अर्थ है, अलग करना (लैव्य. 20:7 और यूहन्ना 17:17-19 की टिप्पणी देखें)। अविश्वासी के शुद्ध किये जाने के सम्बन्ध में 1 कुरि. 7:14 देखें। यह बात ध्यान में रखें कि इस पत्री में पुरानी और नयी वाचा की तुलना है और यह पत्री इब्री लोगों को लिखी गयी थी। वे यह जानते थे कि एक इस्त्राएल के रूप में वे खून से शुद्ध किये गये थे (9:18-20; निर्ग. 24:7-8; 31:13; लैव्य. 21:8)। किंतु इसका अर्थ यह नहीं हुआ कि इस्त्राएल में प्रत्येक व्यक्ति एक सच्चा विश्वासी था या परमेश्वर के दण्ड से बच गया था - देखें 3:10-11,19.

"नयी वाचा की नींव मसीह का खून है" - 9:15. देखें 13:12, जहाँ लिखा है कि "लोगों को" अपने रक्त से पवित्र करने के लिये मसीह यीशु ने दुख उठाया। नयी वाचा इस्त्राएल के घराने से बांधी गयी थी - 8:8. इस्त्राएल राष्ट्र दूसरे राष्ट्रों से विशेष कार्य के लिये अलग किया गया है (पवित्र किया गया है) - रोमि. 9:1-5; 11:11,25-29. किंतु अधिकांश लोग मसीह को अस्वीकार करते हैं और मुक्ति और विश्वास बिना जीवित हैं। क्या यह कहना संभव नहीं कि पृथ्वी पर दिखने वाली कलीसिया मसीह के रक्त से शुद्ध की गई है? क्या यह कहना सत्य नहीं कि दिखने वाले चर्च में बहुत से अविश्वासी हैं और उन्हों ने कभी मुक्ति प्राप्त नहीं की? 1 तीमु. 2:6 देखें, जिसमें लिखा है कि मसीह ने अपने आपको सभी लोगों के लिये 'रेनसम' या 'मुक्तिमूल्य' के रूप में दे दिया। यह 'मुक्तिमूल्य' वह स्वयं थे, उन्हों ने अपना खून - 1 पतर. 1:18-19.

10:30 व्यव. 32:35-36; भजन 135:14.

10:31 जीवित परमेश्वर के हाथों में पड़ना भयानक बात है क्योंकि परमेश्वर पवित्र हैं, पाप से घृणा करते हैं, और विद्रोह एवं अविश्वास को दण्डित करेंगे। यदि हम ने परमेश्वर के सत्य को ग्रहण किया है और उसे मान रहे हैं और जैसा 19-25 में कहता है वैसा कर रहे हैं तो हमें घबराने की ज़रूरत नहीं।

10:32-39 सत्य से मुकरने के सम्बन्ध में चेतावनी देने के बाद जैसा उसने 6:9-12 किया, वैसा वह अभी भी करता है। वह चाहता है कि वे जानें कि उसे विश्वास है कि वे उद्धार पा चुके हैं और वे पद 26-29 का पाप नहीं करेंगे। वह चाहता है कि वे भरोसा रखें और अपने विश्वास को कार्यों से पुष्ट करें।

10:32-34 दुखों में उनकी स्थिरता, दूसरे मसीही लोगों से प्रेम, मसीह के लिये सब कुछ खो देने की तत्परता - यह सभी एक ठोस प्रमाण थे, कि उनका विश्वास वास्तविक था। "झमेले" - (32) पद 26; प्रे.काम 26:18; 2 कुरि. 4:6 और 2 तीमु. 3:12.

तुम सच्चाई को जानने की वजह से दुखों
में भी मज़बूत रहे। 33कुछ तो बदनामी,
और सताव सहते हुए तमाशा बने, और
कुछ इस तरह, कि तुम उनके साझी हुए
जिनके साथ बुरा व्यवहार किया जाता
था। 34क्योंकि तुम कैदियों के दुख में भी
दुखी हुए, और अपनी संपत्ति भी आनन्द
से लुटने दी, यह जानकर कि तुम्हारे पास
एक और भी उत्तम और हमेशा ठहरने
वाली दौलत है। 35इसलिए अपना साहस
न छोड़ो क्योंकि उसका परिणाम बड़ा
होगा। 36तुम्हें सब्र रखना ज़रूरी है, ताकि
परमेश्वर की इच्छा को पूरी करके तुम
प्रतिज्ञा का फल (परिणाम) पाओ। 37अब
बहुत ही थोड़ा समय रह गया है जब कि
आने वाला आएगा, और देर न करेगा।
38और मेरा धर्मी जन विश्वास से जीवित
रहेगा, और यदि वह पीछे हट जाए तो मेरा
मन उससे खुश न होगा।
39हम उन लोगों की तरह नहीं हैं,जो
विश्वास रखना छोड़ देने की वजह से वापस
बर्बाद हो जाते हैं,लेकिन विश्वास में बने रहेंगे
ताकि उद्धार (मुक्ति) की आशीष में बने रहें।

11 अब विश्वास आशा की हुई वस्तुओं का आश्वासन (निश्चय)

10:34 "हमेशा ठहरने वाली"- पद 34 - देखें 6:12; मत्ती 6:19-20; रोमि. 8:17; 1 पतर. 1:4. मसीह में हमारे पास अनन्तकालिक दौलत है, इसलिए हमारे पास क्या है या क्या नहीं है इस विषय में हमें अधिक चिंतित नहीं होना चाहिये, या इस विषय में कि हमारे पास क्या है और क्या नहीं है।

10:35-36 "परिणाम"- मत्ती 19:28-30; प्रका. 22:12.

10:36 "धीरज धरना"- देखें 3:6,14; 6:11; रोमि. 3:3-5; 8:24-25; याकूब 1:2-4. चाहे कुछ भी हो, मसीह में विश्वास रखकर सब कुछ सहते रहना आवश्यक है। लेखक का विश्वास है कि वे ऐसा करेंगे (39), हमें भी यही भरोसा रखना है।

10:37-38 हबक्कूक 2:3-4 । रोमि. 1:17; गल. 3:11 देखें। परमेश्वर लोगों को उस समय मुआफ़ी देते है जब वे उस पर विश्वास करते हैं - रोमि. 3:24-25,28; 4:24; 5:1. धर्मी ठहराए जाने के बाद वे एक ऐसा जीवन शुरू करते हैं जो उनके इस पृथ्वी के अन्त समय तक का होता है (2 कुरि. 5:7)। इब्रानियों की पत्री में विश्वास द्वारा जीवित रहने और अन्त तक बने रहने पर ज़ोर डाला गया है।

10:38 "यदि वह पीछे हट जाएँ"- 6:6.

10:39 "हम"- इसका मतलब मसीह में सच्चे विश्वासियों से है (उसे मालूम था कि वह उन में से एक था, और उन्हों ने भी भरपूर सबूत इस बात के दिये थे कि वे भी विश्वासी थे - पद 32-34; 6:11)। यदि वे पीछे हटें, तो परमेश्वर उन से खुश नहीं होंगे। इसका अर्थ उनका नाश होगा। किंतु प्रेरित लेखक कहता है कि वे पीछे नहीं हटेंगे। कुछ लोगों का कहना है कि सच्चे विश्वासी पीछे हट सकते हैं और यहाँ 26; 2:3; 3:12; 6:6; 12:25 में वर्णित गुनाह कर सकते हैं और सदा के लिये नाश हो सकते हैं। लेखक संकेत देता है कि ऐसा नहीं हो सकता। विश्वास कहीं अधिक सामर्थी हैं जितना लोग सोचते भी नहीं। इस संसार से अधिक सामर्थी है (1 यूहन्ना 5:4)।

यह पर्वतों को हिला सकता है और असंभव को संभव कर सकता है (मत्ती 17:20; रोमि. 4:19-22)।

यह अदृश्य को देखने योग्य बनाता है (2 कुरि. 4:18)।

परमेश्वर ने इसे एक माध्यम के रूप में चुना है ताकि लोगों को मुक्ति दें और वे मुक्ति में बने रहें (इफ़ि. 2:8; 1 पतर. 1:5)।

क्या ऐसा माध्यम जिसे परमेश्वर ने चुना है अपने आप में असफल हो सकता है? यह मसीह की विश्वासियों के लिये प्रार्थना का एक विषय है, तब क्या यह असफल होगा? इब्रानियों का लेखक अपने इस भरोसे को प्रगट करता है कि ऐसा नहीं होगा। रोमि. 5:9 और 10 की टिप्पणी देखें। विश्वासी को जिस अन्तिम मुक्ति की प्रतिज्ञा की गयी है, उसमें मसीह के विश्वासी निरन्तर विश्वास करते हैं। अगले अध्याय में लेखक विश्वास की ताकत को दिखाता है।

11:1 विश्वास अँधेरे में कूदना नहीं है, यह ज्योति में छलाँग लगाना है। यह मात्र कामना करना नहीं है। यह परमेश्वर के वचन के सामर्थी प्रमाण पर आधारित है। सच्चे विश्वास में मनुष्य के पास परमेश्वर के विषय में आने वाले प्रत्येक विचार

और अनदेखी चीज़ों का सबूत है,
2क्योंकि इसी के द्वारा बुज़ुर्गों (पूर्वजों) की अच्छी गवाही दी गई।
3विश्वास ही से हम जान जाते हैं कि सारी दुनिया की रचना परमेश्वर के वचन से हुई है। यह नहीं कि जो कुछ दिखाई देता है, वह देखी हुई चीजों से बना हो।
4विश्वास ही से हाबिल ने कैन से उत्तम

या वे सभी बातें नहीं जिन्हें मनुष्य समझता है कि परमेश्वर का ज्ञान है।

"आश्वासन"- इस शब्द का अर्थ "तत्व" या "सार" या "प्रकृति" या "हिम्मत" भी होता है, किंतु यहाँ आश्वासन सब से अधिक उचित लगता है। यूनानी में दो शब्दों का मिलन है। पहले का मतलब है "नीचे" और दूसरे का "खड़ा" । दूसरे शब्दों में, विश्वास वह है जो किसी और पर खड़ा होता है। जिसे नींव भी कहते हैं। वह कौन सी वस्तु या बात है जिस पर विश्वास स्थिर होता है? वह सभी जिनकी यहाँ इब्रानियों में मसीह में आशा की जाती है। विश्वास हमारी आशाओं की सच्ची नींव है। विश्वास बिना हमारे पास आशा के लिये ठोस कारण नहीं होंगे और न ही आशा करने का कोई अधिकार। विश्वास एक नींव है, गुण है, जो हमें किसी भी बर्बाद होने की संभावना और किसी भी तरह की परेशानी का सामना करने और सहने के योग्य बनाता है। तुलना करें रोमि. 5:1-4.

"सबूत"- या 'पुष्ट करना' या 'खोला जाना' - यूनानी भाषा में इन में से कोई भी शब्द हो सकता है - क्रिया का उपयोग यूहन्ना 3:20; 16:8; 1 कुरि. 14:24; इफ़ि. 5:11,13 में किया गया है। विश्वास यह कायलता है कि जिन न दिखने वाली बातों के विषय बाईबल कहती है, वे वास्तव में हैं। तुलना करें पद 27; 2 कुरि. 4:18.

11:2 "बुज़ुर्गों"- इसका अर्थ है पुराने समय में रहने वाले वे परमेश्वर के लोग, जिनके विश्वास की प्रशंसा परमेश्वर ने की थी। बड़ाई का विषय यह था कि सारी मानवजाति में से केवल वे ही सीधे मार्ग पर थे, एक मात्र परमेश्वर पर विश्वास करते थे, परमेश्वर के सामने धर्मी थे। इस अध्याय में हम इस प्रशंसा के भागी हैं। परमेश्वर की दृष्टि से मानवजाति का इतिहास उन लोगों का इतिहास है जो परमेश्वर पर विश्वास करते हैं। क्योंकि विश्वास और उसके द्वारा संभव बातें ही महत्वपूर्ण हैं। केवल वही है जो बना रहेगा, बाकी सब कुछ मिट जाएगा (1 यूहन्ना 2:17)।

11:3 विश्वास समझ या तर्क के विरोध में नहीं है - विश्वास समझ देता है। यह आँख के समान है जो रोशनी को भीतर आने देती है। विश्वासी जानते हैं कि विश्व की उत्पत्ति कैसे हुई क्योंकि परमेश्वर ने यह प्रगट किया है। हमें अविश्वासियों के समान उसकी उत्पत्ति के सम्बन्ध में तर्क नहीं करना है। परमेश्वर ने कहा और सृष्टि का निर्माण हुआ (उत्पत्ति 1:1,3,6,9, आदि; भजन 33:6; यशा. 40:26; 42:5; यूहन्ना 1:3; कुल. 1:16)।

11:4 यहाँ लेखक विश्वास रखने वाले पूर्वजों के विषय में बताना आरम्भ करता है। वे सभी प्रतिभावान लोग नहीं थे। हाबिल एक चरवाहा था, याकूब और शिमशोन में तमाम कमियाँ थीं, राहाब एक वेश्या थी, किंतु उन सभी में एक बात सामान्य थी - उन्हों ने परमेश्वर पर विश्वास किया और इस बात में वे हम सभी के लिये एक नमूना थे। यहाँ पर पुराने नियम के सभी विश्वासियों के नाम नहीं दिये गये हैं। यहाँ पर विश्वास के तीन परिणाम दिखायी देते हैं।

पहला, इस विश्वास के परिणाम स्वरूप उन्हों ने कुछ किया। सच्चा विश्वास जीवन रहित नहीं है। अक्रियाशील नहीं है। यह एक शक्तिशाली बल है जो सदा क्रिया को उत्पन्न करता है (10:39; याकूब 2:14-26)।

दूसरा, विश्वास के द्वारा परमेश्वर से आशीषें प्राप्त हुईं। इस सूची के अनुरूप परमेश्वर ने प्रत्येक विश्वासी को किसी न किसी अद्‌भुत तरीके से आशीष दी।

तीसरा, जिनके पास विश्वास था, उन्हों ने इसके द्वारा सब कुछ अन्त तक सहा। इसलिए सच्चा विश्वास कार्य करता है, प्राप्त करता है और सतत् बना रहता है। जो विश्वास ऐसा नहीं करता है, वह बाईबल आधारित सच्चा विश्वास नहीं है।

"हाबिल"- उत्पत्ति 4:1-10. हम उसमें विश्वास और बलिदान के बीच सम्बन्ध देखते हैं। पापी के रूप में हम सभी को यहीं से शुरू करना चाहिये और इस किताब की यह मुख्य शिक्षाओं में से एक है। हाबिल का विश्वास एक सच्चाई पर निर्भर था (जैसा कि सच्चा विश्वास होता है) और विश्वास के द्वारा उसने परमेश्वर द्वारा निर्धारित बलिदान को चुना था। कैन ने ऐसा करना अस्वीकार किया। इसलिए हाबिल का बलिदान उसके बलिदान से बढ़कर था।

कुर्बानी परमेश्वर के लिए चढ़ायी, और उसी के द्वारा उसके विश्वासी होने की गवाही भी दी गई, क्योंकि परमेश्वर ने उसकी भेंटों के बारे में गवाही दी, और उसी के द्वारा वह मरने पर भी अब तक बातें करता है।

5विश्वास ही से हनोक उठा लिया गया कि मौत को न देखे, और उसका पता नहीं चला, क्योंकि परमेश्वर ने उसे उठा लिया था, और उसके उठाए जाने से पहले उसके विषय में यह कहा गया था, कि उसने परमेश्वर को खुश किया है।

6विश्वास बिना उन्हें खुश करना असंभव है, क्योंकि परमेश्वर के पास आने वाले को विश्वास करना चाहिए कि वह हैं और अपने चाहने वालों को जवाब देते हैं (खोजने वालों को पुरस्कार देते हैं)।

7विश्वास ही से नूह ने उन बातों के बारे में जो उस समय दिखाई नहीं देती थीं, परमेश्वर से चेतावनी पाकर भक्ति के साथ अपने परिवार के बचाव के लिए जहाज बनाया, और उसके द्वारा उसने दुनिया को आरोपी ठहराया, और उस पद का वारिस हुआ, जो विश्वास से है।

8विश्वास ही से अब्राहम को जब बुलाया

"विश्वासी"- तुलना करें उत्पत्ति 15:6; रोमि. 1:17; 3:22; 5:1. उसके इस नमूने से हाबिल आज तक बातें करता है और कहता है - "परमेश्वर के ज्ञान पर भरोसा करो और परमेश्वर द्वारा निर्धारित बलिदान का चुनाव करो" । यह बलिदान यीशु मसीह का है - 7:27; 9:12,26,28; 10:10,14.

11:5 परमेश्वर के साथ सहभागिता और विश्वास के बीच सम्बन्ध को हनोक दिखाता है। उत्पत्ति 5:11-24 देखें। बिना विश्वास के परमेश्वर को जानना या उनके साथ जीवन जीना नामुमकिन है। अविश्वास परमेश्वर को झूठा ठहराता है (1 यूहन्ना 5:10)। दो व्यक्तियों में सहभागिता हो भी कैसे सकती है, यदि उन में से एक में अविश्वास और दोष लगाने के विचार हैं? हनोक विश्वास और अमरता के बीच के सम्बन्ध को भी दिखाता है, एक ऐसा बदलाव जो यीशु मसीह के द्वितीय आगमन पर जीवित विश्वासियों के जीवन में आएगा (1 कुरि. 15:51-53; 1 थिस्स. 4:15-17)।

11:6 "विश्वास...है"- मात्र कठिन ही नहीं। अविश्वास एक छोटी सी गलती नहीं है, जिसे परमेश्वर अनदेखा करते है। यह एक भयंकर गुनाह है जो हमारे उस सम्बन्ध के केंद्र पर प्रहार करता है जो परमेश्वर और मनुष्य के मध्य है। यह एक व्यक्ति का परमेश्वर और सच्चाई के विरुद्ध पाप और अंधकार के प्रति भीतरी चुनाव है। यह परमेश्वर के प्रकाशन और परमेश्वर के पुत्र का तिरस्कार है, और परमेश्वर इसकी उचित सज़ा देते है - 3:11-12,19; यूहन्ना 3:36; प्रका. 21:8.

देखें कि विश्वास दो बातों को सत्य ग्रहण करता है, यह कि बाईबल में वर्णित परमेश्वर का अस्तित्व है और वह तत्परता से अपने खोजने वाले व्यक्ति को पुरस्कार देंगे। यहाँ पर पद एक के दो दायरे हैं - अदृश्य (परमेश्वर) और भविष्य (पुरस्कार)। विश्वास इन दोनों सच्चाईयों को ग्रहण करता है क्योंकि इन्हें परमेश्वर ने उन पर प्रगट किया है - 1:1-3; यशा. 44:6; 45:5,18,21; यूहन्ना 1:18; मत्ती 7:7-8.

"चाहने वालों"- उत्पत्ति 20:11; भजन 34:7-11; 111:10; नीति. 1:7 की टिप्पणी।

"खोजने वालों को"- व्यव. 4:29; यिर्म. 29:13.

11:7 गुनाह के विरुद्ध परमेश्वर के क्रोध से बचाव और विश्वास के साथ उसका जो सम्बन्ध है, उसे हम नूह के जीवन में देखते हैं - उत्पत्ति 6:9—7:5. अब मसीह लोगों के लिये शरणस्थान है। वे उसकी शरण में सुरक्षित हैं।

"जहाज"- प्रे.काम 16:31 से तुलना करें।

"दुनिया को आरोपी ठहराया"- विश्वास का एक उदाहरण अविश्वास को दोषी ठहराता है। जिस प्रकार प्रकाश अंधकार को दोषी ठहराता है (तुलना करें यूहन्ना 3:18-21; 15:22-24)।

"जो विश्वास से है"- रोमि. 1:17; 3:24-25.

11:8-19 इस अध्याय में अन्य लोगों की तुलना में अब्राहम को अधिक जगह दी गयी है। बाईबल में वह विश्वास का सर्वश्रेष्ठ उदाहरण है और उसे "विश्वास करने वालों का पिता" कहा गया है - रोमि. 4:11,16. उसके जीवन के तमाम पहलुओं का चित्र है।

11:8 देखें उत्पत्ति 12:1-5; प्रे.काम 7:2-4. यहाँ विश्वास और परमेश्वर के प्रति आज्ञाकारिता में सम्बन्ध को दिखाया गया है। बिना विश्वास वास्तविक आज्ञाकारिता नहीं हो सकती और यदि कोई आज्ञाकारिता नहीं, तो यह सिद्ध होता है कि विश्वास नहीं है - 5:9 देखें; यूहन्ना 3:36; प्रे.

गया तो वह आज्ञा मानकर ऐसी जगह चल पड़ा, जिसे विरासत में लेने वाला था, और यह न जानते हुए भी कि कहाँ जा रहा है, वह चल पड़ा।

9विश्वास ही से उसने प्रतिज्ञा किए हुए देश में, जैसे पराए देश में परदेशी रहकर इसहाक और याकूब समेत, जो उसके साथ उसी प्रतिज्ञा के वारिस थे, तम्बुओं में वास किया, 10क्योंकि वह उस स्थिर नींव वाले नगर का इन्तज़ार करता था, जिसके रचने वाले और बनाने वाले परमेश्वर हैं।

11विश्वास से सारा ने आप बूढ़ी होने पर भी गर्भ धारण करने की ताकत पायी, क्योंकि उसने वायदा करने वाले को सच्चा जाना था। 12इस कारण एक ही जन से जो मरे हुए के समान था, आकाश के तारों और समुद्र तट की बालू के समान, अनगिनित वंश उत्पन्न हुए।

13ये सब विश्वास ही की दशा में मरे, और उन्हों ने प्रतिज्ञा की हुई वस्तुएँ नहीं पायीं, लेकिन उन्हें दूर से देखकर खुश हुए और मान लिया कि हम दुनिया में परदेशी और बाहरी हैं। 14जो ऐसा कहते हैं, वे साफ़ तौर पर प्रगट करते हैं कि वे स्वदेश की चाहत रखते हैं, 15और जिस देश से वे निकल आए थे, यदि उसके विषय में सोचते तो उन्हें लौट जाने का अवसर था। 16परन्तु वे एक उत्तम अर्थात् स्वर्गिक देश की चाह रखते हैं, इसीलिए परमेश्वर उन लोगों के परमेश्वर कहलाने में उन से नहीं शर्माते, क्योंकि उन्हों ने उन लोगों के लिए एक नगर तैयार किया है।

17विश्वास ही से अब्राहम ने परखे जाने

काम 5:32; रोमि. 1:5; 2 थिस्स. 2:8 और प्रे.काम 22:10 पर टिप्पणी। सब कुछ छोड़कर अनदेखे स्थान को जाना व्यक्ति की पुरानी जीवन शैली और विश्वास के छोड़ने को दिखाती है (तुलना करें लूका 14:33; 18:28,30; 2 कुरि. 6:17-18)। परन्तु अपनी यात्रा आरम्भ करना और यह न जानना कि हम कहाँ जा रहे हैं और क्या कर रहे हैं, यह क्या बेवकूफ़ी नहीं? मनुष्य की बुद्धि को शायद यह मूर्खतापूर्ण जान पड़ता हो, परन्तु विश्वास के लिये और उसकी बड़ी समझ के लिये नहीं।

11:9-10 उत्पत्ति 12:6-9 । अब्राहम का तम्बुओं में रहना और प्रायः एक स्थान से दूसरे स्थान को जाना विश्वास और यात्रा के बीच सम्बन्ध को दिखाता है। पद 13-16 देखें। अब्राहम की आँखें अनन्त संसार पर लगी थीं, इसलिए उसने अपनी आँखें इस संसार पर नहीं लगायीं। तुलना करें 1 पतर. 2:11. विश्वासियों का यही दृष्टिकोण होना चाहिये। उनकी सदा ठहरने वाली दौलत और नागरिकता स्वर्ग की है (10:34; मत्ती 6:19-20; फ़िलि. 3:20)। विश्वास के द्वारा वे इस बात को समझते हैं और इस सच्चाई में आनन्दित होते हैं कि यह दुनिया उनका घर नहीं, परन्तु इस राह से वे मात्र गुज़र रहे हैं और उनका असली ठिकाना स्वर्ग में परमेश्वर का नगर है (12:22; गल. 4:26; प्रका. 21:2)।

11:11-12 उत्पत्ति 15:4-6; 21:1-5; रोमि. 4:18-21 । यह सच है कि अब्राहम ने परमेश्वर की प्रतिज्ञा पर विश्वास किया कि उसे और उसकी पत्नी सारा को संतान होगी। बेटे का वायदा दिये जाने के समय सारा के विश्वास के विषय कुछ भी नहीं कहा गया है। उत्पत्ति 18:10-15 देखें। इब्रानियों के लेखक के अनुसार बाद में उसने भी विश्वास किया। विश्वास और फलदायकता, विश्वास और दिखने वाली असंभवता (मत्ती 17:20) के बीच जो सम्बन्ध है उसे वे दोनों दिखाते हैं।

11:13 वे एक ऐसे विश्वास का नमूना हैं जो अन्त तक बना रहता है (10:39)।

"परदेशी और बाहरी"- पद 9,10. मात्र अब्राहम ही नहीं, किंतु वे सभी जिनके नाम यहाँ पर हैं, यही समझ एवं दृष्टिकोण रखते थे। आशा की ही हुई बातें, अदृश्य बातें (पद 1), उनके विचारों, इच्छाओं और विश्वास के बड़े लक्ष्य थे।

11:17-19 उत्पत्ति 22:1-19 की वर्णित घटना में विश्वास के कई एक दायरों को देखा जा सकता है, जैसे परखे जाने के समय विश्वास और विजय, कठिन समय में विश्वास और आज्ञाकारिता, विश्वास और पुनरुत्थान, विश्वास और न बदलने वाली (स्थिर) परमेश्वर की प्रतिज्ञाएँ। उत्पत्ति 21:12 में परमेश्वर द्वारा की गयी प्रतिज्ञा को पूरा करने के लिये इसहाक का जीवित रहना जरूरी था। अब्राहम को विश्वास था कि यदि वह इसहाक को बलि चढ़ाता है, तो परमेश्वर उसे मरे हुओं में से जिलायेंगे और परमेश्वर हर तरह से अपनी प्रतिज्ञा को पूरा करेंगे। विपरीत परिस्थितियों के बावजूद सच्चा विश्वास बना रहता है। वे इस सच्चाई को थामे रहते है कि परमेश्वर झूठ नहीं बोल सकते।

के समय में इसहाक को बलिदान चढ़ाया, और जिसने वायदों को सच माना था, 18और जिससे यह कहा गया था, "कि इसहाक से तुम्हारा वंश कहलाएगा" वह अपने एकलौते को चढ़ाने लगा। 19क्योंकि उसने विचार किया (मान लिया) कि परमेश्वर सामर्थी हैं, कि मरे हुओं में से जिलाएँ। इसलिए उन्हीं में से दृष्टान्त की रीति पर उसने इसहाक को फिर पा लिया।

20विश्वास ही से इसहाक ने याकूब और एसाव को आने वाली बातों के विषय में आशीष दी।

21विश्वास ही से याकूब ने मरते समय यूसुफ़ के दोनों बेटों में से एक-एक को आशीष दी, और अपनी लाठी के सिरे पर सहारा लेकर उपासना की।

22विश्वास ही से यूसुफ़ ने, अपनी मौत के समय इस्राएलियों के निकल जाने की चर्चा की, और अपनी हड्डियों के बारे में आज्ञा दी।

23विश्वास ही से मूसा के माता पिता ने उसके पैदा होने के बाद तीन महीने तक छिपा रखा, क्योंकि उन्हों ने देखा कि बालक सुन्दर है, और वे राजा की आज्ञा से न डरे।

24विश्वास ही से मूसा ने बड़े हो जाने पर फ़िरौन की बेटी का बेटा कहलाने से इन्कार किया, 25इसलिए कि उसे बुराई (गुनाह) में थोड़े दिन के सुख भोगने से परमेश्वर के लोगों के साथ दुख भोगना और उत्तम लगा, 26और मसीह के कारण निन्दित होने को उसने मिस्र के भण्डार से बड़ा धन समझा, क्योंकि उसकी आँखें फल पाने की ओर लगी थीं।

11:20 उत्पत्ति 27:27-40 । यह विश्वास और आशा की गई वस्तुओं (पद 1) के मध्य में जो सम्बन्ध है, उसे दर्शाता है।

11:22 उत्पत्ति 49:1-28; 50:24-25 । याकूब और यूसुफ़ उस विश्वास को दर्शाते हैं जो भविष्य में परमेश्वर द्वारा प्रतिज्ञा की हुई बातों पर है, जब तक व्यक्ति मृत्यु को प्राप्त न कर ले (पद13)। याकूब का विश्वास उसके जीवन के अन्त में ही अधिक तीव्रता से चमका था। सच्चा विश्वास मौत की घड़ी आने पर भी पीछे नहीं हटता (10:39)। जिन लोगों को यह पत्र लिखा गया था, क्या कठिनाईयों के कारण उन्हें अपने विश्वास से मुकर जाने की इच्छा हुई थी? उन्हें अपने पूर्वजों की ओर दृष्टि करनी चाहिये। उन्हें कैसी-कैसी कठिनाई और समस्या का सामना करना पड़ा? विश्वास के द्वारा परमेश्वर लोगों को यह सब हासिल करने योग्य बनाते हैं।

11:23 निर्ग. 1:22; 2:2; प्रे.काम 7:20 । उन्हों ने अर्थात् मूसा के माता-पिता ने परम पिता परमेश्वर पर विश्वास किया इसलिए वे राजा की आज्ञा से न डरे। दृढ़ विश्वास डर पर जय पाता है - 13:6; मत्ती 8:26; मरकुस 4:40; प्रे.काम 4:13.

11:24-26 निर्ग. 2:11,13; प्रे.काम 7:23-36 । मूसा ने 40 साल की उम्र में मिस्त्र और परमेश्वर के बीच एक चुनाव किया। मिस्त्र को चुनने का अर्थ था संसारिक चीजें, दौलत और आमोद प्रमोद को चुनना। परमेश्वर को चुनने का मतलब था सब कुछ त्यागना और मिस्त्र में गुलाम लोगों के साथ दुख उठाना। वह ऐसा इसलिए कर सका क्योंकि उसके पास विश्वास था और विश्वास लोगों की मदद करता है कि वे बातों को सही मूल्य दे सकें। विश्वास इस सच्चाई से कायल होता है कि भविष्य की परमेश्वरीय और अनदेखी बातें उन बातों से बढ़कर हैं जो संसार हमें दे सकता है। फ़िलि. 3:7-8 से तुलना करें। मूसा विश्वास और त्यागे जाने के बीच जो सम्बन्ध है उसका नमूना है। देखें 10:34; लूका 14:33; 18:28-30; मत्ती 4:18-22; 10:37-39; 16:24-28. सच्चा विश्वास मसीह के लिये हर प्रकार की कुर्बानी करने के लिये तैयार रहेगा। जो तैयार नहीं हैं, वे भले ही कहते रहें कि उनके पास विश्वास है, और दूसरे भी उनके विषय में भले ही कहते रहें कि उनके पास विश्वास है, परन्तु वास्तव में देखा जाये तो वे बाईबल के सच्चे विश्वास से दूर हैं। उनके विषय हम क्या कहें जो मूसा और पौलुस के मार्ग को त्याग देते हैं और मसीह के लिये कष्ट उठाने के बजाए मज़ा - मस्ती, सम्पत्ति और संसार में अधिकार के पीछे जाते हैं? उन्हें यह सच्चाई सीखने की ज़रूरत है - मसीह के लिये कष्ट उठाना संसारिक धन संपत्ति से बढ़कर है (पद 26; 13:13; प्रे. काम 5:41; 1 पतर. 4:12-16)।

27विश्वास ही से उसने राजा के गुस्से
की परवाह न करते हुए, मिस्र को छोड़
दिया क्योंकि वह अनदेखे को मानो देखता
हुआ विश्वास में बना रहा।
28विश्वास ही से उसने फ़सह और खून
छिड़कने की विधि मानी, ताकि पहिलौठों
का नाश करने वाला इस्राएलियों पर हाथ
न डाले।
29विश्वास ही से इस्राएली लाल समुद्र
के पार ऐसे उतर गए, जैसे सूखी ज़मीन पर
से। परन्तु जब मिस्रियों ने वैसा ही करने की
कोशिश की, तो सब डूब मरे थे।
30विश्वास ही से, सात दिन तक चक्कर
लगाने के बाद यरीहो की शहरपनाह गिर
पड़ी।
31विश्वास ही से राहाब वेश्या आज्ञा न
मानने वालों के साथ नाश नहीं हुई, इसलिए
कि उसने भेदियों को सुरक्षा दी थी।
32अब और क्या कहूँ? क्योंकि अभी
समय नहीं है, कि गिदोन का, बाराक
का, शिमशोन का, यिफ़तह का, दाऊद
का, शमूएल का, और भविष्यद्वक्ताओं
का वर्णन करूँ। 33इन्होंने विश्वास ही के
द्वारा राज्य जीते, सही काम किए, प्रतिज्ञा
की हुई चीजें प्राप्त कीं, शेरों के मुँह बन्द
किए, 34आग की लपटों को ठंडा किया,
तलवार की धार से बच निकले, कमज़ोरी
में बलवन्त हुए, लड़ाई में बहादुर निकले,

11:27 "बिना रहा"- निर्ग. 2:14 में लिखा है, कि मूसा इसलिए भयभीत हो गया क्योंकि उसके कार्यों के विषय में जिनका वर्णन 11,12 पद में है, लोगों को मालूम हो गया था। उसने यह महसूस किया कि उस से उसके लोगों को और अधिक कठिनाई होगी। इसलिए उनके डर के कारण वह भागा, न कि अपने जीवन को बचाने के लिये। डर के कारण नहीं, किंतु विश्वास से उसने मिस्त्र छोड़ा। सच्चा विश्वास सदा परमेश्वर के किसी वचन पर आधारित होता है। मूसा ने मिस्त्र देश इसलिए छोड़ा था, क्योंकि उसे यह मालूम था कि परमेश्वर ने उस से ऐसा करने के लिये कहा था। वह विश्वास में बना रहा (10:39) और उसने अनदेखे परमेश्वर को देखा (पद 1; 2 कुरि. 4:18)। विश्वास लोगों को आत्मिक आँखें देता है।

11:28 निर्ग. 12:1-30 देखें। यहाँ परमेश्वर की सज़ा से आज़ादी और विश्वास दिखायी देता है। तुलना करें पद 7; 9:27-28; 1 कुरि. 5:7.

11:29 निर्ग. 14:15-31 । यहाँ विश्वास और दुश्मनों से आज़ादी है।

11:30 यहोशू 6:12-20 देखें। यहाँ विश्वास और जो परमेश्वर ने प्रतिज्ञा की है उसे ले लेने के बारे में बताया गया है। तुलना करें यहोशू 1:3; 1 यूहन्ना 5:14-15; मरकुस 11:24.

11:31 यहोशू 2:1-21; 6:24-25 देखें। यहाँ वह विश्वास है जो बड़े पाप और अज्ञानता पर विजय हासिल करता है और परमेश्वर की सज़ा से छुटकारा भी देता हे (तुलना करें गल.3:10-14; यूहन्ना 5:24)।

"आज्ञा न मानने वालों के साथ" या "विश्वास करने से इन्कार"- यूनानी शब्द दोनों की ही ओर इशारा करता है। देखें यूहन्ना 3:36.

11:32 पुराने नियम से लेखक ने और कई एक उदाहरण दिये होते, किंतु यह आवश्यक नहीं था। उसने यह दिखाया है कि सच्चा विश्वास क्या है और यह क्या करता है। वह यहाँ विश्वास के अनेक योद्धाओं का वर्णन करता है और दिखाता है कि उनके विश्वास ने किस तरह काम किया, प्राप्त किया और उन्हें संभाला (पद 4 की टिप्पणी)।

11:33-38 ये पद वे बातें दिखाते हैं जिन्हें पुराने नियम के विश्वासियों ने प्राप्त किया और वे आठ बातें जिन्हें उन्हों ने सहा। उनके ईमान के विषय में भी जो उम्मीद की हुई चीज़ों के प्रति था, जिससे उन्हें वह सब सहने की योग्यता मिली, जो उन्हों ने सहा।

11:33 "राज्य"- गिनती 21:23-35; यहोशू 12:7-24; 2 शमू. 8:1-14.

"प्रतिज्ञा की हुई चीज़े प्राप्त कीं"- पुराने नियम में वे सभी प्रतिज्ञाएँ जो परमेश्वर ने दी थी, इसलिए दी गई, क्योंकि कोई न कोई (अधिकारी) उन पर विश्वास करने के लिये इस पृथ्वी पर था।

"शेरों"- दानि. 6:16-22.

11:34 "आग"- दानि. 3:19-27.

"तलवार"- 1 शमू. 17:45-50.

"बलवंत हुए"- न्यायियों 6:15; 7:7-8; 16:21,28-30; 2 इति. 14:11; यशा. 40:31. तुलना करें 2 कुरि. 12:9-10.

विदेशियों की फ़ौजों को मार भगाया।
35महिलाओं ने अपने मरे हुओं को फिर
ज़िन्दा पाया। बहुत से मार खाते-खाते मर
भी गए, और आज़ादी न चाही, इसलिए
कि उत्तम पुनरुत्थान के भागी हों। 36कई
एक ठट्ठों में उड़ाए जाने, और कोड़े खाने,
वरन् बान्धे जाने, और कैद में पड़ने के
द्वारा परखे गए। 37उन पर पथराव हुआ,
वे आरे से चीरे गए, उनकी परीक्षा की गई,
तलवार से मारे गए, वे गरीबी में और क्लेश
में और दुख भोगते हुए भेड़ों और बकरियों
की खालें ओढ़े हुए, इधर उधर मारे-मारे
फिरे। 38वे जंगलों, पहाड़ों, गुफ़ाओं, और
पृथ्वी की दरारों में भटकते फिरे। संसार
उनके लायक न था,
39और इन सभी ने विश्वास के द्वारा
अच्छी गवाही तो पाई, लेकिन तौभी उन्हें
प्रतिज्ञा की हुई वस्तु न मिली। 40क्योंकि
परमेश्वर ने हमारे लिए पहले से एक बेहतर
बात ठहराई थी, कि वे हमारे बगैर सिद्ध
न किए जाएँ।

12इस कारण जब कि गवाहों का
ऐसा बड़ा बादल हमको घेरे हुए
है, तो आओ, हम हर एक बोझ को और
उस गुनाह को जो हमें आसानी से जाल में

11:35 "अपने मरे हुओं को फिर ज़िन्दा पाया"- 1 राजा 17:17-24; 2 राजा 4:32-37.

"आज़ादी न चाही"- यदि दुष्टता और अविश्वास के साथ समझौते की बात थी, तो उन्हों ने छुटकारा न चाहा।

"उत्तम पुनरुत्थान"- अनन्त जीवन के लिये भविष्य का पुनरुत्थान, जो कि उपरोक्त दो स्त्रियों के जिलाए गए पुत्रों के जिलाये जाने से कहीं अधिक बेहतर है।

11:36 "कैद में पड़ने"- उत्पत्ति 39:20; यिर्म. 37:15-16; 38:6.

11:37 "पथराव हुआ"- मत्ती 23:27.

"आरे से चीरे गए"- ऐसा माना जाता है कि यशायाह के साथ ऐसा हुआ।

"परीक्षा की गई"- यह बात उस समय से सभी विश्वासियों और विश्वास के वीरों के विषय में सत्य है। इस सूची मे दी गई बातों में हम सभी की परीक्षा शायद न हो, लेकिन हम सभी अनेकों परीक्षाओं और प्रलोभनों का सामना करेंगे।

"गरीबी, क्लेश, दुख"- प्रायः इतिहास में हुए लोगों के विषय में यह बात सत्य है। तुलना करें यूहन्ना 15:18-21; 16:2-3,33; रोमि. 8:35-37; 1 कुरि. 4:11-13.

11:38 संसार ने उनके साथ ऐसा बर्ताव किया मानों वे इसके लायक हों, लेकिन सच्चाई इसके खिलाफ़ थी। वे पृथ्वी पर कोई घर प्राप्त न कर सके, लेकिन परमेश्वर ने उनके लिये स्वर्ग में घर तैयार किया था।

11:39 "अच्छी गवाही"- पद 2

"प्रतिज्ञा की हुई वस्तु"- पद 10,16. लेखक उस प्रतिज्ञा की हुई वस्तु की ओर इशारा कर रहा है, जो मसीह लाने वाले थे - 1:14; 6:12; 9:15.

11:40 "बेहतर बात"- इस में वे सभी बातें निहित हैं जो इस पत्र में दिखायी देती हैं - 7:19; 8:6; 9:23. परमेश्वर की योजना थी और है भी कि जो विश्वासी मसीह के पहले जीवित थे और जिन्होंने बाद में विश्वास किया, वे सभी एक साथ अपनाए जाएं। मसीह का बलिदान उनके और हमारे लिये समान है और किसी भी व्यक्ति की सिद्धता के लिये एक उपाय है - 10:14; रोमि. 3:25-26. पूर्ण सिद्धता मसीह के आने के पश्चात आएगी - रोमि. 8:23-30; 1 थिस्स. 4:15-17; 1 यूहन्ना 3:2.

12:1-2 यहाँ हमारे पास गवाहों की एक बड़ी भीड़ है (अध्याय 11 के विश्वासी), वे रुकावटें जिनसे हमें दूर रहना है (गुनाह, आदि), जिस दौड़ में हम दौड़ रहे हैं उसका सिद्धान्त (धीरज के साथ दौड़ना), और वह बड़ा आदर्श जिसकी ओर हमें देखना है, अर्थात् यीशु। लेखक बताना चाहता है कि आखिर में एक बड़ा पुरस्कार होगा।

"गवाह"- यूनानी भाषा में इसका अर्थ है, वे लोग जो उन बातों की गवाही देते हैं जिन्हें उन्हों ने देखा या अनुभव किया है। बाईबल में हम जहाँ कहीं देखते हैं, ये गवाह अध्याय 11 के विश्वासी दिखाई देते हैं। पवित्र वचन के पन्नों में से वे हमें देख रहे हैं और हमें साक्षी देते हैं। वे हमसे कहते हैं कि विश्वास का जीवन भला है, उसके पुरस्कार बड़े हैं। वे यह भी कहते हैं कि प्रत्येक बाधा पर विजय हासिल की जा सकती है।

"हर एक बोझ"- हमारी विश्वास की दौड़

फँसाता है, दूर करें, और वह दौड़ जिसमें हमें दौड़ना है, धीरज से दौड़ें, 2और विश्वास की शुरूआत करने वाले और मज़बूत करने वाले यीशु की ओर ताकते रहें, जिन्होंने उस खुशी के लिए जो उनके आगे रखी थी, शर्म की कुछ परवाह न करके, क्रूस का कष्ट सहा, और सिंहासन पर परमेश्वर के दाहिने जा बैठे।

3इसलिए उन पर ध्यान करो, जिन्होंने अपने विरोध में गुनाहगारों की इतनी दुश्मनी सह ली, कि तुम निराश होकर हिम्मत न छोड़ दो। 4तुम ने गुनाह से लड़ते हुए उससे ऐसा मुकाबला नहीं किया, कि तुम्हारा खून बहा हो। 5और तुम उस उपदेश

में उलझाने वाली वस्तु वह है जो हमारी गति धीमी कर देती है, हमारा ध्यान भटका देती है, बाधक होती है या दौड़ को मुश्किल कर देती है या हमारे जीतने के फ़ैसले को हम से छीन लेती है। यह आलस्य, सांसारिकता, अनुशासन का अभाव, निराशा या और कुछ भी हो सकता है। सब से बुरी रुकावट 'गुनाह' है। ऐसा लगता है कि लेखक विशेष गुनाह के विषय में सावधान करता है - "गुनाह जो आसानी से हमें फँसा लेता है।" - ऐसा लगता है कि लेखक अविश्वास की ओर इशारा करता है, हालांकि कुछ लोग सोचते हैं कि वह सब तरह के गुनाह की ओर इशारा कर रहा है। विश्वासियों की दौड़ में 'अविश्वास' सब से बड़ी रुकावट है और प्रत्येक दौड़ने वाले की एड़ी में यह चुभता है।

12:2 "शुरूआत"- यदि हमारे पास विश्वास है, तो वही इसे उत्पन्न करने वाला है। (इफ़ि. 2:8; फ़िलि. 1:29)।

"मज़बूत करने वाला"- यीशु वह हैं, जो उनको आमने सामने देखने के दिन तक हमारे विश्वास को बढ़ाएँगे (10:39; लूका 22:32; फ़िलि. 1:6)। जिस कार्य का उन्होने आरम्भ किया है, उसे वह पूरा भी करते हैं।

"यीशु की ओर ताकते रहें"- यीशु स्वर्ग में हैं, किन्तु विश्वास से हम अपनी आँखें उनकी ओर लगा सकते हैं (11:1,27; 2 कुरि. 4:18)।

"खुशी"- यीशु किस तरह से सह सके - 2 कुरि. 5:21; 1 पतर. 2:24; यशा. 53:5,10. दूसरी ओर उनके लिये आनन्द इन्तज़ार कर रहा था (भजन 16:11)। उनका आनन्द क्या था? शायद पिता परमेश्वर को प्रसन्न करना और अपने कार्य को समाप्त करना (यूहन्ना 4:34)। शायद बहुत से बेटों को महिमा में आते हुए देखना (2:11)। अनन्त मुक्ति की प्राप्ति हेतु पापियों के लिये एक रास्ता खोलना (लूका 15:7,10)।

"शर्म"- क्रूस की मृत्यु सर्वाधिक शर्मनाक बात थी।

"बैठ"- 10:12; 1:3.

12:3 विश्वास के जीवन में विश्वासी के लिये यीशु सब से अच्छे उदाहरण हैं (1 पतर. 2:21-23)। अपने मन को उनके विचारों से भर लेना विश्वासी की दौड़ में बड़ा प्रोत्साहन है - देखें 3:1; कुल. 3:12.

"विरोध"- मत्ती 9:3,34; 12:14,24; 21:23,46; 22:15; 26:3-4,14-16,47-50,65-68; 27:20-23,27-31,35-44.

12:4 विश्वास का जीवन मात्र दौड़ नहीं है, यह एक युद्ध है (इफ़ि. 6:10-18; 2 तीमु. 2:3; 4:7)। गुनाह शत्रु है। यह भीतर और बाहर से लड़ता है (1 यूहन्ना 1:8; रोमि. 7:17-18)। इसके विरुद्ध युद्ध रोक देना समस्या का बुलावा करना है।

12:5-13 हालांकि अपने विश्वास के लिये उन्हों ने अपने प्राण नहीं दिए थे (पद 4), उन्हों ने कई प्रकार से दुख उठाया था (10:32-34)। अविश्वासी यहूदियों ने उन से यह कहा होगा कि वे कष्ट इसलिए उठा रहे हैं क्योंकि परमेश्वर उन से इसलिए नाखुश थे क्योंकि उन्हों ने यहूदी धर्म की बातों को छोड़ दिया था। लेखक चाहता था कि लोग यह समझें कि मसीहियों के जीवन में कठिनाइयाँ और परेशानियाँ परमेश्वर के प्रेम का प्रतीक हैं, न कि उनकी नाखुशी का। परमेश्वर उनका अनुशासन कर रहे थे, क्योंकि वे उनकी संतान थे और वह उनकी भलाई के लिये वचनबद्ध थे। यहाँ पर हम डाँट के विषय में पाँच सच्चाईयाँ सीख सकते हैं (अनुशासन और ताड़ना द्वारा प्रशिक्षण)। प्रथम, विश्वासी इस से बच नहीं सकते। 'प्रत्येक बेटा' जिसे वह ग्रहण करते हैं, उसे अनुशासित करते हैं (पद 6)।

द्वितीय, उपयोग किया जाने वाला तरीका पीड़ामय होता है। यह छड़ी लगाने के समान है। इस से आनन्द नहीं, पीड़ा होती है (पद11)।

12:5-6 नीति. 3:11-12; अय्यूब 5:17; भजन 94:12; और 119:67,71,75 देखें.

को जो तुमको बेटों की तरह दिया जाता है, भूल गए हो, कि "हे मेरे बेटे, प्रभु की डाँट-डपट को तुच्छ न जानो, और जब वह तुम्हें घुड़कें तो धीरज न छोड़ना। 6क्योंकि प्रभु, जिससे प्यार करते हैं, उसको डाँटते-डपटते भी हैं, और जिसे बेटा बना लेते है, उसको छड़ी भी लगाते हैं।"

7तुम दुख को डाँट-फटकार समझकर सह लो। परमेश्वर तुम्हें बेटा-बेटी जानकर तुम्हारे साथ बर्ताव करते हैं। वह कौन सा बेटा-बेटी है, जिसकी ताड़ना पिता नहीं करता? 8यदि वह डाँट- डपट जिसके हिस्सेदार सब हुए हैं, तुम्हारी नहीं हुई, तो तुम बेटे-बेटी नहीं, पर व्यभिचार की सन्तान ठहरे! 9फिर जब कि हमारे संसारिक पिता भी हमें डाँटा फटकारा करते थे और हम उन्हें आदर देते थे, तो क्या हम आत्माओं के पिता के और भी आधीन न रहें, जिससे

12:6 "छड़ी भी लगाते हैं"- यह मत्ती 10:17; मरकुस 10:34; लूका 18:33 में उपयोग किया गया है। हालांकि परमेश्वर स्वयं वास्तविक कोड़े का उपयोग नहीं करते है, किंतु उनकी डाँट और अनुशासन हमारे हृदय और मन पर इस प्रकार से होती है जैसे शरीर पर कोड़े लगाए जाने से पीड़ा होती है। लोग हमें वास्तविक कोड़े से पीड़ा दे सकते हैं, जो परमेश्वर हमारे अनुशासन के लिये उपयोग में लाते हैं।

तीसरा, यह अनुशासन एक निशान है। यह सिखाता है कि जिनको डाँट पड़ती है वे परमेश्वर की संतान हैं। यह इस बात का चिन्ह भी है कि वह विशेष रीति से हमारा ध्यान रखते हैं। जैसे कि आदर्श पिता करते हैं, वैसे ही वह प्रेम करते हैं और अनुशासन करते है (पद 8)। कुछ लोग सोचते हैं कि यदि परमेश्वर हमसे प्रेम करते होते तो ऐसा व्यवहार नहीं करते, किंतु वह ऐसा करते हैं क्योंकि वह हमसे प्रीति रखते हैं।

चौथा, परमेश्वर द्वारा अनुशासित किये जाने का एक अद्‌भुत उद्देश्य है - हमारी भलाई, हमारी पवित्रता (गलत बातों से अलग करते जाना) पद 10.

पाँचवीं, जो लोग धीरज से प्रतीक्षा करते हैं (पद 7), आधीन हो जाते हैं (पद 9) और सहते रहते हैं (पद 11), उन्हें इसका प्रतिफल प्राप्त होता है।

परमेश्वर के अनुशासन या "कोड़े मारे जाने" के प्रति हमारे तीन प्रकार के रवैये हो सकते हैं। तुच्छ जानना, अस्वीकार करना या हताश होना हम परमेश्वर के प्रति आधीन होकर प्रशिक्षण पा सकते हैं। चुनाव यह होता है कि हम अस्वीकार करें या स्वीकार करें। लेखक यह नहीं बताता कि परमेश्वर हमारा अनुशासन करने के लिये किन माध्यमों का उपयोग करते हैं, लेकिन उनके मन में क्या वे सब बातें नहीं थीं जिनका वर्णन वह 10:32-34; 11:35-38; में करता है? 1 कुरि. 11:29-32; 2 कुरि. 12:7-10; 1 पतर. 1:6-7 भी देखें। तुलना करें भजन 66:10-12 और भजन 73 देखें, जहाँ परमेश्वर का एक जन अपने अनुशासन के समय के अनुभव का वर्णन करता है।

12:7-8 ऐसा लगता है कि सच्चे विश्वासी दूसरे अन्य लोगों से अधिक परेशानियों का सामना करते हैं (भजन 73:2-14)। यहाँ उसका कारण भी है। परमेश्वर उन से बेटे के रूप में व्यवहार करते हैं। एक व्यक्ति जो अपने आपको मसीही समझता है, उसे यह चिन्ता नहीं करनी चाहिये कि परमेश्वर उसका अनुशासन कर रहे हैं। उसे तब परेशान होना चाहिये जब उसका अनुशासन नहीं होता है। परमेश्वर शैतान की संतान का अनुशासन नहीं करते हैं। उनके ऊपर उनका क्रोध बना रहता है। वह उन्हें सज़ा देते हैं और प्रत्येक का निश्चित समय पर न्याय करते हैं।

12:9 "संसारिक पिता"- नीति. 13:24; 19:18; 22:15; 23:13-14.

"आदर"- जब माता-पिता स्नेह से अपने बच्चों का अनुशासन करते और सज़ा देते हैं, बच्चे समझते हैं और उनका सम्मान करते हैं। यदि माता-पिता अनुशासन नहीं करते हैं तो वे सोचते हैं कि माता-पिता सचमुच में प्रेम करते भी हैं या नहीं।

"आत्माओं के पिता"- यह बाईबल में मात्र एक बार आया है (इस से मिलती जुलती बात हमें गिनती 16:22; 27:16 में मिलती है)। ऐसा लगता है कि लेखक पार्थिव पिता और स्वर्गिक पिता की तुलना कर रहा है। वे अपने बच्चों के शरीर को पीड़ा देते हैं, स्वर्गिक पिता अपनी संतानों के भीतरी मन को बदलना चाहते हैं।

जीते रहें। 10शारीरिक पिता तो अपनी समझ के अनुसार थोड़े दिनों के लिए अनुशासन करते थे, परन्तु परमेश्वर तो हमारे फ़ायदे के लिए करते हैं, कि हम भी उनकी पवित्रता के हिस्सेदार हो जाएँ। 11इन दिनों में हर प्रकार की डाँट- फटकार आनन्द की नहीं, परन्तु शोक ही की बात दिखाई पड़ती है, तौभी जो उसको सहते-सहते पक्के हो गए हैं, बाद में उन्हें चैन के साथ सही जीवन जीने का प्रतिफल मिलता है।

12इसलिए ढीले हाथों और कमज़ोर घुटनों को सीधे करो, 13और अपने पाँवों के लिए सीधे रास्ते बनाओ कि लँगड़ा भटक न जाए, परन्तु ठीक हो जाए।

14सब से मेल मिलाप रखो, और उस पवित्रता (सही जीवन) के खोजी हो जिसके

12:10 "फ़ायदे"- रोमि. 8:28.

"पवित्रता"- परमेश्वर चाहते हैं कि उनकी संतान इस संसार की नैतिक अशुद्धता से शुद्ध की जाए (2 कुरि. 6:17) ताकि वे पाप से लड़ते हुए उस पर विजय हासिल करने के साथ अपने अन्दर में अधिक खरे बन सकें (मत्ती 5:8)। इस दृष्टिकोण को सामने रखते हुए वह उन्हें अनुशासित करते ताड़ना देते और दण्ड देते हैं। जब समस्याएँ इस प्रकार का प्रतिफल लाती हैं तो उनका स्वागत करना चाहिये। यदि परमेश्वर की पवित्रता में और अधिकता में भागीदार होने और हमें शुद्ध करने में हमें कुछ पीड़ा सहनी पड़े तो कोई बात नहीं।

यहाँ देखें कि उनकी पवित्रता के भागीदार होने के लिये परमेश्वर अपने बच्चों को किस प्रकार योग्यता देते हैं - ऐसा वह जीवन में एक बार असाधारण अनुभव देकर नहीं करते हैं। वह अनुशासित करने का कार्य जारी रखते है और निस्संदेह जब तक हम इस संसार को न छोड़ें, करते रहते हैं। अय्यूब 3:20 की टिप्पणी में स्पष्ट है कि अनुशासन के कुछ और लाभ हैं।

12:11 यही एक फ़सल है जिसकी इच्छा सभी विश्वासियों को होती है (मत्ती 5:6)। इसलिए अनुशासन, ताड़ना और सज़ा आदि जिसका उपयोग परमेश्वर इस फ़सल को उत्पन्न करने में करते हैं, हमें ग्रहण करना चाहिये।

"सहते-सहते पक्के हो गये हैं"- समस्याओं और दुखों के कारण हम अपने सम्बन्ध में दुख महसूस करते हैं और निराश हो जाते हैं। बजाए इसके हमें अपना परीक्षण कर के, ताड़ना का कारण ज्ञात कर के अपने आपको सुधारना चाहिये। विलाप. 3:40 से तुलना करें।

12:12-16 "इसलिए"- लेखक विश्वासियों से चार बातों को करने के लिये कहता है, "सीधे करो" (पद 12), "सीधे रास्ते बनाओ" - (पद 13), "खोजी हो" - (पद 14), "ध्यान से देखते रहो"- (पद 15)। यदि परमेश्वरीय अनुशासन कुछ अपेक्षा से है, तो हमें मात्र निष्क्रिय रहने के बजाए पूर्ण रूप से उनके साथ सहयोग करना चाहिये।

12:12 "सीधे करो"- यदि किसी व्यक्ति के घुटने मुड़े हैं और हाथ सीधे लटक रहे हैं, तो वह व्यक्ति भली रीति से कैसे दौड़ में भाग ले सकता है (पद 1)? मसीह में परमेश्वर के पास हमारे लिये सामर्थ है और हमें इसे उपयोग में लाना सीखना चाहिये। देखें भजन 29:11; 73:26; 105:4; इफ़ि. 1:18-19; 6:10; कुल. 1:11-12,29.

12:13 "सीधे रास्ते बनाओ"- अच्छी तरह दौड़ने के लिये यह ज़रूरी है कि सीधा और समतल मार्ग हो। यह हम पर निर्भर है कि हमें ऐसा मार्ग प्राप्त होता है या नहीं। यदि हम अपने जीवन में दुष्टता को रहने देंगे तो हम जीत नहीं हासिल कर पाएंगे।

"लँगड़ा भटक न जाए"- नीति. 4:25-27 परमेश्वर के अनुशासन के मार्ग पर स्वास्थ्य है, यदि हम आधीन हो जाएँ। शोक की बात यह है कि बहुत से मसीही लंगड़े पैरों से दौड़ने का प्रयत्न कर रहे हैं।

12:14 "मेल मिलाप"- मत्ती 5:9; रोमि. 12:18.

"पवित्रता"- पद 10 - पवित्रता के लिये प्रयत्न आवश्यक है। अधिक प्रयास (रोमि. 8:13; 1 कुरि. 9:27; 2 कुरि. 7:1; गल. 5:16-18; इफ़ि. 4:22-32; कुल. 3:5; इब्रा. 12:4,10-13; 1 पतर. 1:13-16; 2 पतर. 1:5-8)। पवित्रता के पीछे लगे रहना है यह जानकर कि ऐसा करना उचित है।

पवित्रता एक अति आवश्यक बात है (मत्ती 5:8; 1 कुरि. 6:9-11)। जो लोग संसार, शरीर और शैतान के अनुसार जीते हैं और अपने आपको मसीही कहते हैं और परमेश्वर के पवित्र स्वर्ग में स्वागत की अपेक्षा कर रहे हैं वे भयानक रीति से आश्चर्य में पड़ जाएँगे। लैव्य. 20:8; यूहन्ना 17:17-19 में पवित्रता पर नोट्स देखें।

"खोजी हों"- एक बार हम पुनः देखते हैं कि हमारा व्यक्तिगत प्रयास सम्मिलित है। जीवन में यों ही लहरों से बहाए जाने वाले जीवन का स्वप्न हमें नहीं देखना चाहिये।

बिना कोई प्रभु को बिल्कुल न देखेगा।
15और ध्यान से देखते रहो, ऐसा न हो,
कि कोई परमेश्वर की कृपा (अनुग्रह)
से वंचित रह जाए, या कोई कड़वी जड़
फूटकर दुख दे, और उसके द्वारा बहुत
से लोग अशुद्ध हो जाएँ। 16ऐसा न हो,
कि कोई जन व्यभिचारी, या एसाव की
तरह टेढ़ा हो, जिसने एक निवाले के
बदले अपने पहिलौठे होने का पद बेच
डाला। 17तुम जानते तो हो, कि बाद
में जब उसने आशीष पानी चाही, तो
वह अयोग्य गिना गया, और आँसू बहा
बहाकर चाहने पर भी मन बदलाव का
अवसर उसे न मिला।

18जब परमेश्वर ने सीनै पहाड़ पर
नियमशास्त्र दिया था, उस समय जलती
आग, अन्धेरा, काली घटा और बवन्डर
था, ऐसे पहाड़ के पास तुम नहीं आए
हो। 19न ही तुम ने बिगुल (तुरही) की सी
आवाज़ में डरावना सन्देश सुना, कि तुम्हें
परमेश्वर की दोहाई देनी पड़ी हो कि वह
तुम से बातें न करें,20क्योंकि वे उस आज्ञा
को न सह सके, "कि यदि कोई पशु भी
पहाड़ को छुए, तो उसे पत्थरवाह किया
जाए।" 21और वह दर्शन ऐसा डरावना
था, कि मूसा ने कहा, "मैं बहुत डरता

12:15 "ध्यान से देखते रहो"- यह संभव है कि कलीसिया के कुछ लोग परमेश्वर की कृपा से अनजान रहें - तुलना करें 2 कुरि. 6:1; गल. 5:4,7. लेखक अपने पवित्रता के विषय को जारी रखता है। वह यह जानता है कि पवित्र होने का मात्र उपाय परमेश्वर की कृपा है और यदि एक व्यक्ति उसका ध्यान नहीं रखता है तो वह इस एक मार्ग के सम्बन्ध में अनजान रहेगा। यदि ऐसा होता है तो कड़वाहट की जड़ें मन में और चर्च में निकल सकती हैं। यदि सावधानी न बरती जाए तो किसी भी चर्च में झगड़े, विभाजन, बुरा बोलना, बदला लेना आदि हो सकता है जिससे सभी प्रभावित होंगे। कुछ सीमा तक कुरिंथ और गलातिया की कलीसिया (चर्च) में ऐसा हो रहा था।

12:16 ऐसी बहुत सी बातें है जिन्हें हमें चर्च में देखते रहना चाहिये। बाईबल में हम गलत राह पर चलने की भयंकर सम्भावनाओं को देखते हैं।

"एसाव"- उत्पत्ति 25:24-34. वह ऐसे लोगों का नमूना है, जो कृपा से वंचित रह जाते हैं। एसाव ने जन्म अधिकार के और इस से जुड़ी प्रतिज्ञाओं के महत्व को न जाना।

"टेढ़ा"- यूनानी शब्द का अर्थ "अशुद्ध" - है। एसाव ऐसा ही व्यक्ति था जिसे आत्मिक बातों में कोई रुचि नहीं थी। वह ऐसे लोगों का नमूना है जो देह की बातों पर मन लगाते हैं (रोमि. 8:5-8), जो परमेश्वर के बजाए खुद को प्रसन्न करना माँगते हैं। क्या हमारी कलीसिया में और कलीसिया के अगुवों के बीच आज ऐसे लोग नहीं हैं? जब तक ऐसे लोगों के जीवन में पूर्ण बदलाव नहीं आता, तब तक उनका अन्त एसाव के समान ही होगा - वे परमेश्वर द्वारा तुच्छ ठहराये जायेंगे। तुलना करें मला. 1:3.

12:17 "बाद में"- उत्पत्ति 27:30-40.

"मन बदलाव"- शायद इसका मतलब है कि उसने अपने पिता के मन को बदलना चाहा, जिसने याकूब को आशीष दे दी थी। कुछ लोग सोचते हैं कि एसाव ने अपने मन को बदलने का प्रयत्न किया, किंतु यह सही नहीं लगता है।

12:18 "पहाड़"- सीनै पर्वत। इस पद में वर्णित बातें और अगले दो पदों की सच्चाइयाँ निर्ग. 19:16-19; 20:18,21 और व्यव. 4:11 पर निर्भर हैं।

"नहीं आए"- मसीह में विश्वासी होने के नाते वे यहूदी नियम के अन्तर्गत नहीं थे - रोमि. 6:14. विश्वासियों ने पिता के साथ संगति के लिये यहूदी प्रबन्ध को एक उपाय के रूप में देखना भी नहीं चाहिये।

12:19-20 यह सब कुछ संकेत है कि परमेश्वरीय नियमावली का दिया जाना भयानक बात है। निर्ग. 19 पर नोट्स देंखें।

12:21 यहाँ पर मूसा द्वारा कहीं बातें, बाईबल में और कहीं नहीं हैं। मूसा की कही बातों को पवित्र आत्मा जानता था और किसी न किसी प्रकार पत्री के लेखक पर प्रगट की गयीं।

और काँपता हूँ।"

22परन्तु तुम सिय्योन के पहाड़ के पास, और जीवित परमेश्वर के नगर स्वर्गिक यरूशलेम के पास, 23और लाखों स्वर्गदूतों और उन पहिलौठों की साधारण सभा और चर्च (कलीसिया) या जिन लोगों के नाम स्वर्ग में लिखे हुए हैं, और सब के न्यायी परमेश्वर के पास, और मुक्ति पाए हुए उन लोगों की आत्माओं के पास जिन्हें निर्दोष ठहराया गया, 24और नई वाचा के मध्यस्थ यीशु, और छिड़काव के उस खून के पास आए हो, जो हाबिल के खून से उत्तम बातें कहता है।

25सावधान रहो, और उस कहने वाले से मुँह न फेरो, क्योंकि वे लोग यदि पृथ्वी पर के चेतावनी देने वाले से मुँह मोड़कर न बच सके, तो हम स्वर्ग पर से चेतावनी देने वाले की अनसुनी करके कैसे बच सकेंगे? 26उस समय तो उनके शब्द ने पृथ्वी को हिला दिया, परन्तु अब परमेश्वर ने यह वायदा किया है कि एक बार फिर मैं केवल पृथ्वी को नहीं, वरन् आकाश को भी हिला दूँगा।

27यह वाक्य 'एक बार फिर' इस बात को प्रगट करता है, कि जो वस्तुएँ हिलाई जाती हैं, वे बनायी हुई वस्तुएँ होने के कारण

12:22 "सिय्योन के पहाड़ के पास"- लेखक मसीह में विश्वास और मसीह द्वारा स्थापित नए प्रबन्ध के आशीषित कारणों को दिखाता है। वह स्वर्गिक सिय्योन पर्वत, जो कि पार्थिव शहर की आत्मिक सच्चाइयों की वास्तविकता थी, उसकी छाया के विषय में बताता है।

"स्वर्गिक यरूशलेम"- गल. 4:26; प्रका. 21:10.

12:23 "पहिलौठा"- जो लोग महान पहिलौठों से जुड़ चुके हैं - देखें रोमि. 8:29; कुल. 1:15,18; प्रका. 1:5.

"साधारण सभा"- यूनानी में इसका अर्थ सात लोगों की सामान्य सभा, आराधना की सभा या सार्वजनिक उत्सव था।

"स्वर्ग में लिखे हुए"- लूका 10:20; प्रका. 21:20.

"न्यायी"- भजन 50:4-6; 96:13; यशा. 33:22; प्रे.काम 17:31; रोमि. 2:16.

"मुक्ति... आत्माओं"- जो लोग विश्वास में मर चुके हैं और मसीह के बलिदान से सिद्ध किए गए हैं (इब्रा. 10:10,14) और परमेश्वर की मौजूदगी में बिना कलंक के हैं।

12:24 "नई वाचा"- 8:8-13; मत्ती 26:26-28.

12:24 "मध्यस्थ यीशु"- 8:6; 9:15; 1 तीमु. 2:5. इस दुनिया के परमेश्वर के पास हम मात्र यीशु के द्वारा ही आ सकते हैं (10:19-22)।

"छिड़काव के उस खून"- 9:14; 10:22; 1 पतर. 1:2.

"हाबिल"- उत्पत्ति 4:1. हाबिल का खून उस व्यक्ति पर की सज़ा और बदले के लिये पुकारता रहा, जिसने उसे बहाया था। मसीह का खून छुटकारे और क्षमा के विषय बात करता है - इफ़ि. 1:7. 18-24 पदों में लेखक ने स्पष्ट भाषा में दिखाया है कि नया प्रबन्ध पुराने प्रबन्ध से कितना बेहतर है। पुरानी डर और सज़ा के विषय है, नयी प्रबन्ध, दया, परमेश्वर तक पहुँच और अनन्त आशीष के विषय है।

12:25-29 इस पत्र में यहाँ विश्वास त्याग के विषय में चेतावनी है (2:1-4; 3:7-19; 6:4-8; 10:26-31)। यह नयी वाचा के परमेश्वर के प्रकाशन के विरोध में खड़ा होना है।

12:25 "कहने वाले"- परमेश्वर हैं (1:1-2)।

"यदि"- देखें 6:6; 10:26.

"पृथ्वी"- सीनै पर्वत पर मूसा से परमेश्वर ने बातें कीं।

"स्वर्ग"- अपने बेटे के द्वारा उन्हों ने ऐसे बातचीत की जैसे कि स्वर्ग से (यूहन्ना 1:18; 8:23; 12:49-50)। जिन्होंने मूसा के द्वारा दिये गये परमेश्वर के वचन की अनसुनी की, वे बच न सके। इसलिए मसीह की बातों को अस्वीकार करने से कौन बचेगा (2:3; 10:28-29; यूहन्ना 12:48)।

12:26 "पृथ्वी को हिला दिया"- निर्ग. 19:18.

"आकाश"- हाग्गै 2:6.

12:27 1:10-12 देखें। प्रका. 6:12-14; 21:1. आने वाले समय में भौतिक सृष्टि जाती रहेगी, किंतु परमेश्वर का राज्य या जो नई वाचा के कारण आया है, वे बातें जो 22-24 पदों में हैं, कभी भी नहीं टलने की।

टल जाएँगी, ताकि जो वस्तुएँ हिलाई नहीं जाती, वे अटल बनी रहें।

28इस कारण हम इस राज्य को पाकर जो हिलने का नहीं आभारी हों और उस मौके को हाथ से न जाने दें, जिसके द्वारा हम भक्ति, और डर सहित, परमेश्वर की ऐसी आराधना कर सकते हैं जिससे वह खुश होते हैं। 29क्योंकि हमारे परमेश्वर भस्म करने वाली आग हैं।

13 भाईचारे का प्यार बना रहे। 2मेहमान-नवाज़ी करना न भूलना, क्योंकि इसके द्वारा कितनों ने अनजाने स्वर्गदूतों की आवभगत की है। 3कैदियों का ऐसा ध्यान रखो कि मानो उनके साथ तुम भी कैद में हो। जिनके साथ बुरा बर्ताव किया जाता है, उनका भी यह समझकर ध्यान रखा करो कि हमारी भी देह है।

4विवाह सब में इज़्ज़त की बात समझी जाए, और बिछौना निष्कलंक रहे, क्योंकि परमेश्वर व्यभिचारियों, और परस्त्रीगामियों का इन्साफ़ करेंगे।

5तुम्हारा स्वभाव बिना लालच का हो, और जो तुम्हारे पास है, उसी पर सन्तोष करो, क्योंकि परमेश्वर ने आप ही कहा है, "मैं तुम्हें कभी न छोड़ूँगा, और न कभी

12:28 "राज्य"- मत्ती 4:17; रोमि. 14:17.

"डर"- उत्पत्ति 20:11; अय्यूब 28:28; भजन 34:11-14; 90:11; 111:10; नीति. 1:7. बिना परमेश्वर के आदर और इज़्ज़त और ईश्वरीय डर के बुद्धि नहीं मिलती और न ही इस प्रकार की आराधना परमेश्वर को ग्रहणयोग्य है।

12:29 "आग"- निर्ग. 3:2 के नोट्स देखें।

"भस्म करने वाली आग"- उस पवित्रता को दिखाती है जो इसके विपरीत की सभी बातों को नाश करती है। जो इन्साफ़ अविश्वासियों, प्रेम को भूलने वालों और उनकी वाणी न सुनने वालों पर आएगा वह भयानक होगा। तुलना करें 2 थिस्स. 1:7-8.

13:1 यूहन्ना 13:34; रोमि. 12:10; 13:8.

13:2 रोमि. 12:13; 1 पतर. 4:9; 3 यूहन्ना 1:5-8.

"स्वर्गदूत"- उत्पत्ति 19:2,22; 19:1-3. प्रायः स्वर्गदूत मनुष्यों के रूप में प्रगट होते हैं। यदि हम पहुनाई करेंगे, तभी किसी स्वर्गदूत की अनजाने में पहुनाई का घर में अवसर मिल सकता है।

13:3 लूका 6:31; रोमि.12:15; मत्ती 25:34-40. प्रेम हमें खुद को दूसरों के जगह पर रखने लायक बना सकता है ताकि हम उन बातों का अनुभव कर सकें और दया दिखा सकें।

13:4 "इज़्ज़त की बात"- मसीहियों में विवाह को आदरणीय समझना चाहिये क्योंकि इसे परमेश्वर ने ठहराया है (मत्ती 19:4-6)।

"व्यभिचारियों, और परस्त्रीगामियों का इन्साफ़"- प्रका. 21:8; कुल. 3:5-6; इफ़ि. 5:3-6; 1 कुरि. 6:9-10.

13:5 "लालच का"- देखें 1 तीमु. 6:9-10; मत्ती 6:19-20,24; लूका 12:15-21; 16:14; यूहन्ना 12:4-6.

"सन्तोष करो"- लूका 3:14; फ़िलि. 4:12; 1 तीमु. 6:6-8.

"मैं तुम्हें कभी न छोड़ूँगा"- व्यव. 31:6; मत्ती 28:20; यूहन्ना 14:16. संसार की दौलत से कहीं अधिक बढ़कर हमारे साथ परमेश्वर की उपस्थिति है। यदि वह हमारे साथ हैं तो वह हमारी ज़रूरतों को पूरा करेंगे (मत्ती 6:25-34; फ़िलि. 4:19) और भीतर उनकी उपस्थिति से हम सभी परिस्थितियों में सन्तुष्ट रहेंगे। परन्तु यदि विश्वासी गुनाह करे, तो क्या परमेश्वर उन्हें त्याग नहीं देंगे? क्योंकि वह कहते है कि मैं तुम्हें नहीं छोड़ूँगा, तो अवश्य ही नहीं छोड़ेंगे। इसका मतलब यह नहीं कि वे गुनाह करने के लिये आज़ाद हैं। उसके विपरीत प्रभु उन्हें आज़ाद करते है कि वे पवित्र बनें (रोमि. 6:1-2; 15:18)। किंतु क्या विश्वासी उन्हें छोड़ नहीं सकते? वे ऐसा नहीं करना चाहते हैं और न ही करते हैं (10:39; यूहन्ना 10:27)। कुछ लोग मसीही होने का दावा करते हैं, किंतु हैं नहीं, वे उन्हें छोड़ना चाहते हैं और छोड़ भी देते हैं। यदि सच्चे विश्वासी ने ऐसा करना भी चाहा जो कि वे नहीं करेंगे, तो यह बहुत कठिन होगा (देखें भजन 139:7-12)।

तुम्हें त्यागूँगा।"

6इसलिए हम बिना झिझक के कहते हैं, कि प्रभु मेरे सहायक हैं, मै न डरूँगा। इन्सान मेरा क्या कर सकता है?

7जो तुम्हारे अगुवे हैं, और जिन्होंने तुम्हें परमेश्वर का वचन सुनाया है, उन्हें याद रखो और ध्यान से उनके चाल चलन का नतीजा देखकर उनके विश्वास की नकल करो।

8यीशु मसीह कल और आज और युगानुयुग एक से हैं। 9अनेक प्रकार के और ऊपरी (अजीब) उपदेशों से न भरमाए जाओ, क्योंकि मन का अनुग्रह से स्थिर रहना भला है, न कि उन खाने की चीजों से जिनसे काम रखने वालों को कुछ फ़ायदा न हुआ। 10हमारी एक ऐसी वेदी है, जिस पर से खाने का हक उन लोगों को नहीं, जो तम्बू की सेवा करते हैं। 11क्योंकि जिन जानवरों का खून महा पुरोहित पाप-बलि के लिए पवित्र स्थान में ले जाता है, उन जानवरों की देह छावनी के बाहर जलाई जाती है।

12इसी कारण, यीशु ने भी लोगों को अपने ही खून के द्वारा पवित्र करने के लिए यरूशलेम के बाहर दुख उठाया। 13इसलिए आओ, उनकी निन्दा अपने

13:6 देखें भजन 118:6-7; रोमि. 8:31; मत्ती 10:28-31; भजन 27:1-3. मनुष्यों ने पहले ही उनके खिलाफ़ बहुत कुछ किया (10:32-34), लेकिन मनुष्यों के डर का उनके जीवन में स्थान नहीं था। जो कुछ मनुष्य कर सकते थे, वह क्षणिक था। यदि परमेश्वर उनके साथ थे, तो उनके लिये आशीषित अनन्त प्रतिज्ञा थी। तुलना करें 2 कुरि. 4:17-18.

13:7 "अगुवे"- वह शायद उनके विषय कह रहा है जिन्होंने पहले उन्हें सुसमाचार सुनाया।

"नकल- 1 कुरि. 4:16; 11:1; फ़िलि. 3:17; 1 थिस्स. 1:6; 2 थिस्स. 3:7,9.

13:8 मानवीय अगुवे जीवित रहते हैं, मरते हैं, आते हैं, जाते हैं। मसीह सदा एक से हैं (1:12)। महान प्रधान पुरोहित के रूप में उनकी सेवा वैसी ही है (7:24-25)। निस्संदेह मुख्य बात यहाँ यह है कि उसके चरित्र या लोगों के लिये उनकी प्रेम भरी सेवा में कोई बदलाव नहीं होगा। वह सदाकाल तक वही रहेंगे जो वह अनन्त से है, पुराने नियम में थे और इस पृथ्वी पर अपने जीवन काल में थे।

13:9 "ऊपरी (अजीब) उपदेशों"- इफ़ि. 4:14; रोमि. 16:17; प्रे.काम 20:20; मत्ती 7:15. स्पष्ट है कि लेखक के मन में रीति विधियों से सम्बंधित भोजन के आत्मिक मूल्य से सम्बन्धित यहूदी शिक्षाएँ थीं (तुलना करें रोमि. 14:2,14,21; 1 कुरि. 8:8; कुल. 2:8,16-23; लैव्य. 11:2-23 पर नोट्स देखें)। केवल परमेश्वर की कृपा आत्मिक जीवन का पोषण कर सकती है, भौतिक वस्तुएँ नहीं।

13:10 "ऐसी वेदी"- मसीह में विश्वासियों की कोई दिखने वाली, पदार्थिक वेदी नहीं है। लेखक मसीह के क्रूस के बलिदान की बात करता है। जो लोग मसीह को विश्वास से ग्रहण करते हैं, उनके पास नयी योग्यता है, रीति विधि वाला जीवन नहीं (यूहन्ना 6:53-58,63)। जो लोग पुराने यहूदी व्यवस्था में सेवा करते हैं और मसीह एवं नयी वाचा को अस्वीकार करते हैं उन्हें इस "वेदी" में कोई भाग नहीं है।

13:11 वह प्रायश्चित के दिन की ओर इशारा करता है - 9:7. लैव्य. 16:27 देखें। उस दिन बलिदान किए हुए पशुओं का माँस कोई नहीं खाता। यह भी निश्चित है कि मसीह की बलिदान की गई सचमुच की देह को कोई नहीं खा सकता। यह अविश्वसनीय है।

13:12 "पवित्र करने" - "पवित्र बनाना" या "अलग करना", "समर्पित करना" - 10:10. यीशु का खून विश्वासियों के लिये यही करता है।

"यरूशलेम के बाहर"- क्रूस का स्थान (गुलगुता या कलवरी) यरूशलेम शहर के बाहर था (मत्ती 27:32-33)।

13:13 "छावनी के बाहर"- यहूदी मत या पुरानी वाचा की विधि के बाहर।

"निन्दा" या "बदनामी"- 12:2. दोषी ठहराए हुए अपराधी क्रूस पर चढ़ाए जाते थे। यदि हम उनकी (मसीह की) मृत्यु को स्वीकार करते हैं तो हम यह मान रहे हैं कि हम ऐसे अपराधी हैं जो मृत्यु के योग्य हैं। विश्वासी लोग क्रूसित उद्धारकर्ता के क्रूसित लोग हैं (गल. 6:14), और यह कहने में उन्हें शर्माना भी नहीं चाहिये।

ऊपर लिए हुए यहूदी मत के बाहर उनके पास निकल चलें। 14 क्योंकि यहाँ हमारा कोई स्थिर रहने वाला शहर नहीं, वरन् हम एक आने वाले शहर की ताक में हैं।

15 इसलिए हम यीशु के द्वारा स्तुति रूपी बलिदान, अर्थात् उन होठों का फल जो उनके नाम का अंगीकार करते हैं, परमेश्वर के लिए हमेशा चढ़ाया करें। 16 भलाई करना, और उदारता न भूलो, क्योंकि परमेश्वर ऐसे बलिदानों से खुश होते हैं।

17 अपने अगुवों की मानो और उनके आधीन रहो, क्योंकि वे उन लोगों की तरह तुम्हारे लिए जागते रहते हैं, जिन्हें हिसाब देना पड़ेगा, कि वे यह काम आनन्द से करें, न कि दुःख से, क्योंकि इस दशा में तुम्हें कुछ फ़ायदा नहीं।

18 हमारे लिए प्रार्थना करते रहो, क्योंकि हमें भरोसा है कि हमारा विवेक शुद्ध है, और हम सब बातों में आदर के साथ जीवन बिताना चाहते हैं। 19 और इसके करने के लिए मैं तुम्हें और भी समझाता हूँ, कि मैं जल्दी तुम्हारे पास फिर आ सकूँ।

20 अब शान्तिदाता परमेश्वर जो हमारे प्रभु यीशु को, जो भेड़ों के महान रखवाले हैं, सनातन वाचा के खून के गुण से मरे हुओं में से जिलाकर ले आए, 21 तुम्हें हर

13:14 "शहर"- 11:10,16; 12:22.

13:15-16 पुरानी वाचा में पुरोहित बलिदान चढ़ाया करते थे। यहाँ लेखक संकेत देता है कि मसीह में सभी विश्वासी नयी वाचा के याजक हैं। देखें 1 पतर. 2:5,9; प्रका. 1:6. उनका बलिदान पशु नहीं है, न ही भौतिक वेदी पर भौतिक वस्तु, किंतु कुछ और बेहतर।

"स्तुति"- देखें भजन 33:1-3.

13:16 "भलाई करना"- नए नियम के पुरोहित होने के नाते विश्वासियों की यह अत्यन्त महत्वपूर्ण सेवा है। देखें मत्ती 5:16; 25:34-40; लूका 6:27,35; रोमि. 12:21; 2 कुरि. 9:8; गल. 6:10; कुल. 1:10; 2 थिस्स. 2:17; याकूब 1:27; 1 पतर. 2:12.

- मत्ती 5:42; रोमि. 12:13; गल. 6:6; 1 तीमु. 6:18; 1 यूहन्ना 3:17. परमेश्वर इस प्रकार की भेंटों से प्रसन्न होते हैं। तुलना करें 10:6; और दूसरी भेंट के लिये जो उन्हें प्रसन्न करती हैं, देखें रोमि. 12:1.

13:17 "अगुवों"- चर्च में अगुवे होने चाहिए और अगुवों के पास अधिकार होना चाहिए। उनका अधिकार परमेश्वर की ओर से आता है जो उन्हें नियुक्त करते हैं। लेखक जानते थे कि इब्री चर्च के अगुवे अच्छे थे। सभी अगुवे अच्छे नहीं होते हैं, और जो अगुवे परमेश्वर द्वारा प्रगट की गयी सच्चाईयों के अनुसार जीवन नहीं बिताते हैं (तुलना करें प्रे.काम 4:19; 5:29), और नये नियम की शिक्षा के अनुसार आज्ञा नहीं देते हैं, उनकी बातों को नहीं मानना चाहिए। चर्च के अच्छे अगुवे सदस्यों की देखभाल करते हैं - प्रे. काम 20:28; 1 पतर. 5:1-4.

"हिसाब"- कलीसिया (चर्च) के अगुवों को न ही अपने व्यक्तिगत् जीवन का हिसाब देना होगा, किंतु परमेश्वर के लोगों के ऊपर उनके नेतृत्व का भी।

13:18 "विवेक शुद्ध"- 2 कुरि. 1:12; 4:2.

13:19 रोमि. 15:30-32; फिले. 22.

13:20 "शान्तिदाता परमेश्वर"- 7:2; रोमि. 15:33; 16:20; 2 थिस्स. 3:16.

"सनातन वाचा के खून"- 9:12; 10:29; मत्ती 26:28. यहाँ नयी वाचा को सनातन कहा गया है। परमेश्वर ने अपने लोगों के लिये जो कुछ निश्चित किया है उसे यह वाचा पूरी करती है। और दूसरी वाचा की ज़रूरत नहीं है।

"मरे हुओं में से जिलाकर"- मत्ती 28:6. इस पत्री में यही एक मात्र स्थान है जहाँ लेखक मसीह के जी उठने के विषय में कहते हैं। परन्तु कई बार वह इस बात को सूचित करते हैं - 1:3; 2:9; 10:12-13.

13:21 प्रत्येक विश्वासी के लिये परमेश्वर यह कर सकते है और कोई विश्वासी अपने लिये नहीं कर सकता, और दूसरा कोई विश्वासी स्वयं के लिये नहीं कर सकता। यदि परमेश्वर हमें तैयार न करें, तो हम कभी तैयार नहीं हो सकते। यदि वह हम में कार्य न करें, तो हमारे काम उन्हें कभी खुश नहीं कर सकते। तुलना करें 2 कुरि. 3:5; फ़िलि. 2:13; कुल. 1:29. प्रत्येक विश्वासी का लक्ष्य प्रभु यीशु के समान होना चाहिए (मत्ती 26:39; यूहन्ना 4:34; 6:38; 8:29)। - परमेश्वर की इच्छा - कम नहीं, अधिक नहीं, और कुछ

एक अच्छी बात में स्थिर करें, जिससे तुम उनकी इच्छा पूरी करो। जो कुछ उनको पसन्द है, उसे यीशु मसीह के द्वारा हम में उत्पन्न करें, जिनकी बड़ाई युगानुयुग होती रहे। ऐसा ही हो।

22हे भाइयो, मैं तुम से बिनती करता हूँ, कि इस शिक्षा की बातों को सह लो, क्योंकि मैंने तुम्हें थोड़ा सा ही लिखा है।

23तुम यह जान लो कि तीमुथियुस हमारा भाई छूट गया है और यदि वह जल्द आ गया, तो मैं उसके साथ तुम से भेंट करूँगा।

24अपने सब अगुवों और सब पवित्र लोगों को सलाम कहो। इटली वाले तुम्हें सलाम कहते हैं।

25तुम सब पर कृपा बनी रहे। ऐसा ही हो।

नहीं। परमेश्वर मसीह के "द्वारा" विश्वासी में यह करते है। वह परमेश्वर की कृपा और सामर्थ का एक मात्र ज़रिया हैं।

13:22 "शिक्षा"- जिन सैद्धान्तिक सच्चाईयों को लेखक ने यहाँ प्रस्तुत किया है, उन में बीच-बीच में उपदेश दिए गए थे। बार-बार उसमें लिखा गया है "इसलिए" और "आओ हम" - वचन 13,15; 2:1; 4:1,11,14,16; 6:1; 10:19,22,23,24; 12:1,28. वह व्यवहारिक कारण से लिखता है और उन्हें गहन सच्चाई देता है कि वे उस पर अमल करें और गहरा सही जीवन बिताएँ।

13:23 "तीमुथियुस"- प्रे.काम 16:1. स्पष्ट है कि वह कैद में था।

13:25 "कृपा"- यूहन्ना 1:14,16; रोमि. 1:7; 2 कुरि. 8:9 आदि की टिप्पणी देखें।